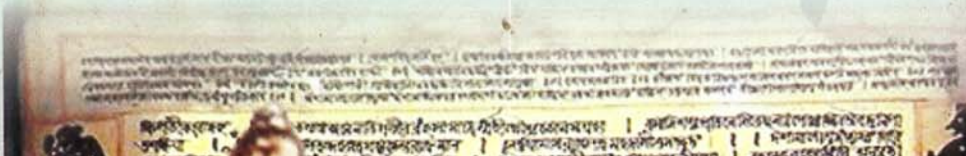
पाणिनीयः अष्टाध्यायीसूत्रपाठः एवं वर्ण-शिक्षा



संपादक
डॉ. प्रेरणा माथुर

BVP = ~~[illegible]~~ 1353

4/5/17

G = 147

3/6

BVP CHECKED
DEC 2017

॥ ओ३म् ॥

पाणिनीयः अष्टाध्यायीसूत्रपाठः एवं वर्ण-शिक्षा

संपादक

डॉ. प्रेरणा माथुर

प्राच्य संस्कृत विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ

निर्मल पब्लिकेशन्स्

दिल्ली-110094

ISBN : 978-81-86400-240-0

© संपादक

प्रकाशक : निर्मल पब्लिकेशन्स्
ए-139, गली नं. 3, कबीर नगर,
शाहदरा, दिल्ली-110094

मूल्य : 400.00

प्रथम संस्करण : 2013

मुद्रक : शिवानी आर्ट प्रेस
शाहदरा, दिल्ली-110032



चिर समाधिस्थ
स्वर्गीया माता कृपा (सासु माता) जी को
समर्पित

अनुक्रम

प्राक्-कथन

हम भारतीयों के लिए वेद सर्वोपरि है। शाखा-उपवेद-ब्राह्मण-आरण्यक-उपनिषद् वेदाङ्ग-साहित्य-आयुर्वेद-विज्ञान-गणित-रामायाण-महाभारत-गीता आदि ऋषि-मुनियों के बनाये सभी ग्रंथ संस्कृत में ही हैं। भारतीय संस्कृति-सभ्यता-साहित्य और भारतीय परंपरा का सब कुछ इसी संस्कृत (देवभाषा) में है। हम भारतीयों का गौरव सबका सब कुछ संस्कृत-भाषा में ही है।

'रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्' वेदों की रक्षा के लिए व्याकरण पढ़ना चाहिए। काशी की आचार्य-शास्त्री-मध्यमा-प्रथमा परीक्षाओं के लगभग 13000 तेरह सहस्त्र छात्रों में भारत भर में प्रतिवर्ष 20-25 छात्र ही वेद की परीक्षा में बैठते होंगे। 2-3 छात्र वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण करते होंगे, जिसमें कोई वेद भी पूरा नहीं होता। इसमें याज्ञिक प्रक्रिया का भी ज्ञान अधूरा रहता है। 1000 छात्र साहित्य में बैठते होंगे, शेष लगभग 12000 बारह सहस्त्र केवल व्याकरण की परीक्षा देते हैं। 102 वर्षों में अन्य विषयों के ज्ञाता (वह भी अधूरे) बन सकते हैं, जो समयाभाव से होना असम्भव है। 12 वर्षों में केवल व्याकरण (वह भी अधूरा और पढ़ाने में असमर्थ) भी कठिनाई से हो पाता है।

इस सबका कारण आर्ष ग्रंथों का सर्वथा परित्याग, विशेषकर पाणिनी मुनिकृत अष्टाध्यायी को सर्वथा तिलाञ्जलि देकर लघुकौमुदी-मध्यकौमुदी-सिद्धांत-कौमुदी आदि पाणिनी-क्रम के विरुद्ध बने प्रक्रियाग्रंथों को पढ़ना है। जिनमें सूत्र और उनका 4-5 गुणा अर्थ बिना समझे रटना ही पड़ता है अन्य कोई मार्ग नहीं। इससे बुद्धि ठस (=प्रतिबद्ध) हो जाती है, सोचने-समझने की शक्ति मारी जाती है। वर्तमानकाल में संस्कृत के छात्रों के लिए सूखे भोजन का भी यथेष्ट प्रबन्ध न होने के कारण, उधर घोर रट्टा लगाते-लगाते उनका शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास रुक

जाना है। इस सारी दयनीय दुरवस्था को दूर करने का एक ही उपाय है—

कौमुदी में अष्टाध्यायी के सूत्र होने पर भी अष्टाध्यायी के स्वाभाविक सरल सुबोध क्रम का नाश कर दिया जाता है। सूत्र के अर्थ समझने में तथा साधनिका में अष्टाध्यायी का स्वाभाविक क्रम नष्ट हो जाता है, जो अत्यंत ही उपादेय और छात्र को तत्काल बोध कराने वाला होता है। यह क्रम ही वास्तविक अष्टाध्यायी समझना चाहिए, क्रमभंग अष्टाध्यायी कदापि नहीं।

अष्टाध्यायी का यह स्वाभाविक क्रम बौद्धोच्छेदकाल तक बराबर चलता रहा। 12वीं शताब्दी से पूर्व जितने भी व्याकरण रचे गये, वे सब पाणिनीय व्याकरणानुसार प्रकरणानुसारी ही रचे गये। शब्दसिद्धि की प्रक्रिया (जैसा कि कौमुदी, हेमचन्द्र तथा मुग्ध-बोधादि की है) के अनुसार व्याकरण की रचना नहीं हुई इससे यह बात प्रत्यक्ष है कि विक्रम की 12वीं शताब्दी से पूर्व के सभी वैयाकरण अष्टाध्यायी के प्रकरणानुसार क्रम को ही व्याकरणाध्ययन में सुगम समझते रहे। इसीलिए शब्दसिद्धि के प्रक्रियानुसारी ग्रंथ की रचना इस काल तक नहीं हुई।

पाणिनीय अष्टाध्यायी को पाश्चात्य विद्वान्—"मानव मस्तिष्क की श्रेष्ठतम रचना व आविष्कार" मानते हैं।

यदि वेद तक पहुँचना है, तो 4 वर्ष में व्याकरण, 1 वर्ष में साहित्य 2 वर्ष में अन्य वेदाङ्ग, 2 वर्ष में उपाङ्ग, 1 वर्ष में उपवेद, तथा 6 वर्ष में ब्राह्मणसहित वेद=16 वर्ष में संपूर्ण वेद-शास्त्र का विद्वान् बन सकता है। इसके लिए अष्टाध्यायी महाभाष्य ही परम साधन है। नहीं तो 108 वर्षों में भी एक व्यक्ति वेद-शास्त्र को नहीं पढ़ सकता। वेद तक पहुँचने के लिए अनार्ष ग्रंथ, जो बीच में बाधक खड़े हो गये हैं, इन्हें हटाना ही होगा। और मूल आधार आर्ष ग्रंथों का आश्रय लेना होगा। हाँ व्याकरण आदि विषयों के विशेषज्ञ बनने के लिए उपर्युक्त विषय 16 वर्ष में पढ़कर जो चाहे अपना सारा जीवन किसी एक ही विषय में लगा दे, कौन रोकता है?

वेद को छोड़कर अन्य विषयों को ही पढ़ने वाले को शास्त्र क्या कहता है—

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः॥ (मनु. 2।168)

अर्थात्—जो द्विज वेद को न पढ़कर अन्यत्र परिश्रम करता है, वह बन्धुओं सहित जीता हुआ ही शूद्रता को प्राप्त हो जाता है।

इसलिए हमें जाँचना होगा कि हम दूसरों को शूद्र बनाते-बनाते स्वयं ही शूद्र तो नहीं बन रहे हैं?

प्रक्रिया-ग्रंथों का निर्माण इस प्रकार हुआ—

(1) रूपावतार (2664 सूत्रयुक्त) की विक्रमी संवत् 1140 में रचना हुई।

(2) प्रक्रियाकौमुदी (2740 सूत्रयुक्त) की वि.सं. 1480 में रचना हुई।

(3) सिद्धांतकौमुदी (3878 सूत्रयुक्त) की वि.सं. 1510 से 1575 में भट्टोजिदीक्षित द्वारा रचना हुई।

(4) मध्यकौमुदी (2117 सूत्रयुक्त) वरदराज पंडित कृत।

(5) लघुकौमुदी (1188 सूत्रयुक्त) वरदराज पंडित कृत।

इस लघुकौमुदी के सूत्र तथा अर्थ 1188×5= लगभग 6000 मंत्र रटने पड़ते हैं। कौमुदी पढ़ा हुआ किसी सूत्र का अर्थ कैसे बना, यह कदापि नहीं बता सकता। जिसने अष्टाध्यायी क्रम से पढ़ा होगा, वह ऊपर से आने वाले अधिकार और अनुवृत्ति से सूत्र का अर्थ तत्काल बता देगा। यही एक विशेषता है, जिसे छात्र-वर्ग को ग्रहण करना चाहिए, यदि छात्र अर्थ रटने से अपनी जान छुड़ाना चाहते हैं। कौमुदीक्रम से पढ़ने वाले छात्र को चाहिए, कि वह इस क्रम को सदा के लिए छोड़ दे। अष्टाध्यायी का सरल क्रम ग्रहण करे, अध्यापक लोग तो कौमुदीक्रम को प्रलयकाल तक भी नहीं छोड़ेंगे, क्योंकि इसके सिवाय उन्हें दूसरा क्रम आता ही नहीं। वृत्ति व आर्थिक सहायता के न मिलने व बन्द कर देने के भय से जो छात्र कौमुदीक्रम को न छोड़ सकें, और अष्टाध्यायी-क्रम को ग्रहण न कर सकें, तो भी इतना तो वे कर ही सकते हैं कि अपने गुरुओं के चरणों में परम श्रद्धावान् होते हुए अत्यन्त नम्रता-पूर्वक कौमुदी में आये प्रत्येक सूत्र का अर्थ कैसे बन गया, यह बात अवश्य पूछ-पूछकर चलें, तो भी कुछ अच्छा हो। इससे धीरे-धीरे सब लोग अष्टाध्यायी कंठस्थ करने के पश्चात् ही व्याकरण पढ़ना आरम्भ करेंगे और छात्रों की जान बचेगी। उन्हें बिना समझे रटने से मुक्ति मिलेगी। भारत में संस्कृत-शिक्षा पर लगा एक भारी कलंक दूर हो जाएगा।

इस लघु भूमिका में हम अति संक्षेप से यह दर्शाते हैं कि अष्टाध्यायी कैसे पढ़नी चाहिए, और इसके न पढ़ने से क्या-क्या घोर यातनाएं छात्रों को भोगनी पड़ती हैं—

(1) कौमुदी-क्रम से पढ़ा व पढ़ाने वाला यह नहीं बता या समझ सकता है कि अमुक सूत्र का लिखा हुआ अर्थ कैसे बन गया? छात्र को सूत्र का अर्थ हर अवस्था में बिना समझे रटना ही पड़ेगा। दूसरा कोई उपाय है ही नहीं। उधर अष्टाध्यायी-क्रम से अष्टाध्यायी कंठस्थ किये छात्र का तो कहना ही क्या? बिना अष्टाध्यायी कंठस्थ किया, संस्कृत से अनभिज्ञ हिन्दी जानने वाला छात्र भी 3-4 दिन में अष्टाध्यायी की मूल पुस्तक हाथ में लेकर सूत्र का अर्थ स्वयं करेगा, और पहिले संस्कृत में करेगा पीछे हिन्दी में। अद्भुत तो यह है कि बिना रटे करता है, समझकर करता है, संस्कृत का विद्वत्समाज, विशेषकर काशी का विद्वन्मण्डल यह देखकर

एकदम आश्चर्य चकित रह जाता है। अनुवृत्ति और अधिकार के बल पर दो-चार सूत्रों को ही नहीं, पढ़े हुए प्रत्येक सूत्र का, तथा किसी-किसी बिना पढ़े सूत्र का भी अर्थ कर लेता है। अष्टाध्यायी-क्रम का चमत्कार ही ऐसा है।

यही एक विशेषता ऐसी है, जिसे ठीक प्रत्यक्ष जान लेने पर कौमुदीक्रम का एकदम परित्याग होना उचित है। जिसे भी एक बार यथावत् प्रत्यक्ष अनुभव हो जाएगा, वह कभी कौमुदी को हाथ तक न लगायेगा। आजीविका की विवशता दूसरी बात है।

(2) अनुवृत्ति और अधिकार का ज्ञान कौमुदीक्रम में कदापि नहीं हो सकता। अष्टाध्यायी-क्रम से अत्यन्त सरलतापूर्वक तत्काल ज्ञान हो जाता है।

(3) कौमुदी का कंठ किया हुआ अर्थ, बिना समझे रटा होने के कारण स्मृतिपथ से झट उतर जाता है, अर्थात् भूल जाता है, यह प्रत्येक छात्र जानता है। जो अष्टाध्यायी-क्रम से अर्थ करने का ढंग भूल भी जावे (अधिकार और अनुवृत्ति के सहारे जान लेने पर नहीं भूलता), तो भी छात्र अर्थ पुनः बना लेगा। साथ ही अष्टाध्यायी-क्रम से उस-उस प्रकरण में उत्सर्ग अपवाद-प्राप्ति-निषेध का ज्ञान छात्र को, सब सूत्र एक जगह होने से, अनायास बिना किसी कठिनाई से हो जाता है। जैसे—सर्वनाम-इत्संज्ञा-आत्मनेपद-परस्मैपद-कारक-विभक्ति-समास-द्विर्वचन-संहिता-सेट्-अनिट् आदि प्रकरणों के सूत्र परस्पर सुसम्बद्ध होने से समझ में आ जाते हैं। किस सूत्र की प्राप्ति व निषेध में किस सूत्र का आरम्भ है, यह तत्काल बुद्धि में बैठ जाता है, संदेह रह ही नहीं जाता। कौमदीक्रम में यह बात समझ में नहीं आ सकती, और संदेह बराबर बना ही रहता है।

(4) **"विप्रतिषेधे परं कार्यम्"** (1।4।2), **"असिद्धवदत्राभात्"** (अ. 6।4।22) तथा "पूर्वत्रासिद्धम्" (अ. 8।2।1) इन सूत्रों के क्षेत्र का ज्ञान अष्टाध्यायीक्रम क्रम के बिना नहीं हो सकता। क्रमज्ञान के बिना ये सूत्र कदापि समझ में नहीं आ सकते। अतः कौमुदी पढ़ने-पढ़ाने वाला इन सूत्रों के मर्म को समझ ही नहीं सकता। अष्टाध्यायी वाले को ये मूल और इनका मर्म हस्तामलकवत् तत्काल प्रत्यक्ष हो जाता है। इसी कारण कौमुदी-क्रम वाले को क्रम का ज्ञान न हो सकने के कारण महाभाष्य यथावत् समझ में नहीं आ पाता।

(5) कौमुदीक्रम में जहाँ पर भी कोई सूत्र पढ़ा है, उसकी प्राप्ति व उसके अर्थ की उपस्थिति वहीं पर ही होगी, अन्यत्र नहीं। अष्टाध्यायी-क्रम से सूत्र समझ लेने पर जहाँ भी उसकी प्राप्ति होगी, वहीं छात्र उसको समझ लेगा। संकुचित उदाहरणों तक न रहकर, व्यापक उदाहरणों में उसे लगा लेगा। उदाहरणों में उसकी बुद्धि व्यापक होगी, कूपमण्डूकवत् वहीं की वहीं अवरुद्ध न रहेगी।

(6) लेट् लकार, वैदिक प्रयोग तथा स्वरप्रक्रिया का अष्टाध्यायी-क्रम से अत्यन्त सरलता से यथार्थ ज्ञान हो जाता है, जो कौमुदी-क्रम से नहीं हो सकता। लौकिक वैदिक शब्दों का ज्ञान तथा परस्पर भेद अष्टाध्यायी-क्रम से ठीक-ठीक होता है, जो दूसरे क्रम से नहीं होता। इन सब कारणों से संस्कृत पढ़ने-पढ़ाने वाले प्रत्येक छात्र व अध्यापक का परम कर्तव्य है कि वह अब अष्टाध्यायी-क्रम को ही अपनायें।

संस्कृत भाषा ज्ञान-हेतु भटकते छात्रों हेतु अष्टाध्यायीसूत्र-पाठः के साथ पाणिनीयशिक्षासूत्र वर्ण-शिक्षा के नाम से संकलित किया गया है।

वेदाङ्गों के रूपमें व्याकरण शिक्षा, कल्प, निरुक्त, ज्योतिष एवं छन्द का वर्णन है। प्रस्तुत संस्करण में पाणिनीय व्याकरण एवं पाणिनीय वर्णोच्चारण शिक्षा दोनों को पाठकों के अवलोकनार्थ संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत किया गया है।

—लेखक

॥ ॐ भूर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

अष्टाध्यायीसूत्रपाठः

अथ शब्दानुशासनम्

1. अइउण् 2. ऋलृक् 3. एओङ् 4. ऐऔच् 5. हयवरट् 6. लण् 7. ञमङणनम्। 8. झभञ् 9. घढधष् 10. जबगडदश् 11. खफछठथचटतव् 12. कपय् 13. शषसर् 14. हल्।

प्रथमोऽध्यायः

प्रथमः पादः

वृद्धिरादैच् ॥1॥
अदेङ् गुणः ॥2॥
इको गुणवृद्धी ॥3॥
न धातुलोप आर्धधातुके ॥4॥
क्ङिति च ॥5॥
दीधीवेवीटाम् ॥6॥
हलोऽनन्तराः संयोग ॥7॥
मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः ॥8॥
तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् ॥9॥
नाज्झलौ ॥10॥
ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् ॥11॥
अदसो मात् ॥12॥
शे ॥13॥
निपात एकाजनाङ् ॥14॥
ओत् ॥15॥
संबुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे ॥16॥

उञ ऊँ ॥17॥

ईदूतौ च सप्तम्यर्थे ॥18॥

दाधा घ्वदाप् ॥19॥

आद्यन्तवदेकस्मिन् ॥20॥

तरप्तमपौ घः ॥21॥

बहुगणवतुडति संख्या ॥22॥

ष्णान्ता षट् ॥23॥

डति च ॥24॥

क्तक्तवतू निष्ठा ॥25॥

सर्वादीनि सर्वनामानि ॥26॥

विभाषा दिक्समासे बहुव्रीहौ ॥27॥

न बहुव्रीहौ ॥28॥

तृतइयासमासे ॥29॥

द्वन्द्वे च ॥30॥

विभाषा जसि ॥31॥

प्रथमचरमतयाल्पार्धकति पयनेमाश्च ॥32॥

पूर्वपराबरदक्षिणोत्तरापराधराणि व्यवस्थायामसंज्ञायाम् ॥33॥

स्वमज्ञातिधनाख्यायाम् ॥34॥

अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः ॥35॥

स्वरादिनिपातमव्ययम् ॥36॥

तद्धितश्चासर्वविभक्ति ॥37॥

कृन्मेजन्तः ॥38॥

क्त्वातोसुन्कसुनः ॥39॥

अव्ययीभावश्च ॥40॥

शि सर्वनामस्थानम् ॥41॥

सुडनपुंसकस्य ॥42॥

न वेति विभाषा ॥43॥

इग् यणः सम्प्रसारणाम् ॥44॥

आद्यन्तौ टकितौ ॥45॥

मिदचोऽन्त्यात् परः ॥46॥

एच इग्घ्रस्वादेशे ॥47॥

षष्ठी स्थानेयोगा ॥48॥

स्थानेऽन्तरतमः ॥49॥

उरण् रपरः ॥50॥

अलोऽन्त्यस्य ॥51॥

ङिच्च ॥52॥

आदेः परस्य ॥53॥

अनेकाल्शित् सर्वस्य ॥54॥

स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ ॥55॥

अचः परस्मिन् पूर्वविधौ ॥56॥

न पदान्तद्विर्वचनवरेयलोपस्वरसवर्णानुस्वारदीर्घजश्चर्विधिषु ॥57॥

द्विर्वचनेऽचि ॥58॥

अदर्शनं लोपः ॥59॥

प्रत्ययस्य लुक्श्लुलुपः ॥60॥

प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् ॥61॥

न लुमताङ्गस्य ॥62॥

अचोऽन्त्यादि टि ॥63॥

अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा ॥64॥

तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य ॥65॥

तस्मादित्युत्तरस्य ॥66॥

स्वं रूपं शब्दस्याशब्दसंज्ञा ॥67॥

अणुदित् सवर्णस्य चाप्रत्ययः ॥68॥

तपरस्तत्कालस्य ॥69॥

आदिरन्त्येन सहेता ॥70॥

येन विधिस्तदन्तस्य ॥71॥

वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद् वृद्धम् ॥72॥

त्यदादीनि च ॥73॥

एङ् प्राचां देशे ॥74॥

द्वितीयः पादः

गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन् ङित् ॥1॥

विज इट् ॥2॥

विभाषोर्णोः ॥3॥

नाचधातुकमपित् ॥4॥
असंयोगाल्लिट् कित् ॥5॥
इन्धिभवतिभ्यां च ॥6॥
मृडमृदगुधकुषक्लिशवदवसः क्त्वा ॥7॥
रुदविदमुषग्रहिस्वपिप्रच्छः संश्च ॥8॥
इको झल् ॥9॥
हलन्ताच्च ॥10॥
लिङ्सिचावात्मनेपदेषु ॥11॥
उश्च ॥12॥
वा गमः ॥13॥
हनः गमः ॥14॥
यमो गन्धने ॥15॥
विभाषोपयमने ॥16॥
स्थाघ्वोरिच्च ॥17॥
न क्त्वा सेट् ॥18॥
निष्ठा शीङ्स्विदिमिदिक्ष्विदिधृषः ॥19॥
मृषस्तितिक्षायाम् ॥20॥
उदुपधाद्भावादिकर्मणोरन्यतरस्याम् ॥21॥
पूङः क्त्वा च ॥22॥
नोपधात् थफान्ताद् वा ॥23॥
वञ्चिलुञ्च्यृतश्च ॥24॥
तृषिमृषिकृशेः काश्यपस्य ॥25॥
रलो व्युपधाद्धलादेः संश्च ॥26॥
ऊकालोऽज्झस्वदीर्घप्लुतः ॥27॥
अचश्च ॥28॥
उच्चैरुदात्तः ॥29॥
नीचैरनुदात्तः ॥30॥
समाहारः स्वरितः ॥31॥
तस्यादित उदात्तमर्धह्रस्वम् ॥32॥
एकश्रुति दूरात् संबुद्धौ ॥33॥
यज्ञकर्मण्यजपन्यूङ्खसामसु ॥34॥

उच्चैस्तरां वा वषट्कारः ॥35॥
विभाषा छन्दसि ॥36॥
न सुब्रह्मण्यायां स्वरितस्य तूदात्तः ॥37॥
देवब्रह्मणोरनुदात्तः ॥38॥
स्वरितात् संहितायामनुदात्तानाम् ॥39॥
उदात्तस्वरितपरस्य सन्नतरः ॥40॥
अपृक्त एकाल्प्रत्ययः ॥41॥
तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः ॥42॥
प्रथमानिर्दिष्टं समास उप-सर्जनम् ॥43॥
एकविभक्ति चापूर्वनिपाते ॥44॥
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् ॥45॥
कृत्तद्धितसमासाश्च ॥46॥
ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य ॥47॥
गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य ॥48॥
लुक् तद्धितलुकि ॥49॥
इद् गोण्याः ॥50॥
लुपि युक्तवद् व्यक्तिवचने ॥51॥
विशेषणानां चाजातेः ॥52॥
तदशिष्यं संज्ञाप्रमाणत्वात् ॥53॥
लुब योगाप्रख्यानात् ॥54॥
योगप्रमाणे च तदभावेऽदर्शनं स्यात् ॥55॥
प्रधानप्रत्ययार्थवचनामर्थस्यान्याप्रमाणत्वात् ॥56॥
कालोपसर्जने च तुल्यम् ॥57॥
जात्याख्यायामेकस्मिन् बहुवचनमन्यतरस्याम् ॥58॥
अस्मदो द्वयोश्च ॥59॥
फल्गुनीप्रोष्ठपदानां च नक्षत्रे ॥60॥
छन्दसि पुनर्वस्वोरेकवचनम् ॥61॥
विशाखयोश्च ॥62॥
तिष्यपुनर्वस्वोर्नक्षत्रद्वन्द्वे बहुवचनस्य द्विवचनं नित्यम् ॥63॥
सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ ॥64॥
वृद्धो यूना तल्लक्षणश्चेदेव विशेषः ॥65॥

स्त्री पुंवच्च ॥66॥

पुमान् स्त्रिया ॥67॥

भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्याम् ॥68॥

नपुंसकमनपुंसकेनैकवच्चास्यान्यतरस्याम् ॥69॥

पिता मात्रा ॥70॥

श्वशुरः श्वश्र्वा ॥71॥

त्यदादीनि सर्वैर्नित्यम् ॥72॥

ग्राम्यपशुसंघेष्वतरुणेषु स्त्री ॥73॥

तृतीयः पादः

भूवादयो धातवः ॥1॥

उपदेशेऽजनुनासिक इत् ॥2॥

हलन्त्यम् ॥3॥

न विभक्तौ तुस्माः ॥4॥

आदिर्ञिटुडवः ॥5॥

षः प्रत्ययस्य ॥6॥

चुटू ॥7॥

लशक्वतद्धिते ॥8॥

तस्य लोपः ॥9॥

यथासंख्यमनुदेशः समानाम् ॥10॥

स्वरितेनाधिकारः ॥11॥

अनुदात्तङित आत्मनेपदम् ॥12॥

भावकर्मणोः ॥13॥

कर्तरि कर्मव्यतिहारे ॥14॥

न गतिहिंसार्थेभ्यः ॥15॥

इतरेतरान्योऽन्योपपदाच्च ॥16॥

नेर्विशः ॥17॥

परिव्यवेभ्यः क्रियः ॥18॥

विपराभ्यां जेः ॥19॥

आङो दोऽनास्यविहरणे ॥20॥

क्रीडोऽनुसंपरिभ्यश्च ॥21॥

समवप्रविभ्यः स्थः ॥22॥

प्रकाशनस्थेयाख्ययोश्च ॥23॥
उदोऽनूर्ध्वकर्मणि ॥24॥
उपान्मन्त्रकरणे ॥25॥
अकर्मकाच्च ॥26॥
उद्विभ्यां तपः ॥27॥
आङो यमहनः ॥28॥
समो गम्यृच्छिभ्याम् ॥29॥
निसमुपविभ्यो ह्वः ॥30॥
स्पर्धायामाङः ॥31॥
गन्धनावक्षेपणसेवनसाहसिक्यप्रतियत्नप्रकथनोपयोगेषु कृञः ॥32॥
अधेः प्रसहने ॥33॥
वेः शब्दकर्मणः ॥34॥
अकर्मकाच्च ॥35॥
संमाननोत्सञ्जनाचार्यकरणज्ञानभृतिविगणनव्ययेषु नियः ॥36॥
कर्तृस्थे चाशरीरे कर्मणि ॥37॥
वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः ॥38॥
उपपराभ्याम् ॥39॥
आङ उद्गमने ॥40॥
वेः पादविहरणे ॥41॥
प्रोपाभ्यां समर्थाभ्याम् ॥42॥
अनुपसर्गाद्वा ॥43॥
अपह्नवेज्ञः ॥44॥
अकर्मकाच्च ॥45॥
संप्रतिभ्यामनाध्याने ॥46॥
भासनोपसंभाषाज्ञानयत्नविमत्युपमन्त्रणेषु वदः ॥47॥
व्यक्तवाचां समुच्चारणे ॥48॥
अनोरकर्मकात् ॥49॥
विभाषा विप्रलापे ॥50॥
अवाद् ग्रः ॥51॥
समः प्रतिज्ञाने ॥52॥
उदश्चरः सकर्मकात् ॥53॥

समम्तृतीयायुक्तात् ॥54॥
दाणश्च सा चेच्चतुर्थ्यर्थे ॥55॥
उपाद् यम् स्वकरणे ॥56॥
ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः ॥57॥
नानोर्ज्ञः ॥58॥
प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः ॥59॥
शदेः शितः ॥60॥
म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च ॥61॥
पूर्ववत् सनः ॥62॥
आम्प्रत्ययवत् कृञोऽनुप्रयोगस्य ॥63॥
प्रोपाभ्यां युजेरयज्ञपात्रेषु ॥64॥
समः क्ष्णुवः ॥65॥
भुजोऽनवने ॥66॥
णेरणौ यत्कर्म णौ चेत् स कर्ताऽनाध्याने ॥67॥
भीस्म्योर्हेतुभये ॥68॥
गृधिवञ्च्योः प्रलम्भने ॥69॥
लियः संमाननशालीनीकरणयोश्च ॥70॥
मिथ्योपपदात् कृञोऽभ्यासे ॥71॥
स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले ॥72॥
अपाद्वदः ॥73॥
णिचश्च ॥74॥
समुदाङ्भ्यो यमोऽग्रन्थे ॥75॥
अनुपसर्गाज्ज्ञः ॥76॥
विभाषोपपदेन प्रतीयमाने ॥77॥
शेषात् कर्तरि परस्मैपदम् ॥78॥
अनुपराभ्यां कृञः ॥79॥
अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः ॥80॥
प्राद्वहः ॥81॥
परेर्मृषः ॥82॥
व्याङ्परिभ्यो रमः ॥83॥
उपाच्च ॥84॥

विभाषाऽकर्मकात् ॥85॥
वृधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्योणः ॥86॥
निगरणचलनार्थेभ्यश्च ॥87॥
अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात् ॥88॥
न पादम्याङ्यमाङ्यसपरिमुहरुचिनृतवदवसः ॥89॥
वा क्यषः ॥90॥
द्युद्भ्यो लुङि ॥91॥
वृद्भ्यः स्यसनोः ॥92॥
लुटि च क्लृपः ॥93॥

चतुर्थः पादः

आ कडारादेका संज्ञा ॥1॥
विप्रतिषेधे परं कार्यम् ॥2॥
यू स्त्र्याख्यौ नदी ॥3॥
नेयङुवङ्स्थानावस्त्री ॥4॥
वामि ॥5॥
ङिति ह्रस्वश्च ॥6॥
शेषो घ्यसखि ॥7॥
पतिः समास एव ॥8॥
षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा ॥9॥
ह्रस्वं लघु ॥10॥
संयोगे गुरु ॥11॥
दीर्घं च ॥12॥
यस्मात् प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् ॥13॥
सुप्तिङन्तं पदम् ॥14॥
नः क्ये ॥15॥
सिति च ॥16॥
स्वादिष्वसर्वनामस्थाने ॥17॥
यचि भम् ॥18॥
तसौ मत्वर्थे ॥19॥
अयस्मयादीनि च्छन्दसि ॥20॥
बहुषु बहुवचनम् ॥21॥

द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने ॥22॥
कारके ॥23॥
ध्रुवमपायेऽपादानम् ॥24॥
भीत्रार्थानां भयहेतुः ॥25॥
पराजेरसोढः ॥26॥
वारणार्थानामीप्सितः ॥27॥
अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति ॥28॥
आख्यातोपयोगे ॥29॥
जनिकर्तुः प्रकृतिः ॥30॥
भुवः प्रभवः ॥31॥
कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् ॥32॥
रुच्यर्थानां प्रीयमाणः ॥33॥
श्लाघह्नुङ्स्थाशपां ज्ञीप्स्यमानः ॥34॥
धारेरुत्तमर्णः ॥35॥
स्पृहेरीप्सितः ॥36॥
क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः ॥37॥
क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म ॥38॥
राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः ॥39॥
प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्ता ॥40॥
अनुप्रतिगृणश्च ॥41॥
साधकतमं करणम् ॥42॥
दिवःकर्म च ॥43॥
परिक्रयणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम् ॥44॥
आधारोऽधिकरणम् ॥45॥
अधिशीङ्स्थासां कर्म ॥46॥
अभिनिविशश्च ॥47॥
उपान्वध्याङ्वसः ॥48॥
कर्तुरीप्सिततमं कर्म ॥49॥
तथायुक्तं चानीप्सितम् ॥50॥
अकथितं च ॥51॥
गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणि कर्ता स णौ ॥52॥

हक्रोरन्यतरस्याम् ॥53॥
ण्यनतः कर्ता ॥54॥
तत्प्रयोजको हेतुश्च ॥55॥
प्राग्रीश्वरान्निपाताः ॥56॥
चादयोऽसत्त्वे ॥57॥
प्रादय उपसर्गाः क्रियायोगे ॥58॥
गतिश्च ॥59॥
ऊर्यादिच्विडाचश्च ॥60॥
अनुकरणं चानितिपरम् ॥61॥
आदरानादरयोः सदसती ॥62॥
भूषणेऽलम् ॥63॥
अन्तरपरिग्रहे ॥64॥
कणेमनसी श्रद्धाप्रतीघाते ॥65॥
पुरोऽव्ययम् ॥66॥
अस्तं च ॥67॥
अच्छ गत्यर्थवदेषु ॥68॥
अदोऽनुपदेशे ॥69॥
तिरोऽन्तर्धौ ॥70॥
विभाषा कृञि ॥71॥
उपाजेऽन्वाजे ॥72॥
साक्षात्प्रभृतीनि च ॥73॥
अनत्याधान उरसिमनसी ॥74॥
मध्येपदेनिवचने च ॥75॥
नित्यं हस्ते पाणावुपयमने ॥76॥
प्राध्वं बन्धने ॥77॥
जीविकोपनिषदावौपम्ये ॥78॥
ते प्राग् धातोः ॥79॥
छन्दसि परेऽपि ॥80॥
व्यवहिताश्च ॥81॥
कर्मप्रवचनीयाः ॥82॥
अनुर्लक्षणे ॥83॥
तृतीयार्थे ॥84॥

हीने ॥85॥
उपाऽधिके च ॥86॥
अपपरी वर्जने ॥87॥
आङ् मर्यादावचने ॥88॥
लक्षणेत्थंभूताख्यानभागवीप्सासु प्रतिपर्यनवः ॥89॥
अभिरभागे ॥90॥
प्रतिः प्रतिनिधिप्रतिदानयोः ॥91॥
अधिपरी अनर्थकौ ॥92॥
सुः पूजायाम् ॥93॥
अतिरतिक्रमणे च ॥94॥
अपिः पदार्थसंभावनान्ववसर्गगर्हासमुच्चयेषु ॥95॥
अधिरीश्वरे ॥96॥
विभाषा कृञि ॥97॥
लः परस्मैपदम् ॥98॥
तङानावात्मनेपदम् ॥99॥
तिङस्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्यमोत्तमाः ॥100॥
तान्येकवचनद्विवचनबहुवचनान्येकशः ॥101॥
सुपः ॥102॥
विभक्तिश्च ॥103॥
युष्मद्युपपदे समानाधिकरणे स्थानिन्यपि मध्यमः ॥104॥
प्रहासे च मन्योपपदे मन्यतेरुतम एकवच्च ॥105॥
अस्मद्युत्तमः ॥106॥
शेषे प्रथमः ॥107॥
परः संनिकर्षः संहिता ॥108॥
विरामोऽवसानम् ॥109॥

द्वितीयोऽध्यायः

प्रथमः पादः

समर्थः पदविधिः ॥1॥

सुबामन्त्रिते पराङ्गवत् स्वरे ॥2॥

प्राक् कडारात् समासः ॥3॥

सह सुपा ॥4॥

अव्ययीभावः ॥5॥

अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासंप्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसंपत्तिसाकल्यान्तवचनेषु ॥6॥

यथाऽसादृश्ये ॥7॥

यावदवधारणे ॥8॥

सुप् प्रतिना मात्रार्थे ॥9॥

अक्षशलाकासंख्याः परिणा ॥10॥

विभाषाऽपपरिबहिरञ्चवः पञ्चम्या ॥11॥

आङ् मर्यादाभिविध्योः ॥12॥

लक्षणेनाभिप्रती आभिमुख्ये ॥13॥

अनुर्यत्समया ॥14॥

यस्य चायामः ॥15॥

तिष्ठद्गुप्रभृतीनि च ॥16॥

पारे मध्ये षष्ठ्या वा ॥17॥

संख्या वंश्येन ॥18॥

नदीभिश्च ॥19॥

अन्यपदार्थे च संज्ञायाम् ॥20॥

तत्पुरुषः ॥21॥

द्विगुश्च ॥22॥

द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः ॥23॥

स्वयं क्तेन ॥24॥

खट्वा क्षेपे ॥25॥

सामि ॥26॥

कालाः ॥27॥

अत्यन्तसंयोगे च ॥28॥

तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन ॥29॥

पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णैः ॥30॥

कर्तृ करणे कृता बहुलम् ॥31॥

कृत्यैरधिकार्थवचने ॥32॥

अन्नेन व्यञ्जनम् ॥33॥

भक्ष्येण मिश्रीकरणम् ॥34॥

चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः ॥35॥

पञ्चमी भयेन ॥36॥

अपेतापोढमुक्तपतितापत्रस्तैरल्पशः ॥37॥

स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन ॥38॥

सप्तमी शौण्डैः ॥39॥

सिद्धशुष्कपक्वबन्धैश्च ॥40॥

ध्वाङ्क्षेण क्षेपे ॥41॥

कृत्यैर्ऋणे ॥42॥

संज्ञायाम् ॥43॥

क्तेनाहोरात्रावयवाः ॥44॥

तत्र ॥45॥

क्षेपे ॥46॥

पात्रेसमितादयश्च ॥47॥

पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन ॥48॥

दिक्संख्ये संज्ञायाम् ॥49॥

तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च ॥50॥

संख्यापूर्वो द्विगुः ॥51॥

कुत्सितानि कुत्सनैः ॥52॥

पापाणके कुत्सितैः ॥53॥

उपमानानि सामान्यवचनैः ॥54॥

उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे ॥55॥

विशेषणं विशेष्येण बहुलम् ॥56॥

पूर्वापरप्रथमचरमजघन्यसमानमध्यमध्यमवीराश्च ॥57॥

श्रेण्यादयः कृतादिभिः ॥58॥

क्तेन नञ्विशिष्टेनानञ् ॥59॥

सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टाः पूज्यमानैः ॥60॥

वृन्दारकनागकुञ्जरैः पूज्यमानम् ॥61॥

कतरकतमौ जातिपरिप्रश्ने ॥62॥

किं क्षेपे ॥63॥

पोटायुवतिस्तोककतिपयगृष्टिधेनुवशावेहद्बष्कयणीप्रवक्तृश्रोत्रियाध्यापक-
धूर्तैर्जातिः ॥64॥

प्रशंसावचनैश्च ॥65॥

युवा खलतिपलितवलिनजरतीभिः ॥66॥

कृत्यतुल्याख्या अजात्या ॥67॥

वर्णो वर्णेन ॥68॥

कुमारः श्रमणादिभिः ॥69॥

चतुष्पादो गर्भिण्या ॥70॥

मयूरव्यंसकादयश्च ॥71॥

द्वितीयः पादः

पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे ॥1॥

अर्धं नपुंसकम् ॥2॥

द्वितीयतृतीयचतुर्थतुर्याण्यन्यतरस्याम् ॥3॥

प्राप्तापन्ने च द्वितीयया ॥4॥

कालाः परिमाणिना ॥5॥

नञ् ॥6॥

ईषदकृता ॥7॥

षष्ठी ॥8॥

याजकादिभिश्च ॥9॥

न निर्धारणे ॥10॥

पूरणगुणसुहितार्थसदव्ययतव्यसमानाधिकरणेन ॥11॥

क्तेन च पूजायाम् ॥12॥

अधिकरणवाचिना च ॥13॥

कर्मणि च ॥14॥

तृजकाभ्यां कर्तरि ॥15॥

कर्तरि च ॥16॥

नित्यं क्रीडाजीविकयोः ॥17॥

कुगतिप्रादयः ॥18॥

उपपदमतिङ् ॥19॥

अमैवाव्ययेन ॥20॥

तृतीयाप्रभृतीन्यन्यतरस्याम् ॥21॥

क्त्वा च ॥22॥

शेषो बहुव्रीहिः ॥23॥

अनेकमन्यपदार्थे ॥24॥

संख्ययाव्ययासन्नादूराधिकसंख्याः संख्येये ॥25॥

दिङ्नामान्यन्तराले ॥26॥

तत्र तेनेदमिति सरूपे ॥27॥

तेन सहेति तुल्ययोगे ॥28॥

चार्थे द्वंद्व ॥29॥

उपसर्जनं पूर्वम् ॥30॥

राजदन्तादिषु परम् ॥31॥

द्वन्द्वे घि ॥32॥

अजाद्यदन्तम् ॥33॥

अल्पाच्तरम् ॥34॥

सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ ॥35॥

निष्ठा ॥36॥

वाहिताग्न्यादिषु ॥37॥

कडाराः कर्मधारये ॥38॥

तृतीयः पादः

अनभिहिते ॥1॥

कर्मणि द्वितीया ॥2॥

तृतीया च होश्छन्दसि ॥3॥

अन्तरान्तरेण युक्ते ॥4॥

कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे ॥5॥

अपवर्गे तृतीया ॥6॥

सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये ॥7॥

कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया ॥8॥

यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी ॥9॥

पञ्चम्यपाङ्परिभिः ॥10॥

प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात् ॥11॥

गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि ॥12॥

चतुर्थी संप्रदाने ॥13॥

क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः ॥14॥

तुमर्थाच्च भाववचनात् ॥15॥

नमः स्वस्तिस्वाहास्वधालंवषड्योगाच्च ॥16॥

मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाऽप्राणिषु ॥17॥

कर्तृकरणयोस्तृतीया ॥18॥

सहयुक्तेऽप्रधाने ॥19॥

येनाङ्गविकारः ॥20॥

इत्थंभूतलक्षणे ॥21॥

संज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि ॥22॥

हेतौ ॥23॥

अकर्त्तर्यृणे पञ्चमी ॥24॥

विभाषा गुणेऽस्त्रियाम् ॥25॥

षष्ठी हेतुप्रयोगे ॥26॥

सर्वनाम्नस्तृतीया च ॥27॥

अपादाने पञ्चमी ॥28॥

अन्यारादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते ॥29॥

षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन ॥30॥

एनपा द्वितीया ॥31॥

पृथग्विनानानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम् ॥32॥

करणे च स्तोकाल्पकृच्छ्रकतिपयस्यासत्त्ववचनस्य ॥33॥

दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम् ॥34॥

दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च ॥35॥

सप्तम्यधिकरणे च ॥36॥

यस्य च भावेन भावलक्षणम् ॥37॥

षष्ठी चानादरे ॥38॥

स्वामीश्वराधिपतिदायाद साक्षिप्रतिभूप्रसूतैश्च ॥39॥

आयुक्तकुशलाभ्यां चासेवायाम् ॥40॥

यतश्च निर्धारणम् ॥41॥

पञ्चमी विभक्ते ॥42॥

साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रतेः ॥43॥

प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च ॥44॥

नक्षत्रे च लुपि ॥45॥

प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा ॥46॥

संबोधने च ॥47॥

सामन्त्रितम् ॥48॥

एकवचनं संबुद्धिः ॥49॥

षष्ठी शेषे ॥50॥

ज्ञोऽविदर्थस्य करणे ॥51॥

अधीगर्थदयेशां कर्मणि ॥52॥

कृञः प्रतियत्ने ॥53॥

रुजार्थानां भाववचनानामज्वरेः ॥54॥

आशिषि नाथः ॥55॥

जासिनिप्रहणनाटकक्राथपिषां हिंसायाम् ॥56॥

व्यवहृपणोः समर्थयोः ॥57॥

दिवस्तदर्थस्य ॥58॥

विभाषोपसर्गे ॥59॥

द्वितीया ब्राह्मणे ॥60॥

प्रेष्यब्रुवोर्हविषो देवतासंप्रदाने ॥61॥

चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि ॥62॥

यजेश्च करणे ॥63॥

कृत्वोऽर्थप्रयोगे कालेऽधिकरणे ॥64॥

कर्तृकर्मणोः कृति ॥65॥

उभयप्राप्तौ कर्मणि ॥66॥

क्तस्य च वर्तमाने ॥67॥

अधिकरणवाचिनश्च ॥68॥

न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृनाम् ॥69॥

अकेनोर्भविष्यदाधमर्ण्ययोः ॥70॥

कृत्यानां कर्तरि वा ॥71॥

तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयान्यतरस्याम् ॥72॥

चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमद्रभद्रकुशलसुखार्थहितैः ॥73॥

चतुर्थः पादः

द्विगुरेकवचनम् ॥1॥

द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम् ॥2॥

अनुवादे चरणानाम् ॥3॥

अध्वर्युक्रतुरनपुंसकम् ॥4॥

अध्ययनतोऽविप्रकृष्टाख्यानाम् ॥5॥

जातिरप्राणिनाम् ॥6॥

विशिष्टलिङ्गो नदीदेशोऽग्रामाः ॥7॥

क्षुद्रजन्तवः ॥8॥

येषां च विरोधः शाश्वतिकः ॥9॥

शूद्राणामनिरवसितानाम् ॥10॥

गवाश्वप्रभृतीनि च ॥11॥

विभाषा वृक्षमृगतृणधान्यव्यञ्जनपशुशकुन्यश्ववडवपूर्वापराधरोत्तराणाम् ॥12॥

विप्रतिषिद्धं चानधिकरणवाचि ॥13॥

न दधिपयआदीनि ॥14॥

अधिकरणैतावत्त्वे च ॥15॥

विभाषा समीपे ॥16॥

स नपुंसकम् ॥17॥

अव्ययीभावश्च ॥18॥

तत्पुरुषोऽनञ्कर्मधारयः ॥19॥
संज्ञायां कन्थोशीनरेषु ॥20॥
उपज्ञोपक्रमं तदाद्याचिख्यासायाम् ॥21॥
छाया बाहुल्ये ॥22॥
सभा राजाऽमनुष्यपूर्वा ॥23॥
अशाला च ॥24॥
विभाषा सेनासुराच्छायाशालानिशानाम् ॥25॥
परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः ॥26॥
पूर्ववदश्ववडवौ ॥27॥
हेमन्तशिशिरावहोरात्रे च च्छन्दसि ॥28॥
रात्राह्नाहाः पुंसि ॥29॥
अपथं नपुंसकम् ॥30॥
अर्धर्चाः पुंसि च ॥31॥
इदमोऽन्वादेशेऽशनुदात्तस्तृतीयादौ ॥32॥
एतदस्त्रतसोस्त्रतसौ चानुदात्तौ ॥33॥
द्वितीयाटौस्स्वेनः ॥34॥
आर्धधातुके ॥35॥
अदो जग्धिर्ल्यप्ति किति ॥36॥
लुङ्सनोर्घस्लृ ॥37॥
घञपोश्च ॥38॥
बहुलं छन्दसि ॥39॥
लिट्यन्यतरस्याम् ॥40॥
वेञो वयिः ॥41॥
हनो वध लिङि ॥42॥
लुङि च ॥43॥
आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम् ॥44॥
इणो गा लुङि ॥45॥
णौ गमिरबोधने ॥46॥
सनि च ॥47॥
इङश्च ॥48॥
गाङ् लिटि ॥49॥

विभाषा लुङ्लृङोः ॥50॥
णौ च संश्चङोः ॥51॥
अस्तेर्भूः ॥52॥
ब्रुवो वचिः ॥53॥
चक्षिङः ख्याञ् ॥54॥
वा लिटि ॥55॥
अजेर्व्यघञपोः ॥56॥
वा यौ ॥57॥
ण्यक्षत्रियार्षञितो यूनि लुगणिञोः ॥58॥
पैलादिभ्यश्च ॥59॥
इञः प्राचाम् ॥60॥
न तौल्वलिभ्यः ॥61॥
तद्राजस्य बहुषु तेनैवास्त्रियाम् ॥62॥
यस्कादिभ्यो गोत्रे ॥63॥
यञञोश्च ॥64॥
अत्रिभृगुकुत्सवसिष्ठगोतमाङ्गिराभ्यश्च ॥65॥
बह्वच इञः प्राच्यभरतेषु ॥66॥
न गोपवनादिभ्यः ॥67॥
तिककितवादिभ्यो द्वन्द्वे ॥68॥
उपकादिभ्योऽन्यतरस्यामद्वन्द्वे ॥69॥
आगस्त्यकौण्डिन्ययोरगस्तिकुण्डिनच् ॥70॥
सुपो धातुप्रातिपदिकयोः ॥71॥
अर्दिप्रभृतिभ्यः शपः ॥72॥
बहुलं छन्दसि ॥73॥
यङोऽचि च ॥74॥
जुहोत्यादिभ्यः श्लु ॥75॥
बहुलं छन्दसि ॥76॥
गातिस्थाघुपाभूभ्यः सिचः परस्मैपदेषु ॥77॥
विभाषाघ्राधेट्शाच्छासः ॥78॥
तनादिम्यस्तथासोः ॥79॥
मन्त्रेघसह्वरणशवृदहाद्वृच्कृगमिजनिभ्यो लेः ॥80॥

आमः ॥81॥
अव्ययादाप्सुपः ॥82॥
नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः ॥83॥
तृतीयासप्तम्योर्बहुलम् ॥84॥
लुटः प्रथमस्य डारौरसः ॥85॥

तृतीयोऽध्यायः

प्रथमः पादः

प्रत्ययः ॥1॥
परश्च ॥2॥
आद्युदात्तश्च ॥3॥
अनुदात्तौ सुप्पितौ ॥4॥
गुप्तिज्किद्भ्यः सन् ॥5॥
मान्बधदान्शान्भ्यो दीर्घश्चाभ्यासस्य ॥6॥
धातोः कर्मणः समान कर्तृ कादिच्छायां वा ॥7॥
सुप आत्मनः क्यच् ॥8॥
काम्यच्च ॥9॥
उपमानादाचारे ॥10॥
कर्तुः क्यङ् सलोपश्च ॥11॥
भृशादिभ्यो भुव्यच्वेर्लोपश्च हल ॥12॥
लोहितादिडाज्भ्यः क्यष् ॥13॥
कष्टाय क्रमणे ॥14॥
कर्मणो रोमन्थतपोभ्यां वर्तिचरोः ॥15॥
वाष्पोष्मभ्यामुद्वमने ॥16॥
शब्दवैरकलहाभ्रकण्वमेवेभ्यः करणे ॥17॥
सुखादिभ्यः कर्तृवेदनायाम् ॥18॥
नमोवरिवश्चित्रङः क्यच् ॥19॥
पुच्छभाण्डचीवराणिङ् ॥2॥

मृण्डमिश्रश्लक्ष्णलवणव्रतवस्त्रहलकलकृततूस्तेभ्यो णिच् ॥21॥

धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ् ॥22॥

नित्यं कौटिल्ये गतौ ॥23॥

लुपसदचरजपजभदहदशगॄभ्यो भावगर्हायाम् ॥24॥

सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच् ॥25॥

हेतुमति च ॥26॥

कण्ड्वादिभ्यो यक् ॥27॥

गुपूंधूपविच्छिपणिपनिभ्य आयः ॥28॥

ऋतेरीयङ् ॥29॥

कमेर्णिङ् ॥30॥

आयादय आर्धधातुके वा ॥31॥

सनाद्यन्ता धातवः ॥32॥

स्यतासी लृलुटोः ॥33॥

सिब्बहुलं लेटि ॥34॥

कास्प्रत्ययादाममन्त्रे लिटि ॥35॥

इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः ॥36॥

दयायासश्च ॥37॥

उषविदजागृभ्योऽन्यतरस्याम् ॥38॥

भीह्रीभृहुवां श्लुवच्च ॥39॥

कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि ॥40॥

विदांकुर्वन्त्वित्यन्यतरस्याम् ॥41॥

अभ्युत्सादयांप्रजनयांचिकयांरमायामकः पावयांक्रियाद्विदामक्रन्निति च्छन्दसि ॥42॥

च्लि लुङि ॥43॥

च्लेः सिच् ॥44॥

शल इगुपधादनिटः क्सः ॥45॥

श्लिष आलिङ्गने ॥46॥

न दृशः ॥47॥

णिश्रिद्रुस्रुभ्य कर्त्तरि चङ् ॥48॥

विभाषा धेट्श्व्योः ॥49॥

गुपेश्छन्दसि ॥50॥

नोनयतिध्वनयत्येलयत्यर्दयतिभ्यः ॥51॥

अस्यतिवक्तिख्यातिभ्योऽङ् ॥52॥

लिपिसिचिह्वश्च ॥53॥

आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम् ॥54॥

पुषादिद्युताद्यॢदितः परस्मैपदेषु ॥55॥

सर्तिशास्त्यर्तिभ्यश्च ॥56॥

इरितो वा ॥57॥

जॄस्तम्भुम्रुचुम्लुचुग्रुचुग्लुचुग्लुञ्चुश्विभ्यश्च ॥58॥

कृमृदृरुहिभ्यश्छन्दसि ॥59॥

चिण ते पदः ॥6॥

दीपजनबुधपूरितायिप्यायिभ्योऽन्यतरस्याम् ॥61॥

अचः कर्मकर्त्तरि ॥62॥

दुहश्च ॥63॥

न रुधः ॥64॥

तपोऽनुतापे च ॥65॥

चिण भावकर्मणोः ॥66॥

सार्वधातु के यक् ॥67॥

कर्त्तरि शप् ॥68॥

दिवादिभ्यः श्यन् ॥69॥

वा भ्राशभ्लाशभ्रमुक्रमुक्लमु-त्रसित्रुटिलषः ॥70॥

यसोऽनुपसर्गात् ॥71॥

संयसश्च ॥72॥

स्वादिभ्यः श्नुः ॥73॥

श्रुवः शृ च ॥74॥

अक्षोऽन्यतरस्याम् ॥75॥

तनूकरणे तक्षः ॥76॥

तुदादिभ्यः शः ॥77॥

रुधादिभ्यः श्नम् ॥78॥

तनादिकृञ्भ्य उः ॥79॥

धिन्विकृण्व्योर च ॥80॥

क्र्यादिभ्यः श्ना ॥81॥

स्तम्भुस्तुम्भुस्कम्भुस्कुम्भुस्कुञ्भ्यः श्नुश्च ॥82॥

हलः श्नः शानज्झौ। ॥83॥
छन्दसि शायजपि ॥84॥
व्यत्ययो बहुलम् ॥85॥
लिङ्याशिष्यङ् ॥86॥
कर्मवत् कर्मणा तुल्यक्रियः ॥87॥
तपस्तपः कर्मकस्यैव ॥88॥
न दुहस्नुनमां यक्चिणौ ॥89॥
कुषिरजोः प्राचां श्यन् परस्मैपदं च ॥90॥
धातोः ॥91॥
तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् ॥92॥
कृदतिङ् ॥93॥
वाऽसरूपोऽस्त्रियाम् ॥94॥
कृत्याः ॥95॥
तव्यत्तव्यानीयरः ॥96॥
अचो यत् ॥97॥
पोरदुपधात् ॥98॥
शकिसहोश्च ॥99॥
गदमदचरयमश्चानुपसर्गे ॥100॥
अवद्यपण्यवर्या गर्ह्यपणितव्यानिरोधेषु ॥101॥
वह्यं करणम् ॥102॥
अर्यः स्वामिवैश्ययोः ॥103॥
उपसर्या काल्या प्रजने ॥104॥
अजर्यं संगतम् ॥105॥
वदः सुपि क्यप् च ॥106॥
भुवो भावे ॥107॥
हनस्त च ॥108॥
एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप् ॥109॥
ऋदुपधाच्चाक्लृपिचृतेः ॥110॥
ई च खनः ॥111॥
भृञोऽसंज्ञायाम् ॥112॥
मृजेर्विभाषा ॥113॥

गजसूयसूयमृपोद्यमच्यकुप्यकृष्टपच्याव्यथ्याः ॥114॥
भिद्योद्ध्यौ नदे ॥115॥
पुष्यसिद्ध्यौ नक्षत्रे ॥116॥
पृपूयविनीयजित्या मुञ्जकल्कहलिपु ॥117॥
प्रत्यपिभ्यां ग्रहेः ॥118॥
पदास्वैरिवाह्यापक्ष्येषु च ॥119॥
विभाषा कृवृषोः ॥120॥
युग्यं च पत्रे ॥121॥
अमावस्यदन्यतरस्याम् ॥122॥
छन्दसि निष्टर्क्यदेवहूयप्रणीयोन्नीयोच्छिष्यमर्यस्तर्याध्वर्यखन्यखान्यदेवयज्या
पृच्छ्यप्रतिषीव्यब्रह्मवाद्यभाव्यस्ताव्योपचाय्यपृडानि ॥123॥
ऋहलोर्ण्यत् ॥124॥
ओरावश्यके ॥125॥
आसुयुवपिरपिलपित्रपिचमश्च ॥126॥
आनाय्योऽनित्ये ॥127॥
प्रणाय्योऽसंमतौ ॥128॥
पाय्यसान्नाय्यनिकाय्यधाय्या मानहविर्निवाससामिधेनीषु ॥129॥
क्रतौ कुण्डपाय्यसंचाय्यौ ॥130॥
अग्नौ परिचाय्योपचाय्यसमूह्याः ॥131॥
चित्याग्निचित्ये च ॥132॥
ण्वुल्तृचौ ॥133॥
नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः ॥134॥
इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः ॥135॥
आतश्चोपसर्गे ॥136॥
पाघ्राध्माधेट्दृशः शः ॥137॥
अनुपसर्गाल्लिम्पविन्दधारिपारिवेद्युदेजिचेतिसातिसाहिभ्यश्च ॥138॥
ददातिदधात्योर्विभाषा ॥139॥
ज्वलितिकसन्तेभ्यो णः ॥140॥
श्याद्व्यधास्रुसंस्रु अतीणवसावहलिहश्लिषश्वसश्च ॥141॥
दुन्योरनुपसर्गे ॥142॥
विभाषा ग्रहः ॥143॥

गेहे कः ॥145॥

गस्थकन् ॥146॥

ण्युट् च ॥147॥

हश्चे व्रीहिकालयोः ॥148॥

प्रसृल्वः समभिहारे वुन् ॥149॥

आशिषि च ॥150॥

द्वितीयः पादः

कर्मण्यण् ॥1॥

ह्वावामश्च ॥2॥

आतोऽनुपसर्गे कः ॥3॥

सुपि स्थः ॥4॥

तुन्दशोकयोः परिमृजापनुदोः ॥5॥

प्रे दाज्ञः ॥6॥

समि ख्यः ॥7॥

गापोष्टक् ॥8॥

हरतेरनुद्यमनेऽच् ॥9॥

वयसि च ॥10॥

आङि ताच्छील्ये ॥11॥

अर्हः ॥12॥

स्तम्बकर्णयो रमिजपोः ॥13॥

शमि धातोः संज्ञायाम् ॥14॥

अधिकरणी शेतेः ॥15॥

चरेष्टः ॥16॥

भिक्षासेनादायेषु च ॥17॥

पुरोऽग्रतोऽग्रेषु सर्तेः ॥18॥

पूर्वे कर्तरि ॥19॥

कृञो हेतुताच्छील्यानुलोम्येषु ॥20॥

दिवाविभानिशाप्रभाभास्कारान्तानन्तादिबहुनान्दीकिंलिपिलिबिबलिभक्ति-कर्तृचित्रक्षेत्रसंख्याजङ्घाबाह्वहर्यत्तद्धनुररुःषु ॥21॥

कर्मणि भृतौ ॥22॥

न शब्दश्लोककलहगाथावैरचाटुसूत्रमन्त्रपदेषु ॥23॥

म्नम्वशकृतोरिन् ॥24॥

हरतेर्दृतिनाथयोः पशौ ॥25॥

फलेग्रहिरात्मंभरिश्च ॥26॥

छन्दसि वनसनरक्षिमथाम् ॥27॥

एजेः खश् ॥28॥

नासिकास्तनयोर्ध्माधेटोः ॥29॥

नाडीमुष्ट्योश्च ॥30॥

उदि कूले रुजिवाहोः ॥31॥

वहाभ्रे लिहः ॥32॥

परिमाणे पचः ॥33॥

मितनखे च ॥34॥

विध्वरुषोस्तुदः ॥35॥

असूर्यललाटयोर्दृशितपोः ॥36॥

उग्रंपश्येरंमदपाणिंधमाश्च ॥37॥

प्रियवशे वदः खच् ॥38॥

द्विषत्परयोस्तापेः ॥39॥

वाचि यमो व्रते ॥40॥

पूःसर्वयोर्दारिसहोः ॥41॥

सर्वकूलाभ्रकरीषेषु कषः ॥42॥

मेघर्तिभयेषु कृञः ॥43॥

क्षेमाप्रियमद्रेऽण च ॥44॥

आशिते भुवः करणभावयोः ॥45॥

संज्ञायां भृतॄवृजिधारिसहितपिदमः ॥46॥

गमश्च ॥47॥

अन्तात्यन्ताध्वदूरपारसर्वानन्तेषु डः ॥48॥

आशिषि हनः ॥49॥

अपे क्लेशतमसोः ॥50॥

कुमारशीर्षयोर्णिनिः ॥51॥

लक्षणो जायापत्योष्टक् ॥52॥

अमनुष्यकर्त्तृके च ॥53॥

शक्तौ हस्तिकपाटयोः ॥54॥

पाणिघताडघौ शिल्पिनि ॥55॥

आढ्यसुभगस्थूलपलितनग्नान्धप्रियेषु च्व्यर्थेष्वच्वौ कृञः करणे ख्युन् ॥56॥

कर्त्तरि भुवः खिष्णुच्खुकञौ ॥57॥

स्पृशोऽनुदके क्विन् ॥58॥

ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चांच ॥59॥

त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ् च ॥60॥

सत्सूद्विषद्रुहदुहयुजविदभिदच्छिदजिनीराजामुपसर्गेऽप क्विप् ॥61॥

भजो ण्विः ॥62॥

छन्दसि सहः ॥63॥

वहश्च ॥64॥

कव्यपुरीषपुरीष्येषु ञ्युट् ॥65॥

हव्येऽनन्तःपादम् ॥66॥

जनसनखनक्रमगमो विट् ॥67॥

अदोऽनन्ने ॥68॥

क्रव्ये च ॥69॥

दुहः कब्धश्च ॥70॥

मन्त्रे श्वेतवहोक्थशस्पुरोडाशोण्विन् ॥71॥

अवे यजः ॥72॥

विजुपे छन्दसि ॥73॥

आतो मनिन्क्वनिब्वनिपश्च ॥74॥

अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते ॥75॥

क्विप् च ॥76॥

स्थः क च ॥77॥

सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये ॥78॥

कर्त्तर्युपमाने ॥79॥

व्रते ॥80॥

बहुलमाभीक्ष्ण्ये ॥81॥

मनः ॥82॥

आत्ममाने खश्च ॥83॥

भूते ॥84॥

करणे यजः ॥85॥

कर्मणि हनः ॥86॥
ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु क्विप् ॥87॥
बहुलं छन्दसि ॥88॥
सुकर्मपापमन्त्रपुण्येषु कृञः ॥89॥
सोमे सुञः ॥90॥
अग्नौ चेः ॥91॥
कर्मण्यग्न्याख्यायाम् ॥92॥
कर्मणीनि विक्रियः ॥93॥
दृशेः क्वनिप् ॥94॥
राजनि युधि कृञः ॥95॥
सहे च ॥96॥
सप्तम्यां जनेर्डः ॥97॥
पञ्चम्यामजातौ ॥98॥
उपसर्गे च संज्ञायाम् ॥99॥
अनौ कर्मणि ॥100॥
अन्येष्वपि दृश्यते ॥101॥
निष्ठा ॥102॥
सुयजोर्ङ्वनिप् ॥103॥
जीर्यतेरतृन् ॥104॥
छन्दसि लिट् ॥105॥
लिटः कानज् वा ॥106॥
क्वसुश्च ॥107॥
भाषायां सदवसश्रुवः ॥108॥
उपेयिवाननाश्वाननूचानश्च ॥109॥
लुङ् ॥110॥
अनद्यतने लङ् ॥111॥
अभिज्ञावचने लृट् ॥112॥
न यदि ॥113॥
विभाषा साकाङ्क्षे ॥114॥
परोक्षे लिट् ॥115॥
हशश्वतोर्लङ् च ॥116॥

प्रश्ने चासन्नकाले ॥117॥

लट् स्मे ॥118॥

अपरोक्षे च ॥119॥

ननौ पृष्टप्रतिवचने ॥120॥

नन्वोर्विभाषा ॥121॥

पुरि लुङ् चास्मे ॥122॥

वर्तमाने लट् ॥123॥

लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे ॥124॥

सम्बोधने च ॥125॥

लक्षणहेत्वोः क्रियायाः ॥126॥

तौ सत् ॥127॥

पूङ्यजोः शानन् ॥128॥

ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश् ॥129॥

इङ्धार्योः शत्रकृच्छ्रिणि ॥130॥

द्विषोऽमित्रे ॥131॥

सुञो यज्ञसंयोगे ॥132॥

अर्हः प्रशंसायाम् ॥133॥

आ क्वेस्तच्छीलतद्धर्मतत्साधुकारिषु ॥134॥

तृन् ॥135॥

अलंकृञ्निराकृञ्प्रजनोत्पचोत्पतोन्मदरुच्यपत्रपवृतुवृधुसहचर इष्णुच् ॥136॥

णेश्छन्दसि ॥137॥

भुवश्च ॥138॥

ग्लाजिस्थश्च ग्स्नुः ॥139॥

त्रसिगृधिधृषिक्षिपेः क्नुः ॥140॥

शमित्यष्टाभ्यो घिनुण ॥141॥

संपृचानुरुधाङ्यमाङ्यसपरिसृसंसृजपरिदेविसंज्वरपरिक्षिपपरिरटपरिवदपरिदहपरिमु-
हदुषद्विषद्रुहदुहयुजाक्रीडविविचत्यजरजभजातिचरापचराभुषाभ्याहनश्च ॥142॥

वौ कषलसकत्थस्रम्भीः ॥143॥

अपे च लषः ॥144॥

प्र लपसृद्रुमथवदवसः ॥145॥

निन्दहिंसक्लिशखादविनाशपरिक्षिपपरिरटपरिवादिव्याभाषासूयो वुञ् ॥146॥

दंविक्रुशोश्चोपसर्गे ॥147॥
चलनशब्दार्थादकर्मकाद् युच् ॥148॥
अनुदात्तेतश्च हलादेः ॥149॥
जुचङ्क्रम्यदन्द्रम्यसृगृधिज्वलशुचलषपतपदः ॥150॥
क्रुधमण्डार्थेभ्यश्च ॥151॥
न यः ॥152॥
सूददीपदीक्षश्च ॥153॥
लषपतपदस्थाभूवृषहनकमगमशृभ्य उकञ् ॥154॥
जल्पभिक्षकुट्टलुण्ठवृङः षाकन् ॥155॥
प्रजोरिनिः ॥156॥
जिदृक्षिविश्रीण्वमाव्यथाभ्यमपरिभूप्रसूभ्यश्च ॥157॥
स्पृहिगृहिपतिदयिनिद्रातन्द्राश्रद्धाभ्य आलुच् ॥158॥
दाधेट्सिशदसदो रुः ॥159॥
सृघस्यदः क्मरच् ॥160॥
भञ्जभासमिदो घुरच् ॥161॥
विदिभिदिच्छिदेः कुरच् ॥162॥
इण्नशजिसर्तिभ्यः क्वरप् ॥163॥
गत्वरश्च ॥164॥
जागरूकः ॥165॥
यजजपदशां यङः ॥166॥
नमिकम्पिस्म्यजसकमहिंसदीपो रः ॥167॥
सनाशंसभिक्षा उः ॥168॥
बिन्दुरिच्छुः ॥169॥
क्याच्छन्दसि ॥170॥
आदृगमहनजनः किकिनौ लिट् च ॥171॥
स्वपितृषोर्नजिङ् ॥172॥
शृवन्द्योरारुः ॥173॥
भियः क्रुक्लुकनौ ॥174॥
स्थेशभासपिसकसो वरच् ॥175॥
यश्च यङः ॥176॥
भ्राजभासधुर्विद्युतोर्जिपृजुग्रावस्तुवः क्विप् ॥177॥

अन्येभ्योऽपि दृश्यते ॥178॥

भुवः संज्ञान्तरयोः ॥179॥

विप्रसंभ्यो ड्वसंज्ञायाम् ॥180॥

धः कर्मणि ष्ट्रन् ॥181॥

दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे ॥182॥

हलसूकरयोः पुवः ॥183॥

अर्तिलूधूसूखनसहचर इत्रः ॥184॥

पुवः संज्ञायाम् ॥185॥

कर्तरि चर्षिदेवतयोः ॥186॥

ञीतः क्तः ॥187॥

मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च ॥188॥

तृतीयः पादः

उणादयो बहुलम् ॥1॥

भूतेऽपि दृश्यन्ते ॥2॥

भविष्यति गम्यादयः ॥3॥

यावत्पुरानिपातयोर्लट् ॥4॥

विभाषा कदाकर्ह्योः ॥5॥

किंवृत्ते लिप्सायाम् ॥6॥

लिप्स्यमानसिद्धौ च ॥7॥

लोडर्थलक्षणे च ॥8॥

लिङ् चोर्ध्वमौहूर्तिके ॥9॥

तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम् ॥10॥

भाववचनाश्च ॥11॥

अण् कर्मणि च ॥12॥

लृट् शेषे च ॥13॥

लृटः सद् वा ॥14॥

अनद्यतने लुट् ॥15॥

पदरुजविशस्पृशो घञ् ॥16॥

सृ स्थिरे ॥17॥

भावे ॥18॥

अकर्तरि च कारके संज्ञायाम् ॥19॥

परिमाणाख्यायां सर्वेभ्यः ॥20॥

इङश्च ॥21॥

उपसर्गे रुवः ॥22॥

समि युद्रुदुवः ॥23॥

श्रिणीभुवोऽनुपसर्गे ॥24॥

वौ क्षुश्रुवः ॥25॥

अवोदोर्नियः ॥26॥

प्रे द्रुस्तुस्रुवः ॥27॥

निरभ्योः पूल्वोः ॥28॥

उन्न्योर्ग्रः ॥29॥

कृ धान्ये ॥30॥

यज्ञे समि स्तुवः ॥31॥

प्रे स्त्रोऽयज्ञे ॥32॥

प्रथने वावशब्दे ॥33॥

छन्दोनाम्नि च ॥34॥

उदि ग्रहः ॥35॥

समि मुष्टौ ॥36॥

परिन्योर्नीणोर्द्यूताभ्रेषयोः ॥37॥

परावनुपात्यय इणः ॥38॥

व्युपयोः शेतेः पर्याये ॥39॥

हस्तादाने चेरस्तेये ॥40॥

निवासचितिशरीरोपसमाधानेष्वादेश्च कः ॥41॥

संघे चानौत्तराधर्ये ॥42॥

कर्मव्यतिहारे णच् स्त्रियाम् ॥43॥

अभिविधौ भाव इनुण ॥44॥

आक्रोशेऽवन्योर्ग्रहः ॥45॥

प्रे लिप्सायाम् ॥46॥

परौ यज्ञे ॥47॥

नौ वृ धान्ये ॥48॥

उदि श्रयतियौतिपूद्रुवः ॥49॥

विभाषाङि रुप्लुवोः ॥50॥

अवे ग्रहो वर्षप्रतिबन्धे ॥51॥
प्रे वणिजाम् ॥52॥
रश्मौ च ॥53॥
वृणोतेराच्छादने ॥55॥
परौ भुवोऽवज्ञाने ॥56॥
एरच् ॥56॥
ॠदोरप् ॥57॥
ग्रहवृदृनिश्चिगमश्च ॥58॥
उपसर्गेऽदः ॥59॥
नौ ण च ॥60॥
व्यधजपोरनुपसर्गे ॥61॥
स्वनहसोर्वा ॥62॥
यमः समुपनिविषु च ॥63॥
नौ गदनदपठस्वनः ॥64॥
क्वणो वीणायां च ॥65॥
नित्यं पणः परिमाणे ॥66॥
मदोऽनुपसर्गे ॥67॥
प्रमदसंमदौ हर्षे ॥68॥
समुदोरजः पशुषु ॥69॥
अक्षेषु ग्लहः ॥70॥
प्रजने सर्तेः ॥71॥
ह्वः संप्रसारणं च न्यभ्युपविषु ॥72॥
आङि युद्धे ॥73॥
निपानमाहावः ॥74॥
भावेऽनुपसर्गस्य ॥75॥
हनश्च वधः ॥76॥
मूर्तौ घनः ॥77॥
अन्तर्घनो देशे ॥78॥
अगारैकदेशे प्रघणःप्रघाणश्च ॥79॥.
उद्घनोऽत्याधानम् ॥80॥
अपघनोऽङ्गम् ॥81॥

करणेऽयोविद्रुषु ॥82॥
स्तम्बे क च ॥83॥
परौ घः ॥84॥
उपघ्न आश्रये ॥85॥
संघोद्घौ गणप्रशंसयोः ॥86॥
निघो निमितम् ॥87॥
ड्वितः क्त्रिः ॥88॥
ट्वितोऽथुच् ॥89॥
यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो नङ् ॥90॥
स्वपो नन् ॥91॥
उपसर्गे घोः किः ॥92॥
कर्मण्यधिकरणे च ॥93॥
स्त्रियां क्तिन् ॥94॥
स्थागापापचो भावे ॥95॥
मन्त्रे वृषेषपचमनविदभूवीरा उदात्तः ॥96॥
अतियूतिजूतिसातिहेतिकीर्तयश्च ॥97॥
व्रजयजोर्भावे क्यप् ॥98॥
संज्ञायां समजनिषदनिपतमनबिदषुञ्शीङ्भृञिणः ॥99॥
कृञः श च ॥100॥
इच्छा ॥101॥
अ प्रत्ययात् ॥102॥
गुरोश्च हलः ॥103॥
षिद्भिदादिभ्योऽङ् ॥104॥
चिन्तिपूजिकथिकुम्बिचर्चश्च ॥105॥
आतश्चोपसर्गे ॥106॥
ण्यासश्रन्थो युच् ॥107॥
रोगाख्यायां ण्वुल् बहुलम् ॥108॥
संज्ञायाम् ॥109॥
विभाषाऽऽख्यानपरिप्रश्नयोरिञ् च ॥110॥
पर्यायार्हर्णोत्पत्तिषु ण्वुच ॥111॥
आक्रोशे नञ्यनिः ॥112॥

कृत्यल्युटो बहुलम् ॥113॥
नपुंसके भावे क्तः ॥114॥
ल्युट् च ॥115॥
कर्मणि च येन संस्पर्शात् कर्तुः शरीरसुखम् ॥116॥
करणाधिकरणयोश्च ॥117॥
पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण ॥118॥
गोचरसंचरवहव्रजव्यजापणनिगमाश्च ॥119॥
अवे तृस्त्रोर्घञ् ॥120॥
हलश्च ॥121॥
अध्यायन्यायोद्यावसंहाराश्च ॥122॥
उदङ्कोऽनुदके ॥123॥
जालमानायः ॥124॥
खनो घ च ॥125॥
ईषद्दुःसुषु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल् ॥126॥
कर्तृकर्मणोश्च भूकृञोः ॥127॥
आतो युच् ॥128॥
छन्दसि गत्यर्थेभ्यः ॥129॥
अन्येभ्योऽपि दृश्यते ॥130॥
वर्त्तमानसामीप्ये वर्तमानवद् वा ॥131॥
आशंसायां भूतवच्च ॥132॥
क्षिप्रवचने लृट् ॥133॥
आशंसावचने लिङ् ॥134॥
नानद्यतनवत् क्रियाप्रबन्धसामीप्ययोः ॥135॥
भविष्यति मर्यादावचनेऽवरस्मिन् ॥136॥
कालविभागे चाहोरात्राणाम् ॥137॥
परस्मिन् विभाषा ॥138॥
लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ ॥139॥
भूते च ॥140॥
वोताप्योः ॥141॥
गर्हायां लडपिजात्वोः ॥142॥
विभाषा कथमि लिङ् च ॥143॥

किंवृत्ते लिङ्लृटौ ॥144॥
अनवक्लृप्त्यमर्षयोरकिंवृत्तेऽपि ॥145॥
किंकिलास्त्यर्थेषु लृट् ॥146॥
जातुयदोर्लिङ् ॥147॥
यच्चयत्रयोः ॥148॥
गर्हायां च ॥149॥
चित्रीकरणे च ॥150॥
शेषे लृडयदौ ॥151॥
उताप्योः समर्थयोर्लिङ् ॥152॥
कामप्रवेदनेऽकच्चिति ॥153॥
संभावनेऽलमिति चेत् सिद्धाप्रयोगे ॥154॥
विभाषा धातौ संभावनवचनेऽयदि ॥155॥
हेतुहेतुमतोर्लिङ् ॥156॥
इच्छार्थेषु लिङ्लोटौ ॥157॥
समानकर्तृकेषु तुमुन ॥158॥
लिङ् च ॥159॥
इच्छार्थेभ्यो विभाषा वर्त्तमाने ॥160॥
विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु लिङ् ॥161॥
लोट् च ॥162॥
प्रैषातिसर्गप्राप्तकालेषु कृत्याश्च ॥163॥
लिङ् चोर्ध्वमौहूर्तिके ॥164॥
स्मेलोट् ॥165॥
अधीष्टे च ॥166॥
कालसमयवेलासु तुमुन ॥167॥
लिङ् यदि ॥168॥
अर्हे कृत्यतृचश्च ॥169॥
आवश्यकाधमर्ण्ययोर्णिनिः ॥170॥
कृत्याश्च ॥171॥
शकि लिङ् च ॥172॥
आशिषि लिङ्लोटौ ॥173॥
क्तिच्क्तौ च संज्ञायाम् ॥174॥

माङि लुङ ॥175॥

स्मोत्तरे लङ् च ॥176॥

चतुर्थः पादः

धातुसंबन्धे प्रत्ययाः ॥1॥

क्रियासमभिहारे लोट् लोटो हिस्वौ वा च तध्वमोः ॥2॥

समुच्चयेऽन्यतरस्याम् ॥3॥

यथाविध्यनुप्रयोगः पूर्वस्मिन् ॥4॥

समुच्चये सामान्यवचनस्य ॥5॥

छन्दसि लुङ्लङ्लिटः ॥6॥

लिङर्थे लेट् ॥7॥

उपसंवादाशङ्कयोश्च ॥8॥

तुमर्थे सेसेनसेऽसेन्क्सेकसेनध्यैअध्यैन्कध्यैकध्यैन्शध्यैशध्यैन्तवैतवेङ्तवेनः ॥9॥

प्रयै रोहिष्यै अव्यथिष्यै ॥10॥

दृशे विख्ये च ॥11॥

शकि णमुल्कमलौ ॥12॥

ईश्वरे तोसुन्कसुनौ ॥13॥

कृत्यार्थे तवैकेन्केयत्वनः ॥14॥

अवचक्षे च ॥15॥

भावलक्षणे स्थेण्कृञ्वदिचरिहुतमिजनिभ्यस्तोसुन् ॥6॥

सृपितृदोः कसुन् ॥17॥

अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा ॥18॥

उदीचां माङो व्यतीहारे ॥19॥

परावरयोगे च ॥20॥

समानकर्तृकयोः पूर्वकाले ॥21॥

आभीक्ष्ण्ये णमुल् च ॥22॥

न यद्यनाकाङ्क्षे ॥23॥

विभाषाऽग्रेप्रथमपूर्वेषु ॥24॥

कर्मण्याक्रोशे कृञः खमुञ ॥25॥

स्वादुमि णमुल् ॥26॥

अन्यथैवंकथमित्थंसु सिद्धाप्रयोगश्चेत् ॥27॥

यथातथयोरसूयाप्रतिवचने ॥28॥

कर्मणि दृशिविदोः साकल्ये ॥29॥

यावति विन्दजीवोः ॥30॥
चर्मोदरयोः पूरेः ॥31॥
वर्षप्रमाणं ऊलोपश्चास्यान्यतरस्याम् ॥32॥
चेले क्नोपेः ॥33॥
निमूलसमूलयोः कषः ॥34॥
शुष्कचूर्णरूक्षेषु पिषः ॥35॥
समूलाकृतजीवेषु हन्कृञ्ग्रहः ॥36॥
करणे हनः ॥37॥
स्नेहने पिषः ॥38॥
हस्ते वर्तिग्रहोः ॥39॥
स्वे पुषः ॥40॥
अधिकरणे बन्धः ॥41॥
संज्ञायाम् ॥42॥
कर्त्रोर्जीवपुरुषयोर्नशिवहोः ॥43॥
ऊर्ध्वे शुषिपूरोः ॥44॥
उपमाने कर्मणि च ॥45॥
कषादिषु यथाविध्यनुप्रयोगः ॥46॥
उपदंशस्तृतीयायाम् ॥47॥
हिंसार्थानां च समानकर्मकाणाम् ॥48॥
सप्तम्यां चोपपीडरुधकर्षः ॥49॥
समासत्तौ ॥50॥
प्रमाणे च ॥51॥
अपादाने परीप्सायाम् ॥52॥
द्वितीयायां च ॥53॥
स्वाङ्गेऽध्रुवे ॥54॥
परिक्लिश्यमाने च ॥55॥
विशिपतिपदिस्कन्दां व्याप्यमानासेव्यमानयोः ॥56॥
अस्यतितृषोः क्रियान्तरे कालेषु ॥57॥
नाम्न्यादिशिग्रहोः ॥58॥
अव्ययेऽयथाभिप्रेताख्याने कृञः क्त्वाणमुलौ ॥59॥
तिर्यच्यपवर्गे ॥60॥
स्वाङ्गे तस्प्रत्यये कृभ्वोः ॥61॥

नाधार्थप्रत्यये च्व्यर्थे ॥62॥

तूष्णीमि भुवः ॥63॥

अन्वच्यानुलोम्ये ॥64॥

शकधृषज्ञाग्लाघटरभलभक्रमसहार्हास्त्यर्थेषु तुमुन् ॥65॥

पर्याप्तिवचनेष्वलमर्थेषु ॥66॥

कर्तरि कृत् ॥67॥

भव्यगेयप्रवचनीयोपस्थानीयजन्याप्लाव्यापात्या वा ॥68॥

लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः ॥69॥

तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः ॥70॥

आदिकर्मणि क्तः कर्तरि च ॥71॥

गत्यर्थाकर्मकश्लिषशीङ्स्थासवसजनरुहजीर्यतिभ्यश्च ॥72॥

दाशगोघ्नौ संप्रदाने ॥73॥

भीमादयोऽपादाने ॥74॥

ताभ्यामन्यत्रोणादयः ॥75॥

क्तोऽधिकरणे च ध्रौव्यगतिप्रत्यवसानार्थेभ्यः ॥76॥

लस्य ॥77॥

तिप्तस्झिसिप्थस्थमिब्वस्मस्तातांझथासाथांध्वमिड्वहिमहिङ् ॥78॥

टित आत्मनेपदानां टेरे ॥79॥

थासः से ॥80॥

लिटस्तझयोरेशिरेच् ॥81॥

परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः ॥82॥

विदो लटो वा ॥83॥

ब्रुवः पञ्चानामादित आहो ब्रुवः ॥84॥

लोटो लङ्वत् ॥85॥

एरुः ॥86॥

सेर्ह्यपिच्च ॥87॥

वा छन्दसि ॥88॥

मेर्निः ॥89॥

आमेतः ॥90॥

सवाभ्यां वामौ ॥91॥

आडुत्तमस्य पिच्च ॥92॥

एत ऐ ॥93॥

लेटोऽडाटौ ॥94॥

आत ऐ ॥95॥

वैतोऽन्यत्र ॥96॥

इतश्च लोपः परस्मैपदेषु ॥97॥

स उत्तमस्य ॥98॥

नित्यं ङितः ॥99॥

इतश्च ॥100॥

तस्थस्थमिपां तांतंतामः ॥101॥

लिङः सीयुट् ॥102॥

यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च ॥103॥

किदाशिषिं ॥104॥

झस्य रन् ॥105॥

इटोऽत् ॥106॥

सुट् तिथोः ॥107॥

झेर्जुस् ॥108॥

सिंजभ्यस्तविदिभ्यश्च ॥109॥

आतः ॥110॥

लङः शाकटायनस्यैव ॥111॥

द्विषश्च ॥112॥

तिङ्शित् सार्वधातुक्रम् ॥113॥

आर्धधातुकं शेषः ॥114॥

लिट् च ॥115॥

लिङाशिषिं ॥116॥

छन्दस्युभयथा ॥117॥

चतुर्थोऽध्यायः

प्रथमः पादः

ङ्याप्प्रातिपदिकात् ॥1॥

स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् ॥2॥

स्त्रियाम् ॥3॥

अजाद्यतष्टाप् ॥4॥

ऋन्नेभ्यो ङीप् ॥5॥

उगितश्च ॥16॥

वनो र च ॥7॥

पादोऽन्यतरस्याम् ॥8॥

टावृचि ॥9॥

न षट्स्वस्रादिभ्यः ॥10॥

मनः ॥11॥

अनो बहुव्रीहेः ॥12॥

डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम् ॥13॥

अनुपसर्जनात् ॥14॥

टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः ॥15॥

यञश्च ॥16॥

प्राचां ष्फस्तद्धितः ॥17॥

सर्वत्र लोहितादिकतन्तेभ्यः ॥18॥

कौरव्यमाण्डूकाभ्यां च ॥19॥

वयसि प्रथमे ॥20॥

द्विगोः ॥21॥
अपरिमाणबिस्ताचितकम्बल्येभ्यो न तद्धितलुकि ॥22॥
काण्डान्तात् क्षेत्रे ॥23॥
पुरुषात् प्रमाणेऽन्यतरस्याम् ॥24॥
बहुव्रीहेरूधसो ङीष् ॥25॥
संख्याव्ययादेर्ङीप ॥26॥
दामहायनान्ताच्च ॥27॥
अन उपधालोपिनोऽन्यतरस्याम् ॥28॥
नित्यं संज्ञाछन्दसोः ॥29॥
केवलमामकभागधेयपापापरसमानार्यकृतसुमङ्गलभेषजाच्च ॥30॥
रात्रेश्चाजसौ ॥31॥
अन्तर्वत्पतिवतोर्नुक् ॥32॥
पत्युर्नो यज्ञसंयोगे ॥33॥
विभाषा सपूर्वस्य ॥34॥
नित्यं सपत्न्यादिषु ॥35॥
पूतक्रतोरै च ॥36॥
वृषाकप्यग्निकुसितकुसीदानामुदात्तः ॥37॥
मनोरौ वा ॥38॥
वर्णादनुदात्तोपधात्तो नः ॥39॥
अन्यतो ङीष् ॥40॥
षिद्गौरादिभ्यश्च ॥41॥
जानपदकुण्डगोणस्थलभाजनागकालनीलकुशकामुककबराद्वृत्त्यमत्रावपनाकृत्रिमा
श्राणास्थौल्यवर्णानाच्छादनायोविकारमैथुनेच्छाकेशवेशेषु ॥42॥
शोणात् प्राचाम् ॥43॥
वोतो गुणवचनात् ॥44॥
बह्वादिभ्यश्च ॥45॥
नित्यं छन्दसि ॥46॥
भुवश्च ॥47॥
पुंयोगादाख्यायाम् ॥48॥
इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक् ॥49॥
क्रीतात् करणपूर्वात् ॥50॥

क्तादल्पाख्यायाम् ॥51॥

बहुव्रीहेश्चान्तोदात्तात् ॥52॥

अस्वाङ्गपूर्वपदाद् वा ॥53॥

स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात् ॥54॥

नासिकोदरौष्ठजङ्घादन्तकर्णशृङ्गाच्च ॥55॥

न क्रोडादिबह्वचः ॥56॥

सहनञ्विद्यमानपूर्वाच्च ॥57॥

नखमुखात् संज्ञायाम् ॥58॥

दीर्घजिह्वी च च्छन्दसि ॥59॥

दिक्पूर्वपदान् ङीप् ॥60॥

वाहः ॥61॥

सख्यशिश्वीति भाषायाम् ॥62॥

जातेरस्त्रीविषयादयोपधात् ॥63॥

पाककर्णपर्णपुष्पफलमूलवालोत्तरपदाच्च ॥64॥

इतो मनुष्यजातेः ॥65॥

ऊङुतः ॥66॥

बाह्वन्तात् संज्ञायाम् ॥67॥

पङ्गोश्च ॥68॥

ऊरूत्तरपदादौपम्ये ॥69॥

संहितशफलक्षणवामादेश्च ॥70॥

कद्रुकमण्डल्वोश्छन्दसि ॥71॥

संज्ञायाम् ॥72॥

शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन् ॥73॥

यङश्चाप् ॥74॥

आवट्याच्च ॥75॥

तद्धिताः ॥76॥

यूनस्तिः ॥77॥

अणिञोरनार्षयोर्गुरूपोत्तमयोः ष्यङ् गोत्रे ॥78॥

गोत्रावयवात् ॥79॥

क्रौड्यादिभ्यश्च ॥80॥

दैवयज्ञिशौचिवृक्षिसात्यमुग्रिकाण्ठेविद्धिभ्योऽन्यतरस्याम् ॥81॥

समर्थानां प्रथमाद् वा ॥82॥
प्राग् दीव्यतोऽण ॥83॥
अश्वपत्यादिभ्यश्च ॥84॥
दित्यदित्यादित्यपत्युत्तरपदाण्ण्यः ॥85॥
उत्सादिभ्योऽञ् ॥86॥
स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ सभनात् ॥87॥
द्विगोर्लुगनपत्ये ॥88॥
गोत्रेऽलुगचि ॥89॥
यूनि लुक् ॥90॥
फक्फिञोरन्यतरस्याम् ॥91॥
तस्याऽपत्यम् ॥92॥
एको गोत्रे ॥93॥
गोत्राद् यून्यस्त्रियाम् ॥94॥
अत इञ् ॥95॥
बाह्वादिभ्यश्च ॥96॥
सुधातुरकङ् च ॥97॥
गोत्रे कुञ्जादिभ्यश्च्फञ् ॥98॥
नडादिभ्यः फक् ॥99॥
हरितादिभ्योऽञः ॥100॥
यञिञोश्च ॥101॥
शरद्वच्छुनकदर्भाद् भृगवत्साग्रायणेषु ॥102॥
द्रोणपर्वतजीवन्तादन्यारस्याम् ॥103॥
अनृष्यानन्तर्ये बिदादिभ्योऽञ् ॥104॥
गर्गादिभ्यो यञ् ॥105॥
मधुबभ्र्वोर्ब्राह्मणकौशिकयोः ॥106॥
कपिबोधादाङ्गिरसे ॥107॥
वतण्डाच्च ॥108॥
लुक् स्त्रियाम् ॥109॥
अश्वादिभ्यः फञ् ॥110॥
भर्गात् त्रैगर्त्ते ॥111॥
शिवादिभ्योऽण ॥112॥

अवृद्धाभ्यो नदीमानुषीभ्यस्तान्नामिकाभ्यः ॥113॥

ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च ॥114॥

मातुरुत् संख्यासंभपूर्वायाः ॥115॥

कन्यायाः कनीन च ॥116॥

विकर्णशुङ्गच्छगलाद् वत्सभरद्वाजात्रिभ् ॥117॥

पीलाया वा ॥118॥

ढक् च मण्डूकात् ॥119॥

स्त्रीभ्यो ढक् ॥12॥

द्व्यचः ॥121॥

इतश्चानिञः ॥122॥

शुभ्रादिभ्यश्च ॥123॥

विकर्णकुषीकात् काश्यपे ॥124॥

भ्रुवोवुक् च ॥125॥

कल्याण्यादीनामिनङ् ॥126॥

कुलटाया वा ॥127॥

चटकाया ऐरक् ॥128॥

गोधाया ढ्रक् ॥129॥

आरगुदीचाम् ॥130॥

क्षुद्राभ्यो वा ॥131॥

पितृष्वसुश्छण ॥132॥

ढकि लोपः ॥133॥

मातृष्वसुश्च ॥134॥

चतुष्पाद्भ्यो ढञ् ॥135॥

गृष्ट्यादिभ्यश्च ॥136॥

राजश्वशुराद् यत् ॥137॥

क्षत्राद् घः ॥138॥

कुलात् खः ॥139॥

अपूर्वपदादन्यतरस्यां यड्ढकञौ ॥140॥

महाकुलादञ्खञौ ॥141॥

दुष्कुलाड्ढक् ॥142॥

स्वसुश्छः ॥143॥

भ्रातुर्व्यच्च ॥144॥
व्यन् सपत्ने ॥145॥
रेवत्यादिभ्यष्ठक् ॥146॥
गोत्रस्त्रियाः कुत्सने ण च ॥147॥
वृद्धाट् ठक् सौवीरेषु बहुलम् ॥148॥
फेश्छ च ॥149॥
फाण्टाहृतिमिमताभ्यां णफिञौ ॥150॥
कुर्वादिभ्यो ण्यः ॥151॥
सेनान्तलक्षणकारिभ्यश्च ॥152॥
उदीचामिञ् ॥153॥
तिकादिभ्यः फिञ् ॥154॥
कौसल्यकार्मार्याभ्यां च ॥155॥
अरणो द्व्यचः ॥156॥
उदीचां वृद्धदगोत्रात् ॥157॥
वाकिनीदीनां कुक् च ॥158॥
पुत्रान्तोदन्यतरस्याम् ॥159॥
प्राचामवृद्धात् फिन् बहुलम् ॥160॥
मनोर्जातावञ्यतौ षुक् च ॥161॥
अपत्यं पौत्रप्रभृति गोत्रम् ॥162॥
जीवति तु वंश्ये युवा ॥163॥
भ्रातरि च ज्यायसि ॥164॥
वाऽन्यस्मिन् सपिण्डे स्थविरतरे जीवति ॥165॥
जनपदशब्दात् क्षत्रियादञ् ॥166॥
साल्वेयगान्धारिभ्यां च ॥167॥
द्व्यञ्मगधकलिङ्गसूरमसादण् ॥168॥
वृद्धेत्कोसलाजादाञ्ञ्यङ्टाश्मकादिञ् ॥169॥
कुरुनादिभ्यो ण्यः ॥170॥
साल्वावयवप्रत्यग्रथकलकूटाश्मकादिञ् ॥171॥
ते तद्राजाः ॥172॥
कम्बोजाल्लुक् ॥173॥
स्त्रियामवन्तिकुन्तिकुरुभ्यश्च ॥174॥

अतश्च ॥175॥

न प्राच्यभर्गादियौधेयादिभ्यः ॥176॥

द्वितीयः पादः

तेन रक्तं रागात् ॥1॥

लाक्षारोचनाट्ठक् ॥2॥

नक्षत्रेण युक्तः कालः ॥3॥

लुबविशेषे ॥4॥

संज्ञायां श्रवणाश्वत्थाभ्याम् ॥5॥

द्वन्द्वाच्छः ॥6॥

दृष्टं साम ॥7॥

वामदेवाड्ड्यड्ड्यौ ॥8॥

परिवृतो रथः ॥9॥

पाण्डुकम्बलादिनिः ॥10॥

द्वैपवैयाघ्रादञ् ॥11॥

कौमारापूर्ववचने ॥12॥

तत्रोद्धृतममत्रेभ्यः ॥13॥

स्थण्डिलाच्छयितरि व्रते ॥14॥

संस्कृतं भक्षाः ॥15॥

शूलोखाद् यत् ॥16॥

दध्नष्ठक् ॥17॥

उदश्वितोऽन्यतरस्याम् ॥18॥

क्षीराड्ढञ् ॥19॥

साऽस्मिन् पौर्णमासीति ॥20॥

आग्रहायण्यश्वत्थाट्ठक् ॥21॥

विभाषा फाल्गुनीश्रवणाकार्तिकीचैत्रीभ्यः ॥22॥

साऽस्य देवता ॥23॥

कस्येत् ॥24॥

शुक्राद् घन् ॥25॥

अपोनप्त्रपांनप्तृभ्यां घः ॥26॥

छ च ॥27॥

महेन्द्राद् घाणौ च ॥28॥

सामाट् ट्यण् ॥29॥

वाय्वृतुपित्रुषसो यत् ॥3॥

द्यावापृथिवीशुनासीरमरुत्वदग्नीषोमवास्तोष्पतिगृहमेधाच्छ च ॥31॥

अग्नेर्ढक् ॥32॥

कालेभ्यो भववत् ॥33॥

महाराजप्रोष्ठपदाट् ठञ् ॥34॥

पितृव्यमातुलमातामहपितामहाः ॥35॥

तस्य समूहः ॥36॥

भिक्षादिभ्योऽण ॥37॥

गोत्रोक्षोष्ट्रोरभ्रराजराजन्यराजपुत्रवत्समनुष्याजाद् वुञ ॥38॥

केदाराद् यञ् च ॥39॥

ठञ् कवचिपश्च ॥40॥

ब्राह्मणमाणववाडवाद् यन् ॥41॥

ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल् ॥42॥

अनुदात्तादेरञ् ॥43॥

खण्डिकादिभ्यश्च ॥44॥

चरणेभ्यो धर्मवत् ॥45॥

अचित्तहस्तिधेनोष्ठक् ॥46॥

केशाश्वाभ्यां यञ्छावन्यतरस्याम् ॥47॥

पाशादिभ्यो यः ॥48॥

खलगोरथात् ॥49॥

इनित्रकट्यचश्च ॥50॥

विषयो देशे ॥51॥

राजन्यादिभ्यो वुञ् ॥52॥

भौरिक्याद्यैनषुकार्यादिभ्यो विधल्भक्तलौ ॥53॥

सोऽस्यादिरितिच्छन्दसः प्रगाथेषु ॥54॥

संग्रामे प्रयोजनयोद्धृभ्यः ॥55॥

तदस्यां प्रहरणमिति क्रीड़ायां णः ॥56॥

घञः साऽस्यां क्रियेतिं ञः ॥57॥

तदधीते तद्वेद ॥58॥

क्रतूक्थादिसूत्रान्ताट् ठक् ॥59॥

क्रमादिभ्यो वुन् ॥60॥
अनुब्राह्मणादिनिः ॥61॥
वसन्तादिभ्यष्ठक् ॥62॥
प्रोक्ताल्लुक् ॥63॥
सूत्राच्च कोपधात् ॥64॥
छन्दोब्राह्मणानि च तद्विषयाणि ॥65॥
तदस्मिन्नस्तीति देशे तन्नाम्नि ॥66॥
तेन निर्वृत्तम् ॥67॥
तस्य निवासः ॥68॥
अदूरभवश्च ॥69॥
ओरञ् ॥70॥
मतोश्च बह्वजङ्गात् ॥71॥
बह्वचः कूपेषु ॥72॥
उदक् च विपाशः ॥73॥
संकलादिभ्यश्च ॥74॥
स्त्रीषु सौवीरसाल्वप्राक्षु ॥75॥
सुवास्त्वादिभ्योऽण् ॥76॥
रोणी ॥77॥
कोपधाच्च ॥78॥
वुञ्छण्कठजिलसेनिरढञ्ण्ययफक्फिञिञ्ञ्यकक्ठकोऽरीहणकृशाश्वर्यकुमदकाशतृ-
णप्रेक्षाश्मसखिसंकाशबलपक्षकर्णसुतंगमप्रगदिन्वराहकुमुदादिभ्यः ॥79॥
जनपदे लुप् ॥80॥
वरणादिभ्यश्च ॥81॥
शर्कराया वा ॥82॥
ठक्छौ चे ॥83॥
नद्यां मतुप् ॥84॥
मध्वादिभ्यश्च ॥85॥
कुमुदनडवेतसेभ्यो ड्मतुप् ॥86॥
नडशादाड् ड्वलच् ॥87॥
शिखाया वलच् ॥88॥
उत्करादिभ्यश्छः ॥89॥

नडादीनां कुक् च ॥90॥
शेषे ॥91॥
राष्ट्रावारपाराद् घखौ ॥92॥
ग्रामाद् यखञौ ॥93॥
कत्र्यादिभ्यो ढकञ् ॥94॥
कुलकुक्षिग्रीवाभ्यः श्वास्यलंकारेषु ॥95॥
नद्यादिभ्यो ढक् ॥96॥
दक्षिणापश्चात्पुरसस्त्यक् ॥97॥
कापिश्याः ष्फक् ॥98॥
रङ्कोरमनुष्येऽण् च ॥99॥
द्युप्रागपागुदक्प्रतीचो यत् ॥100॥
कन्थायाष्ठक् ॥101॥
वर्णौ वुक् ॥102॥
अव्ययात् त्यप् ॥103॥
ऐषमोह्यःश्वसोऽन्यतरस्याम् ॥104॥
तीररूप्योत्तरपदादञ्ञौ ॥105॥
दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां ञः ॥106॥
मद्रेभ्योऽञ् ॥107॥
उदीच्यग्रामाच्च बह्वचोऽन्तोदात्तात् ॥108॥
प्रस्थोत्तरपदलद्यादिकोपधादण ॥109॥
कण्वादिभ्यो गोत्रे ॥110॥
इञश्च ॥111॥
न द्व्यचः प्राच्यभरतेषु ॥112॥
वृद्धाच्छः ॥113॥
भवतष्ठक्छसौ ॥114॥
काश्यादिभ्यष्ठञ्ञिठौ ॥115॥
वाहीकग्रामेभ्यश्च ॥116॥
विभाषोशीनरेषु ॥117॥
ओर्देशे ठञ् ॥118॥
वृद्धात् प्राचाम् ॥119॥
धन्वयोपधाद् वुञ् ॥120॥

प्रस्थपुरवहान्ताच्च ॥121॥

रोपधेतोः प्राचाम् ॥122॥

जनपदतदवध्योश्च ॥123॥

अवृद्धादपि बहुवचनविषयात् ॥124॥

कच्छाग्निवक्त्रगर्तोत्तरपदात् ॥125॥

धूमादिभ्यश्च ॥126॥

नगरात् कुत्सनप्रावीण्ययोः ॥127॥

अरण्यान्मनुष्ये ॥128॥

विभाषा कुरुयुगन्धराभ्याम् ॥129॥

मद्रवृज्योः कन् ॥130॥

कोपधादण ॥131॥

कच्छादिभ्यश्च ॥132॥

मनुष्यतत्स्थयोर्वुञ ॥133॥

अपदातौ साल्वात् ॥134॥

गोयवाग्वोश्च ॥135॥

गर्त्तोत्तरपदाच्छः ॥133॥

गहादिभ्यश्च ॥137॥

प्राचां कटादेः ॥138॥

राजः क च ॥139॥

वृद्धादकेकान्तखोपधात् ॥140॥

कन्थापलदनगरग्रामह्रदोत्तरपदात् ॥141॥

पर्वताच्च ॥142॥

विभाषाऽमनुष्ये ॥143॥

कृकणपर्णाद् भारद्वाजे ॥144॥

तृतीयः पादः

युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ् च ॥1॥

तस्मिन्नणि च युष्माकास्माकौ ॥2॥

तवकममकावेकवचने ॥3॥

अर्धाद् यत् ॥4॥

परावराधमोत्तमपूर्वाच्च ॥5॥

दिक्पूर्वपदाट्ठञ् च ॥6॥

ग्रामजनपदैकदेशादञ्ठञौ ॥1॥
मध्यान्मः ॥8॥
अ सांप्रतिके ॥9॥
द्वीपादनुसमुद्रं यञ् ॥10॥
कालाट्ठञ् ॥11॥
श्राद्धे शरदः ॥12॥
विभाषा रोगातपयोः ॥13॥
निशाप्रदोषाभ्यां च ॥14॥
श्वसस्तुट् च ॥15॥
संधिवेलाद्यृतुनक्षत्रेभ्योऽण ॥16॥
प्रावृष एण्यः ॥17॥
वर्षाभ्यष्ठक् ॥18॥
छन्दसि ठञ् ॥19॥
वसन्ताच्च ॥20॥
हेमन्ताच्च ॥21॥
सर्वत्राण् च तलोपश्च ॥22॥
सायंचिरंप्राह्णेप्रगेऽव्ययेभ्यष्ट्युटयुलौ तुट् च ॥23॥
विभाषा पूर्वाह्णापराह्णाभ्याम् ॥24॥
तत्र जातः ॥25॥
प्रावृषष्ठप् ॥26॥
संज्ञायां शरदो वुञ् ॥27॥
पूर्वाह्णापराह्णार्दामूलप्रदोषावस्करात् वुन् ॥28॥
पथः पन्थ च ॥29॥
अमावास्याया वा ॥30॥
अ च ॥31॥
सिन्ध्वपकराभ्यां कन् ॥32॥
अणञौ च ॥33॥
श्रविष्ठाफल्गुन्यनुराधास्वातितिष्यपुनर्वसुहस्तविशाखाषाढाबहुलाल्लुक् ॥34॥
स्थानान्तगोशालखरशालाच्च ॥35॥
वत्सशालाभिजिदश्वयुक्शतभिषजो वा ॥36॥
नक्षत्रेभ्यो बहुलम् ॥37॥

क्रतलब्धक्रीतकुशलाः ॥38॥
प्रायभवः ॥39॥
उपजानूपकर्णोपनीवेष्ठक् ॥40॥
संभूते ॥41॥
कोशाड्ढञ् ॥42॥
कालात् साधुपुष्प्यत्पच्यमानेषु ॥43॥
उप्ते च ॥44॥
आश्वयुज्या वुञ् ॥45॥
ग्रीष्मवसन्तादन्यतरस्याम् ॥46॥
देयमृणे ॥47॥
कलाप्यश्वत्थयवबुसाद् वुन् ॥48॥
ग्रीष्मावरसमाद् वुञ् ॥49॥
संवत्सराग्रहायणीभ्यां ठञ् च ॥50॥
व्याहरति मृगः ॥51॥
तदस्य सोढम् ॥52॥
तत्र भवः ॥53॥
दिगादिभ्यो यत् ॥54॥
शरीरावयवाच्च ॥55॥
दृतिकुक्षिकलशिवस्त्यस्त्यहेर्ढञ् ॥56॥
ग्रीवाभ्योऽण च ॥57॥
गम्भीराञ्ञ्यः ॥58॥
अव्ययीभावाच्च ॥59॥
अन्तःपूर्वपदाट्ठञ् ॥60॥
ग्रामात् पर्यनुपूर्वात् ॥61॥
जिह्वामूलाङ्गुलेश्छः ॥62॥
वर्गान्ताच्च ॥63॥
अशब्दे यत्खावन्यतरस्याम् ॥64॥
कर्णललाटात् कनलंकारे ॥65॥
तस्य व्याख्यान इति च व्याख्यातव्यनाम्नः ॥66॥
बह्वचोऽन्तोदात्ताट्ठञ् ॥67॥
क्रतुयज्ञेभ्यश्च ॥68॥

अध्यायेष्वेवर्षेः ॥69॥

पौरोडाशपुरोडाशात् ष्ठन् ॥70॥

छन्दसो यदणौ ॥71॥

द्व्यजृद्ब्राह्मणर्क्प्रथमाध्वरपुरश्चरणनामाख्याताट्ठक् ॥72॥

अणृगयनादिभ्यः ॥73॥

तत आगतः ॥74॥

ठगायस्थानेभ्यः ॥75॥

शुण्डिकादिभ्योऽण् ॥76॥

विद्यायोनिसंबन्धेभ्यो वुञ् ॥77॥

ऋतष्ठञ् ॥78॥

पितुर्यच्च ॥79॥

गोत्रादङ्कवत् ॥80॥

हेतुमनुष्येभ्योऽन्यतरस्यां रूप्यः ॥81॥

मयट् च ॥82॥

प्रभवति ॥83॥

विदूराञ्ञ्यः ॥84॥

तद् गच्छति पथिदूतयोः ॥85॥

अभिनिष्क्रामति द्वारम् ॥86॥

अधिकृत्य कृते ग्रन्थे ॥87॥

शिशुक्रन्दयमसभद्वन्द्वेन्द्रजननादिभ्यश्छः ॥88॥

सोऽस्य निवासः ॥89॥

अभिजनश्च ॥90॥

आयुधजीविभ्यश्छः पर्वते ॥91॥

शण्डिकादिभ्यो ञ्यः ॥92॥

सिन्धुतक्षशिलादिभ्योऽणञौ ॥93॥

तूदीशलातुरवर्मतीकूचवाराड् ढक्छण्ढञ्यकः ॥94॥

भक्तिः ॥95॥

अचित्ताददेशकालाट्ठक् ॥96॥

महाराजाट्ठञ् ॥97॥

वासुदेवार्जुनाभ्यां वुन् ॥98॥

गोत्रक्षत्रियाख्येभ्यो जनपदवत् सर्वं जनपदेन बहुलं वुञ् ॥99॥

जनपदिनां समानशब्दनां बहुवचने ॥100॥

तेन प्रोक्तम् ॥101॥

तित्तिरिवरतन्तुखण्डिकोखाच्छण् ॥102॥

काश्यपकौशिकाभ्यामृषिभ्यां णिनिः ॥103॥

कलापिवैशम्पायनान्तेवासिभ्यश्च ॥104॥

पुराणप्रोक्तेषु ब्राह्मणकल्पेषु ॥105॥

शौनकादिभ्यश्छन्दसि ॥106॥

कठचरकाल्लुक् ॥107॥

कलापिनोऽण् ॥108॥

छगलिनो ढिनुक् ॥109॥

पाराशर्यशिलालिभ्यां भिक्षुनटसूत्रयोः ॥110॥

कर्मन्दकृशाश्वादिनिः ॥111॥

तेनैकदिक् ॥112॥

तसिश्च ॥113॥

उरसो यच्च ॥114॥

उपज्ञाते ॥115॥

कृते ग्रन्थे ॥116॥

संज्ञायाम् ॥117॥

कुलालादिभ्यो वुञ् ॥118॥

क्षुद्राभ्रमरवटरपादपादञ् ॥119॥

तस्येदम् ॥120॥

रथाद् यत् ॥121॥

पत्रपूर्वादञ् ॥122॥

पत्राध्वर्युपरिषदश्च ॥123॥

हलसीराट् ठक् ॥124॥

द्वन्द्वाद् वुन् वैरमैथुनिकयोः ॥125॥

गोत्रचरणाद् वुञ् ॥126॥

सङ्घाङ्कलक्षणेष्वञ्यञिञामण् ॥127॥

शकलाद्वा ॥128॥

छन्दोगौक्थिकयाज्ञिकबह्वृचनटाञ् ञ्यः ॥129॥

न दण्डमाणवान्तेवासिषु ॥130॥

अध्यायेष्वेवर्षेः ॥69॥
पौरोडाशपुरोडाशात् ष्ठन् ॥70॥
छन्दसो यदणौ ॥71॥
द्व्यजृद्ब्राणर्क प्रथमाध्वरपुरश्चरणनामाख्याताट् ठक् ॥72॥
अणगयनादिभ्यः ॥73॥
तत आगतः ॥74॥
ठगायस्थानेभ्यः ॥75॥
शुण्डिकादिभ्योऽण् ॥76॥
विद्यायोनिसंबन्धेभ्यो वुञ् ॥77॥
ऋतष्ठञ् ॥78॥
पितुर्यच्च ॥79॥
गोत्रादङ्कवत् ॥80॥
हेतुमनुष्येभ्योऽन्यतरस्यां रूप्यः ॥81॥
मयट् च ॥82॥
प्रभवति ॥83॥
विदूराञ्ञ्यः ॥84॥
तद् गच्छति पथिदूतयोः ॥85॥
अभिनिष्क्रामति द्वारम् ॥86॥
अधिकृत्य कृते ग्रन्थे ॥87॥
शिशुक्रन्दयमसभद्वन्द्वेन्द्रजननादिभ्यश्छः ॥88॥
सोऽस्य निवासः ॥89॥
अभिजनश्च ॥90॥
आयुधजीविभ्यश्छः पर्वते ॥91॥
शण्डिकादिभ्यो ञ्यः ॥92॥
सिन्धुतक्षशिलादिभ्योऽणञौ ॥93॥
तूदीशलातुरवर्मतीकूचवाराड् ढक्छण्ढञ्यकः ॥94॥
भक्तिः ॥95॥
अचित्तादेशकालाट् ठक् ॥96॥
महाराजाट् ठञ् ॥97॥
वासुदेवार्जुनाभ्यां वुन् ॥98॥
गोत्रक्षत्रियाख्येभ्यो जनपदवत् सर्वं जनपदेन बहुलं वुञ् ॥99॥

जनपदिनां समानशब्दनां बहुवचने ॥100॥
तेन प्रोक्तम् ॥101॥
तित्तिरिवरतन्तुखण्डिकोखाच्छण् ॥102॥
काश्यपकौशिकाभ्यामृषिभ्यां णिनिः ॥103॥
कलापिवैशम्पायनान्तेवासिभ्यश्च ॥104॥
पुराणप्रोक्तेषु ब्राह्मणकल्पेषु ॥105॥
शौनकादिभ्यश्छन्दसि ॥106॥
कठचरकाल्लुक् ॥107॥
कलापिनोऽण् ॥108॥
छगलिनो ढिनुक् ॥109॥
पाराशर्यशिलालिभ्यां भिक्षुनटसूत्रयोः ॥110॥
कर्मन्दकृशाश्वादिनिः ॥111॥
तेनैकदिक् ॥112॥
तसिश्च ॥113॥
उरसो यच्च ॥114॥
उपज्ञाते ॥115॥
कृते ग्रन्थे ॥116॥
संज्ञायाम् ॥117॥
कुलालादिभ्यो वुञ् ॥118॥
क्षुद्राभ्रमरवटरपादपादञ् ॥119॥
तस्येदम् ॥120॥
रथाद् यत् ॥121॥
पत्रपूर्वादञ् ॥122॥
पत्राध्वर्युपरिषदश्च ॥123॥
हलसीराट् ठक् ॥124॥
द्वन्द्वाद् वुन् वैरमैथुनिकयोः ॥125॥
गोत्रचरणाद् वुञ् ॥126॥
सङ्घाङ्कलक्षणेष्वञ्यञिञामण् ॥127॥
शकलाद्वा ॥128॥
छन्दोगौक्थिकयाज्ञिकबह्वृचनटाञ् ञ्यः ॥129॥
न दण्डमाणवान्तेवासिषु ॥130॥

रैवतिकादिभ्यश्छः ॥131॥

तस्य विकारः ॥132॥

अवयवे च प्राण्योषधिवृक्षेभ्यः ॥133॥

बिल्वादिभ्योऽण् ॥134॥

कोपधाच्च ॥135॥

त्रपुजतुनोः षुक् ॥136॥

ओरञ् ॥137॥

अनुदात्तादेश्च ॥138॥

पलाशादिभ्यो वा ॥139॥

शम्याष्ट्लञ् ॥140॥

मयड् वैतयोर्भाषायामभक्ष्याच्छादनयोः ॥141॥

नित्यं वृद्धशरादिभ्यः ॥142॥

गोश्च पुरीषे ॥143॥

पिष्टाच्च ॥144॥

संज्ञायाम् कन् ॥145॥

व्रीहेः पुरोडाशे ॥146॥

असंज्ञायां तिलयवाभ्याम् ॥147॥

द्व्यचश्छन्दसि ॥148॥

नोत्वद्वर्ध्र बिल्वात् ॥149॥

तालादिभ्योऽण् ॥150॥

जातरूपेभ्यः परिमाणे ॥151॥

प्राणिरजतादिभ्योऽञ् ॥152॥

ञितश्च तत्प्रत्ययात् ॥153॥

क्रीतवत् परिमाणात् ॥154॥

उष्ट्राद् वुञ् ॥155॥

उमोर्णयोर्वा ॥156॥

एण्या ढञ् ॥157॥

गोपयसोर्यत् ॥158॥

द्रोश्च ॥159॥

माने वयः ॥160॥

फले लुक् ॥161॥

प्लक्षादिभ्योऽण् ॥162॥
जम्ब्वा वा ॥163॥
लुप च ॥164॥
हरीतक्यादिभ्यश्च ॥165॥
कंसीयपरशव्ययोर्यञञौ लुक् च ॥166॥

चतुर्थः पादः

प्राग्वहतेष्ठक् ॥1॥
तेन दीव्यति खनति जयति जितम् ॥2॥
संस्कृतम् ॥3॥
कुलत्थकोधादण् ॥4॥
तरति ॥5॥
गोपुच्छाट्ठञ् ॥6॥
नौद्व्यचष्ठन् ॥7॥
चरति ॥8॥
आकर्षात् ष्ठल् ॥9॥
पर्पादिभ्यः ष्ठन् ॥10॥
श्वगणाट्ठञ् च ॥11॥
वेतनादिभ्यो जीवति ॥12॥
वस्नक्रयविक्रयाट्ठन् ॥13॥
आयुधाच्छ च ॥14॥
हरयुत्सङ्गादिभ्यः ॥15॥
भस्त्रादिभ्यः ष्ठन् ॥16॥
विभाषा विवधात् ॥17॥
अण कुटिलिकायाः ॥18॥
निर्वृत्तेऽक्षद्यूतादिभ्यः ॥19॥
क्त्रेर्मम्नित्यम् ॥2॥
अपमित्ययाचिताभ्यां कक्कनौ ॥21॥
संसृष्टे ॥22॥
चूर्णादिनिः ॥23॥
लवणाल्लुक ॥24॥
मृद्गादण् ॥25॥

व्यञ्जनैरुपसिक्ते ॥26॥
ओजः सहोम्भसा वर्तते ॥27॥
तत्प्रत्यनुपूर्वमीपलोमकूलम् ॥28॥
परिमुखं च ॥29॥
प्रयच्छति गर्ह्यम् ॥30॥
कुसीददशैकादशात् ष्ठन्ष्ठचौ ॥31॥
उञ्छति ॥32॥
रक्षति ॥33॥
शब्ददर्दुरं करोति ॥34॥
पक्षिमत्स्यमृगान् हन्ति ॥35॥
परिपन्थं च तिष्ठति ॥36॥
माथोत्तरपदपदव्यनुपदं धावति ॥37॥
आक्रन्दाट्ठञ् च ॥38॥
पदोत्तरपदं गृह्णाति ॥39॥
प्रतिकण्ठार्थललामं च ॥40॥
धर्मं चरति ॥41॥
प्रतिपथमेति ठंश्च ॥42॥
समवायान् समवैति ॥43॥
परिषदो ण्यः ॥44॥
सेनाया वा ॥45॥
संज्ञायां ललाटकुक्कुट्यौ पश्यति ॥46॥
तस्य धर्म्यम् ॥47॥
अण् महिष्यादिभ्यः ॥48॥
ऋतोऽञ् ॥49॥
अवक्रय ॥50॥
तदस्य पण्यम् ॥51॥
लवणाट् ठञ् ॥52॥
किशरादिभ्यः ष्ठन् ॥53॥
शलालुनोऽन्यतरस्याम् ॥54॥
शिल्पम् ॥55॥
मड्डुकझर्झरादणन्यतरस्याम् ॥56॥

प्रहरणम् ॥57॥

परश्वधाट्ठञ् च ॥58॥

शक्तियष्ट्योरीकक् ॥59॥

अस्तिनास्तिदिष्टं मतिः ॥60॥

शीलम् ॥61॥

छत्रादिभ्यो णः ॥62॥

कर्माध्ययने वृत्तम् ॥63॥

बह्वच्पूर्वपदाट् ठच् ॥64॥

हितं भक्षाः ॥65॥

तदस्मै दीयते नियुक्तम् ॥66॥

श्राणामांसौदनाट् टिठन् ॥67॥

भक्तादणन्यतरस्याम् ॥68॥

तत्र नियुक्तः ॥69॥

अगारान्ताट् ठन् ॥70॥

अध्यायिन्यदेशकालात् ॥71॥

कठिनान्तप्रस्तारसंस्थानेषु व्यवहरति ॥72॥

निकटे वसति ॥73॥

आवसथात् ष्ठल् ॥74॥

प्राग्घिताद् यत् ॥75॥

तद् वहति रथयुगप्रासङ्गम् ॥76॥

धुरो यड्ढकौ ॥77॥

खः सर्वधुरात् ॥78॥

एकधुराल्लुक् च ॥79॥

शकटादण् ॥80॥

हलसीराट् ठक् ॥81॥

संज्ञायां जन्याः ॥82॥

विध्यत्यधनुषा ॥83॥

धनगणं लब्धा ॥84॥

अन्नाण्णः ॥85॥

वशं गतः ॥86॥

पदमस्मिन् दृश्यम् ॥87॥

मूलमस्यावर्हि ॥88॥
संज्ञायां धेनुष्या ॥89॥
गृहपतिना संयुक्ते ञ्यः ॥90॥
नौवयोधर्मविषमूलमूलसीतातुलाभ्यस्तार्यतुल्यप्राप्यवध्यानाम्यसमसमितसंमितेषु ॥91॥
धर्मपथ्यर्थन्यायादनपेते ॥92॥
छन्दसो निर्मिते ॥93॥
उरसोऽण् च ॥94॥
हृदयस्य प्रियः ॥95॥
बन्धने चर्षौ ॥96॥
मतजनहलात् करणजल्पकर्षेषु ॥97॥
तत्र साधुः ॥98॥
प्रतिजनादिभ्यः खञ ॥99॥
भक्ताण्णः ॥100॥
परिषदो ण्यः ॥101॥
कथादिभ्यष्ठक् ॥102॥
गुडादिभ्यष्ठञ् ॥103॥
पथ्यतिथिवसतिस्वपतेर्ढञ् ॥104॥
सभाया यः ॥105॥
ढश्छन्दसि ॥106॥
समानतीर्थे वासी ॥107॥
समानोदरे शयित ओ चोदात्तः ॥108॥
सोदराद् यः ॥109॥
भवे छन्दसि ॥110॥
पाथोनदीभ्यां ड्यण ॥111॥
वेशन्तहिमवद्भ्यामण् ॥112॥
स्रोतसो विभाषा ड्यड्ड्यौ ॥113॥
सगर्भसयूथसनुताद् यन् ॥114॥
तुग्राद् घन् ॥115॥
अग्राद् यत् ॥116॥
घच्छौ च ॥117॥
समुद्राभ्राद् घः ॥118॥

बर्हिषि दत्तम् ॥119॥
दूतस्य भागकर्मणी ॥120॥
रक्षोयातूनां हननी ॥121॥
रेवतीजगतीहविष्याभ्यः प्रशस्ये ॥122॥
असुरस्य स्वम् ॥123॥
मायायामण् ॥124॥
तद्वानासामुपधानो मन्त्र इतीष्टकासु लुक् च मतोः ॥125॥
अश्विमानण् ॥126॥
वयस्यासु मूर्ध्नो मतुप् ॥127॥
मत्वर्थे मासतन्वोः ॥128॥
मधोर्ञ च ॥129॥
ओजसोऽहनि यत्खौ ॥130॥
वेशोयशआदेर्भगाद् यल् ॥131॥
ख च ॥132॥
पूर्वैः कृतमिनयौ च ॥133॥
अद्भिः संस्कृतम् ॥134॥
सहस्रेण संमितौ घः ॥135॥
मतौ च ॥136॥
सोममर्हति यः ॥137॥
मये च ॥138॥
मधोः ॥139॥
वसोः समूहे च ॥140॥
नक्षत्राद् घः ॥141॥
सर्वदेवात् तातिल् ॥142॥
शिवशमरिष्टस्य करे ॥143॥
भावे च ॥144॥

पञ्चमोऽध्यायः

प्रथमः पादः

प्राक् क्रीताच्छः ॥1॥
उगवादिभ्यो यत् ॥2॥
कम्बलाच्च संज्ञायाम् ॥3॥
विभाषा हविरपूपादिभ्यः ॥4॥
तस्मै हितम् ॥5॥
शरीराचयवाद् यत् ॥6॥
खलयवमाषतिलवृषब्रह्मणश्च ॥7॥
अजाविभ्यां थ्यन् ॥8॥
आत्मन्विश्वजनभोगोत्तरपदात् खः ॥9॥
सर्वपुरुषाभ्यां णढञौ ॥10॥
माणवचरकाभ्यां खञ् ॥11॥
तदर्थं विकृतेः प्रकृतौ ॥12॥
छदिरूपधिबलेर्ढञ् ॥13॥
ऋषभोपानहोर्ञ्यः ॥14॥
चर्मणोऽञ् ॥15॥
तदस्य तदस्मिन् स्यादिति ॥16॥
परिखाया ढञ् ॥17॥
प्राग्वतेष्ठञ् ॥18॥
आर्हादगोपुच्छसंख्यापरिमाणाट्ठक् ॥19॥
असमासे निष्कादिभ्यः ॥20॥
शताच्च ठन्यतावशते ॥21॥

संख्याया अतिशदन्तायाः कन् ॥22॥
वतोरिड् वा ॥23॥
विंशतित्रिंशद्भ्यां ड्वुन्नसंज्ञायाम् ॥24॥
कंसाट्टिठन् ॥25॥
शूर्पादञन्यतरस्याम् ॥26॥
शतमानविंशतिकसहस्रवसनादण् ॥27॥
अध्यर्धपूर्वद्विगोर्लुगसंज्ञायाम् ॥28॥
विभाषा कार्षापणसहस्राभ्याम् ॥29॥
द्वित्रिपूर्वान्निष्कात् ॥30॥
बिस्ताच्च ॥31॥
विंशतिकात् खः ॥32॥
खार्या ईकन् ॥33॥
पणपादमाषशताद् यत् ॥34॥
शाणाद् वा ॥35॥
तेन क्रीतम् ॥36॥
तस्य निमित्तं संयोगोत्पातौ ॥37॥
गोद्व्यचोऽसंख्यापरिमाणाश्वादेर्यत् ॥38॥
पुत्राच्छ च ॥39॥
सर्वभूमिपृथिवीभ्यामणञौ ॥40॥
तस्येश्वरः ॥41॥
तत्र विदित इति च ॥42॥
लोकसर्वलोकाट् ठञ् ॥43॥
तस्य वापः ॥44॥
पात्रात् ष्ठन् ॥45॥
तदस्मिन् वृद्ध्यायलाभशुल्कोपदा दीयते ॥46॥
पूरणार्धाट् ठन् ॥47॥
भागाद् यच्च ॥48॥
तद्धरति वहत्यावहति भाराद् वंशादिभ्यः ॥49॥
वस्नद्रव्याभ्यां ठन्कनौ ॥50॥
संभवत्यवहरति पचति ॥51॥
आढकाचितपात्रात् खोऽन्यतरस्याम् ॥52॥

द्विगोष्ठंश्च ॥53॥
कुलिजाल्लुक्खौ च ॥54॥
सोऽस्यांशवस्नभृतयः ॥55॥
तदस्य परिमाणम् ॥56॥
संख्यायाः संज्ञासङ्घसूत्राध्ययनेषु ॥57॥
पङ्क्तिविंशतित्रिंशच्चत्वारिंरशत्पञ्चाशत्षष्टिसप्तत्यशीतिनवतिशतम् ॥58॥
पञ्चद्दशतौ वर्गे वा ॥59॥
सप्तनोऽञ् छन्दसि ॥60॥
त्रिंशच्चत्वरिंशतोब्रहिह्मणे संज्ञायां डण ॥61॥
तदर्हति ॥62॥
छेदादिभ्यो नित्यम् ॥63॥
शीर्षच्छेदाद् यच्च ॥64॥
दण्डादिभ्यो यत् ॥65॥
छन्दसि च ॥66॥
पात्राद् घंश्च ॥67॥
कडङ्करदक्षिणाच्छ च ॥68॥
स्थालीबिलात् ॥69॥
यज्ञर्त्विग्भ्यां धखञौ ॥70॥
पारायणतुरायणचान्द्रायणं वर्त्तयति ॥71॥
संशयमापन्नः ॥72॥
योजनं गच्छति ॥73॥
पथः ष्कन् ॥74॥
पन्थो ण नित्यम् ॥75॥
उत्तरपथेनाहृतं च ॥76॥
कालात् ॥77॥
तेन निर्वृत्तम् ॥78॥
तमधीष्टो भृतो भृतो भावी ॥79॥
मासाद् क्यासि यत्खञौ ॥80॥
द्विगोर्यप् ॥81॥
षण्मासाण्ण्यच्च ॥82॥
अवयसि ठंश्च ॥83॥

ममायाः खः ॥84॥
द्विगोर्वा ॥85॥
रात्र्यहःसंवत्सराच्च ॥86॥
वर्षाल्लुक् च ॥87॥
चित्तवति नित्यम् ॥88॥
षष्टिकाः षष्टिरात्रेण पच्यन्ते ॥89॥
वत्सरान्ताच्छश्छन्दसि ॥90॥
संपरिपूर्वात् ख च ॥91॥
तेन परिजय्यलभ्यकार्यसुकरम् ॥92॥
तदस्य ब्रह्मचर्यम् ॥93॥
तस्य च दक्षिणा यज्ञाख्येभ्यः ॥94॥
तत्र च दीयते कार्यं भववत् ॥95॥
व्युष्टादिभ्योऽण् ॥96॥
तेन यथाकथाचहस्ताभ्यां णयतौ ॥97॥
संपादिनि ॥98॥
कर्मवेषाद् यत् ॥99॥
तस्मै प्रभवति संतापादिभ्यः ॥100॥
योगाद् यच्च ॥101॥
कर्मण उकञ् ॥102॥
समयस्तदस्य प्राप्तम् ॥103॥
ऋतोरण् ॥104॥
छन्दसि घस् ॥105॥
कालाद् यत् ॥106॥
प्रकृष्टे ठञ् ॥107॥
प्रयोजनम् ॥108॥
विशाखाषाढादण मन्थदण्डयोः ॥109॥
अनुप्रवचनादिभ्यश्छः ॥110॥
समापनात् सपूर्वपदात् ॥111॥
ऐकागारिकट् चौरे ॥112॥
आकालिकडाद्यन्तवचने ॥113॥
तेन तुल्यं क्रिया चेद् वतिः ॥114॥

तत्र तस्येव ॥115॥
तदर्हम् ॥116॥
उपसर्गाच्छन्दसि धात्वर्थे ॥117॥
तस्य भावस्त्वतलौ ॥118॥
आ च त्वात् ॥119॥
न नञ्पूर्वात् तत्पुरुषादचतुरसंगतलवणवटयुधकतरसलसेभ्यः ॥120॥
पृथ्वादिभ्य इमनिज् वा ॥121॥
वर्णदृढादिभ्यः ष्यञ् च ॥122॥
गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च ॥123॥
स्तेनाद् यन् नलोपश्च ॥124॥
सख्युर्यः ॥125॥
कपिज्ञात्योर्ढक् ॥126॥
पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक् ॥127॥
प्राणभृज्जातिवयोवचनोद्गात्रादिभ्योऽञ् ॥128॥
हायनान्तयुवादिभ्योऽण ॥129॥
इगन्ताच्च लघुपूर्वात् ॥130॥
योपधाद् गुरूपोत्तमाद् वुञ् ॥131॥
द्वन्द्वमनोज्ञादिभ्यश्च ॥132॥
गोत्रचरणाच्छलाघात्याकारतदवेतेषु ॥133॥
होत्राभ्यश्छः ॥134॥
ब्रह्मणस्त्वः ॥135॥

द्वितीयः पादः

धान्यानां भवने क्षेत्रे खञ् ॥1॥
व्रीहिशाल्योर्ढक् ॥2॥
यवयवकषष्टिकाद् यत् ॥3॥
विभाषा तिलमाषोमाभङ्गाऽणुभ्यः ॥4॥
सर्वचर्मणः कृतः खखञौ ॥5॥
यथामुखसंमुखस्य दर्शनः खः ॥6॥
तत्सर्वादेः पथ्यङ्गकर्मपत्रपात्रं व्याप्नोति ॥7॥
आप्रपदं प्राप्नोति ॥8॥
अनुपदसर्वान्नायानयं बद्धाभक्षयतिनेयेषु ॥9॥

परोवरपरंपरपुत्रपौत्रमनुभवति ॥10॥
अवारपारात्यन्तानुकामं गामी ॥11॥
समांसमां विजायते ॥12॥
अद्यश्वीनावष्टब्धे ॥13॥
आगवीनः ॥14॥
अनुग्वलंगामी ॥15॥
अध्वनो यत्खौ ॥16॥
अभ्यमित्राच्छ च ॥17॥
गोष्ठात् खञ् भूतपूर्वे ॥18॥
अश्वस्यैकाहगमः ॥19॥
शालीनकौपीने अधृष्टाकार्ययोः ॥20॥
व्रातेन जीवति ॥21॥
साप्तपदीनं सख्यम् ॥22॥
हैयङ्गवीनं संज्ञायाम् ॥23॥
तस्य पाकमूले पील्वादिकर्णादिभ्यः कुणब्जाहचौ ॥24॥
पक्षात् तिः ॥25॥
तेन वित्तश्चुञ्चुप्चणपौ ॥26॥
विनञ्भ्यां नानाञौ न सह ॥27॥
वेः शालच्छङ्कटचौ ॥28॥
संप्रोदश्च कटच् ॥29॥
अवात् कुटारच्च ॥30॥
नते नासिकायाः संज्ञायां टीटञ्नाटज्भ्रटचः ॥31॥
नेर्बिडज्बिरीसचौ ॥32॥
इनच्पिटच्चिकचि च ॥33॥
उपाधिभ्यां त्यकन्नासन्नारूढयोः ॥34॥
कर्मणि घटोऽठच् ॥35॥
तदस्य संज्ञातं तारकादिभ्य इतच् ॥36॥
प्रमाणे द्वयसज्दघ्नञ्मात्रचः ॥37॥
पुरुषहस्तिभ्यामण् च ॥38॥
यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप् ॥39॥
किमिदंभ्यां वो घः ॥40॥

किमः संख्यापरिमाणे डति च ॥41॥

संख्याया अवयवे तयप् ॥42॥

द्वित्रिभ्यां तयस्यायज् वा ॥43॥

उभादुदात्तो नित्यम् ॥44॥

तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ताड्‌ डः ॥45॥

शदन्तविंशतेश्च ॥46॥

संख्याया गुणस्य निमाने मयट् ॥47॥

तस्य पूरणे डट् ॥48॥

नान्तादसंख्यादेर्मट् ॥49॥

थट् च छन्दसि ॥50॥

षट्कतिकतिपयचतुरां थुक् ॥51॥

बहुपूगगणसङ्घस्य तिथुक् ॥52॥

वतोरिथुक् ॥53॥

द्वेस्तीयः ॥54॥

त्रेः संप्रसारणं च ॥55॥

विंशत्यादिभ्यस्तमडन्यतरस्याम् ॥56॥

नित्यं शतादिमासार्धमाससंवत्सराच्च ॥57॥

षष्ट्यादेश्चासंख्यादेः ॥58॥

मतौ छः सूक्तसाम्नोः ॥59॥

अध्यायानुवाकयोर्लुक् ॥60॥

विमुक्तादिभ्योऽण् ॥61॥

गोषदादिभ्यो वुन् ॥62॥

तत्र कुशलः पथः ॥63॥

आकर्षादिभ्यः कन् ॥64॥

धनहिरण्यात् कामे ॥65॥

स्वाङ्गेभ्यः प्रसिते ॥66॥

उदराट् ठगाद्यूने ॥67॥

सस्येन परिजातः ॥68॥

अंशं हारी ॥69॥

तन्त्रादचिरापहृते ॥70॥

ब्राह्मणकोष्णिके संज्ञायाम् ॥71॥

शोताण्णाभ्यां कारिणि ॥72॥
अधिकम् ॥73॥
अनुकाभिकाभीकः कमिता ॥74॥
पार्श्वेनाऽन्विच्छति ॥75॥
अयःशूलदण्डाजिनाभ्यां ठक्ठञौ ॥76॥
तावतिथं ग्रहणमिति लुग् वा ॥77॥
स एषां ग्रामणीः ॥78॥
शृङ्खलमस्य बन्धनं करभे ॥79॥
उत्क उन्मनाः ॥80॥
कालप्रयोजनाद् रोगे ॥81॥
तदस्मिन्नन्नंप्राये संज्ञायाम् ॥82॥
कुल्माषादञ् ॥83॥
श्रोत्रियंश्छन्दोऽधीते ॥84॥
श्राद्धमनेन भुक्तमिनिठनौ ॥85॥
पूर्वादिनिः ॥86॥
सपूर्वाच्च ॥87॥
इष्टादिभ्यश्च ॥88॥
छन्दसि परिपन्थिपरिपरिणौ पर्यवस्थातरि ॥89॥
अनुपद्यन्वेष्टा ॥90॥
साक्षाद् द्रष्टरि संज्ञायाम् ॥91॥
क्षेत्रियच् परक्षेत्रे चिकित्स्यः ॥92॥
इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गमिन्द्रदृष्टमिन्द्रसृष्टमिन्द्रजुष्टमिन्द्रदत्तमिति वा ॥93॥
तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् ॥94॥
रसादिभ्यश्च ॥95॥
प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्याम् ॥96॥
सिध्मादिभ्यश्च ॥97॥
वत्सांसाभ्यां कामवले ॥98॥
फेनादिलच्च ॥99॥
लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यः शनेलचः ॥10॥
प्रज्ञाश्रद्धार्चाभ्यो णः ॥101॥
तपःसहस्राभ्यां विनीनी ॥102॥

अण च ॥103॥

सिकताशर्कराभ्यां च ॥104॥

देशे लुबिलचौ च ॥105॥

दन्त उन्नत उरच् ॥106॥

ऊपसुषिमुष्कमधो रः ॥107॥

द्युद्रुभ्यां मः ॥108॥

केशाद् वोऽन्यतरस्याम् ॥109॥

नाण्ड्यजगात् संज्ञायाम् ॥110॥

काण्डाण्डादीरन्नीरचौ ॥111॥

रजःकृष्यासुतिपरिषदोवलच् ॥112॥

दन्तशिखात् संज्ञायाम् ॥113॥

ज्योत्स्नातमिस्राशृङ्गिणोर्जस्विन्नूर्जस्वलगोमिन्मलिनमलीमसाः ॥114॥

अत इनिठनौ ॥115॥

व्रीह्यादिभ्यश्च ॥116॥

तुन्दादिभ्य इलच्च ॥117॥

एकगोपूर्वाट् ठञ् नित्यम् ॥118॥

शतसहस्रान्ताच्च निष्कात् ॥119॥

रूपादाहतप्रशंसयोर्यप् ॥120॥

अस्मायामेधास्रजो विनिः ॥121॥

बहुलं छन्दसि ॥122॥

ऊर्णाया युस् ॥123॥

वाचो ग्मिनिः ॥124॥

आलजाटचौ बहुभाषिणि ॥125॥

स्वामिन्नैश्वर्ये ॥126॥

अर्शआदिभ्योऽच् ॥127॥

द्वन्द्वोपतापगर्ह्यात् प्राणिस्थादिनिः ॥128॥

बातातीसाराभ्यां कुक् च ॥129॥

वयसि पूरणात् ॥130॥

सुखादिभ्यश्च ॥131॥

धर्मशीलवर्णान्ताच्च ॥132॥

हस्ताज्जातौ ॥133॥

वर्णाद् ब्रह्मचारिणि ॥134॥

पुष्करादिभ्यो देशे ॥135॥

बलादिभ्यो मतुबन्यतरस्याम् ॥136॥

संज्ञायां मन्माभ्याम् ॥137॥

कंशंभ्यां बभयुस्तितुतयसः ॥13॥

तुन्दिबलिवटेर्भः ॥139॥

अहंशुभमोर्युस् ॥140॥

तृतीयः पादः

प्राम दिशो विभक्तिः ॥1॥

किंसर्वनामबहुभ्योऽद्व्यादिभ्यः ॥2॥

इदम इश् ॥3॥

एतेतौ रथोः ॥4॥

एतदोऽन् ॥5॥

सर्वस्य सोऽन्यतरस्यां दि ॥6॥

पञ्चम्यास्तसिल् ॥7॥

तसेश्च ॥8॥

पर्यभिभ्यां च ॥9॥

सप्तम्यास्त्रल ॥10॥

इदमो हः ॥11॥

किमाऽत् ॥12॥

वा ह च च्छन्दसि ॥13॥

इतराभ्योऽपि दृश्यन्ते ॥14॥

सर्वैकान्यकिंयत्तदः काले दा ॥15॥

इदमोर्हिल् ॥16॥

अधुना ॥17॥

दानीं च ॥18॥

तदो दा च ॥19॥

तयोर्दार्हिलौ च च्छन्दसि ॥20॥

अनद्यतने र्हिलन्तरस्याम् ॥21॥

सद्यः परुत्परार्यैषमः परेद्यव्यद्यपूर्वेद्युरन्येद्युरन्यतरेद्युरितरेद्युरपरेद्यु रधरेद्यु रुभयद्य रुत्तरेद्युः ॥22॥

प्रकारवचने थाल् ॥23॥
इदमस्थमुः ॥24॥
किमश्च ॥25॥
था हेतौ च च्छन्दसि ॥26॥
दिक्शब्देभ्यः सप्तमीपञ्चमीप्रथमाभ्यो दिग्देशकालेष्वस्तातिः ॥27॥
दक्षिणोत्तराभ्यामतसुच् ॥28॥
विभाषा परावराभ्याम् ॥29॥
अञ्चेर्लुक् ॥30॥
उपर्युपरिष्टात् ॥31॥
पश्चात् ॥32॥
पश्च पश्चा च च्छन्दसि ॥33॥
उत्तराधरदक्षिणादातिः ॥34॥
एनबन्यतरस्यामदूरेऽपञ्चम्याः ॥35॥
दक्षिणादाच् ॥36॥
आहि च दूरे ॥37॥
उत्तराच्च ॥38॥
पूर्वाधरावराणामसि पुरधवश्चैषाम् ॥39॥
अस्ताति च ॥40॥
विभाषाऽवरस्य ॥41॥
संख्याया विधार्थे धा ॥42॥
अधिकरणविचाले च ॥43॥
एकाद्धो ध्यमुञन्यतरस्याम् ॥44॥
द्वित्र्योश्च धमुञ् ॥45॥
एधाच्च ॥46॥
याप्ये पाशप् ॥47॥
पूरणाद् भागे तीयादन् ॥48॥
प्रागेकादशभ्योऽच्छन्दसि ॥49॥
षष्ठाष्टमाभ्यां ञ च ॥50॥
मानपश्वङ्गयोः कन्लुकौ च ॥51॥
एकादाकिनिच्चासहाये ॥52॥
भूतपूर्वे चरट् ॥53॥

षष्ठ्या रूप्य च ॥54॥
अतिशायने तमबिष्ठनौ ॥55॥
तिङश्च ॥56॥
द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुनौ ॥57॥
अजादी गुणवचनादेव ॥58॥
तुश्छन्दसि ॥59॥
प्रशस्यस्य श्रः ॥60॥
ज्य च ॥61॥
वृद्धस्य च ॥62॥
अन्तिकबाढयोर्नेदसाधौ ॥63॥
युवाल्पयोः कनन्यतरस्याम् ॥64॥
विन्मतोर्लुक् ॥65॥
प्रशंसायां रूपप् ॥66॥
ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः ॥67॥
विभाषा सुपो बहुच् पुरस्तात्तु ॥68॥
प्रकारवचने जातीयर् ॥69॥
प्रागिवात् कः ॥70॥
अव्ययसर्वनाम्नामकच् प्राक टेः ॥71॥
कस्य च दः ॥72॥
अज्ञाते ॥73॥
कुत्सिते ॥74॥
संज्ञायां कन् ॥75॥
अनुकम्पायाम् ॥76॥
नीतौ च तद्युक्तात् ॥77॥
बह्वचो मनुष्यनाम्नष्ठज् वा ॥78॥
घनिलचौ च ॥79॥
प्राचामुपादेरडज्वुचौ च ॥80॥
जातिनाम्नः कन् ॥81॥
अजिनान्तस्योत्तरपदलोपश्च ॥82॥
ठाजादावूर्ध्वं द्वितीयादचः ॥83॥
शेवलसुपरिविशालवरुणार्यमादीनां तृतीयात् ॥84॥

अल्पे ॥८५॥

ह्रस्वे ॥८६॥

संज्ञायां कन् ॥87॥

कुटीशमीशुण्डाभ्यो रः ॥88॥

कुत्वा डुपच् ॥89॥

कासूगोणीभ्यां ष्टरच् ॥90॥

वत्सोक्षाश्वर्षभेभ्यश्च तनुत्वे ॥91॥

किंयत्तदो निर्धारणे द्वयोरेकस्य डतरच् ॥92॥

वा बहूनां जातिपरिप्रश्ने डतमच् ॥93॥

एकाच्च प्राचाम् ॥94॥

अवक्षेपणे कन् ॥95॥

इवे प्रतिकृतौ ॥96॥

संज्ञायां च ॥97॥

लुम्मनुष्ये ॥98॥

जीविकार्थे चापण्ये ॥99॥

देवपथादिभ्यश्च ॥100॥

वस्तेर्ढञ् ॥101॥

शिलाया ढः ॥102॥

शाखादिभ्यो यत् ॥103॥

द्रव्यं च भव्ये ॥104॥

कुशाग्राच्छः ॥105॥

समासाच्च तद्विषयात् ॥106॥

शर्करादिभ्योऽण् ॥107॥

अङ्गुल्यादिभ्यष्ठक् ॥108॥

एकशालायाष्ठजन्यतरस्याम् ॥109॥

कर्कलोहितादीकक् ॥110॥

प्रत्नपूर्वविश्वेमात्थाल्छन्दसि ॥111॥

पूगाञ्ञ्योऽग्रामणीपूर्वात् ॥112॥

व्रातच्फञोरस्त्रियाम् ॥113॥

आयुधजीविसंघाञ्ञ्यड् वाहीकेष्वब्राह्मणराजन्यात् ॥114॥

वृकाट्टेण्यण् ॥115॥

दामन्यादित्रिगर्तषष्ठाच्छः ॥116॥

पर्श्वादियौधेयादिभ्योऽणञौ ॥117॥

अभिजिद्विदभृच्छालावच्छिखावच्छमीवदूर्णावच्छ्रमदणो यञ् ॥118॥

ञ्यादयस्तद्राजाः ॥119॥

चतुर्थः पादः

पादशतस्य संख्यादेर्वीप्सायां वुन् लोपश्च ॥1॥

दण्डव्यवसर्गयोश्च ॥2॥

स्थूलादिभ्यः प्रकारवचने कन् ॥3॥

अनत्यन्तगतौ क्तात् ॥4॥

न सामिवचने ॥5॥

बृहत्या आच्छादने ॥6॥

अषडक्षाशितंग्वलंकर्मालंपुरुषाध्युत्तरपदात् खः ॥7॥

विभाषाऽञ्चेरदिक्स्त्रियाम् ॥8॥

जात्यान्ताच्छ बन्धुनि ॥9॥

स्थानान्ताद् विभाषा सस्थानेनेति चेत् ॥10॥

किमेत्तिङव्ययघादाम्वद्रव्यप्रकर्षे ॥11॥

अमु च च्छन्दसि ॥12॥

अनुगादिनष्ठक् ॥13॥

णचः स्त्रियामञ् ॥14॥

अणिनुणः ॥15॥

विसारिणो मत्स्ये ॥16॥

संख्यायाः क्रियाभ्यावृत्तिगणने कृत्वसुच् ॥17॥

द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच् ॥18॥

एकस्य सकृच्च ॥19॥

विभाषाबहोर्धाऽविप्रकृष्टकाले ॥20॥

तत्प्रकृतवचने मयट् ॥21॥

समूहवच्च बहुषु ॥22॥

अनन्तावसथेतिहभेषजाञ्ञ्यः ॥23॥

देवतान्तात्तादर्थ्ये यत् ॥24॥

पादार्घाभ्यां च ॥25॥

अतिथेर्ञ्यः ॥26॥

देवान्तल् ॥27॥
अवे: क: ॥28॥
यावादिभ्यः कन् ॥29॥
लोहितान्मणौ ॥30॥
वर्णे चानित्ये ॥31॥
रक्ते ॥32॥
कालाच्च ॥33॥
विनयादिभ्यष्ठक् ॥34॥
वाचो व्याहृतार्थायाम् ॥35॥
तद्यु क्तात् कर्मणोऽण् ॥36॥
ओषधेरजातौ ॥37॥
प्रज्ञादिभ्यश्च ॥38॥
मृदस्तिकन् ॥39॥
सस्नौ प्रशंसायाम् ॥40॥
वृकज्येष्ठाभ्यां तिल्तातिलौ च च्छन्दसि ॥41॥
बह्वल्पार्थाच्छस्कारकादन्यतरस्याम् ॥42॥
संख्यैकवचनाच्च वीप्सायाम् ॥43॥
प्रतियोगे पञ्चम्यास्तसिः ॥44॥
अपादाने चाऽहीयरुहोः ॥45॥
अतिग्रहाव्यथनक्षेपेष्वकर्तरि तृतीयायाः ॥46॥
हीयमानपापयोगाच्च ॥47॥
षष्ठ्या वयाश्रये ॥48॥
रोगाच्चाऽपनयने ॥49॥
कृभ्वस्तियोगे संपद्यकर्तरि च्विः ॥50॥
अरुर्मनश्चक्षश्चेतोरहोरजसां लोपश्च ॥51॥
विभाषा साति कार्त्स्न्ये ॥52॥
अभिविधौ संपदा च ॥53॥
तदधीनवचने ॥54॥
देये त्रा च ॥55॥
देवमनुष्यपुरुषपुरुमर्त्येभ्यो द्वितीयासप्तम्योर्बहुलम् ॥56॥
अव्यक्तानुकरणाद् द्व्यजवरार्धादनितौ डाच् ॥57॥

कृत्वो द्वितीयतृतीयशम्बबीजात् कृषौ ॥58॥
संख्यायाश्च गुणान्तायाः ॥59॥
समयाच्च यापनायाम् ॥60॥
सपत्रनिष्पत्रादतिव्यथने ॥61॥
निष्कुलान्निष्कोषणे ॥62॥
सुखप्रियादानुलोम्ये ॥63॥
दुःखात् प्रातिलोम्ये ॥64॥
शूलात् पाके ॥65॥
सत्यादशपथे ॥66॥
मद्रात् परिवापणे ॥67॥
समासान्ताः ॥68॥
न पूजनात् ॥69॥
किमः क्षेपे ॥70॥
नञस्तत्पुरुषात् ॥71॥
पथो विभाषा ॥72॥
बहुव्रीहौ संख्येये डजबहुगणात् ॥73॥
ऋक्पूरब्धूःपथामानक्षे ॥74॥
अच् प्रत्यन्ववपूर्वात् सामलोम्नः ॥75॥
अक्ष्णोऽदर्शनात् ॥76॥
अचतुरविचतुरसुचतुरस्त्रीपुंसधेन्वनडुहर्क्सामवाङ्मनसाक्षि भ्रुवदारगवोर्वष्ठीवपदष्ठीवनक्तंदिवरात्रिंदिवाहर्दिवसरजसनिःश्रेयसपुरुषायुषद्व्यायुषत्र्यायुषर्ग्यजुषजातोक्षमहोक्षवृद्धोक्षोपशुनगोष्ठश्वाः ॥77॥
ब्रह्महस्तिभ्यां वर्चसः ॥78॥
अवसमन्धेभ्यस्तमसः ॥79॥
श्वसोवसीयःश्रेयसः ॥80॥
अन्ववतप्ताद्रहसः ॥81॥
प्रतेरुरसः सप्तमीस्थात् ॥82॥
अनुगवमायामे ॥83॥
द्विस्तावा त्रिस्तावा वेदिः ॥84॥
उपसर्गादध्वनः ॥85॥
तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः ॥86॥

अहःमर्वैकदेशसंख्यानपुण्याच्च रात्रेः ॥87॥

अह्नोऽह्न एतेभ्यः ॥88॥

न संख्यादेः समाहारे ॥89॥

उत्तमैकाभ्यां च ॥90॥

राजाहःसखिभ्यष्टच् ॥91॥

गोरतद्धितलुकि ॥92॥

अग्राख्यायामुरसः ॥93॥

अनोश्मायःसरसां जातिसंज्ञयोः ॥94॥

ग्रामकौटाभ्यां च तक्ष्णः ॥95॥

अतेः शुनः ॥96॥

उपमानादप्राणिषु ॥97॥

उत्तरमृगपूर्वाच्च सक्थ्नः ॥98॥

नावो द्विगोः ॥99॥

अर्धाच्च ॥100॥

खार्याः प्राचाम् ॥101॥

द्वित्रिभ्यामञ्जलेः ॥102॥

अनसन्तान्नपुंसकाच्छन्दसि ॥103॥

ब्रह्मणो जानपदाख्यायाम् ॥104॥

कुमहद्भ्यामन्यतरस्याम् ॥105॥

द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात् समाहारे ॥106॥

अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः ॥107॥

अनश्च ॥108॥

नपुंसकादन्यतरस्याम् ॥109॥

नदीपौर्णमास्याग्रहायणीभ्यः ॥110॥

झयः ॥111॥

गिरेश्च सेनकस्य ॥112॥

बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच् ॥113॥

अङ्गुलेर्दारुणि ॥114॥

द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः ॥115॥

अप् पूरणीप्रमाण्योः ॥116॥

अन्तर्बहिर्भ्यां च लोम्नः ॥117॥

अञ्नासिकायाः संज्ञायां नसं चास्थूलात् ॥118॥
उपसर्गाच्च ॥119॥
सुप्रातसुश्वसुदिवशारिकुक्षचतुरश्रैणीपदाजपदप्रोष्ठपदाः ॥120॥
नञ्दुःसुभ्यो हलिसक्थ्योरन्यतरस्याम् ॥121॥
नित्यमसिच् प्रजामेधयोः ॥122॥
बहुप्रजाश्छन्दसि ॥123॥
धर्मादनिच् केवलात् ॥124॥
जम्भा सुहरिततृणसोमेभ्यः ॥125॥
दक्षिणेर्मा लुब्धयोगे ॥126॥
इच् कर्मव्यतिहारे ॥127॥
द्विदण्ड्यादिभ्यश्च ॥128॥
प्रसम्भ्यां जानुनोर्ज्ञुः ॥129॥
ऊर्ध्वाद् विभाषा ॥130॥
ऊधसोऽनङ् ॥131॥
धनुषश्च ॥132॥
वा संज्ञायाम् ॥133॥
जायाया निङ् ॥134॥
गन्धस्येदुत्पूतिसुसुरभिभ्यः ॥135॥
अल्पाख्यायाम् ॥136॥
उपमानाच्च ॥137॥
पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः ॥138॥
कुम्भपदीषु च ॥139॥
संख्यासुपूर्वस्य ॥140॥
वयसि दन्तस्य दतृ ॥141॥
छन्दसि च ॥142॥
स्त्रियां संज्ञायाम् ॥143॥
विभाषा श्यावारोकाभ्याम् ॥144॥
अग्रान्तशुद्धशुभ्रवृषवराहेभ्यश्च ॥145॥
ककुदस्यावस्थायां लोपः ॥146॥
त्रिककुत् पर्वते ॥147॥
उद्विभ्यां काकुदस्य ॥148॥

पृणाद् विभाषा ॥149॥

सुहृद्दुर्हृ दौ मित्रामित्रयोः ॥150॥

उरःप्रभृतिभ्यः कप् ॥151॥

इनः स्त्रियाम् ॥152॥

नद्यृतश्च ॥153॥

शेषाद् विभाषा ॥154॥

न संज्ञायाम् ॥155॥

ईयसश्च ॥156॥

वन्दिते भ्रातुः ॥157॥

ऋतश्छन्दसि ॥158॥

नाडीतन्त्र्योः स्वाङ्गे ॥159॥

निष्प्रवाणिश्च ॥160॥

षष्ठोऽध्यायः

प्रथमः पादः

एकाचो द्वे प्रथमस्य ॥1॥

अजादेर्द्वितीयस्य ॥2॥

नन्द्राः संयोगादयः ॥3॥

पूर्वोऽभ्यासः ॥4॥

उभे अभ्यस्तम् ॥5॥

जक्षित्यादयः षट् ॥6॥

तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्य ॥7॥

लिटि धातोरनभ्यासस्य ॥8॥

सन्यङोः ॥9॥

श्लौ ॥10॥

चङि ॥11॥

दाश्वान् साह्वान् मीढ्वांश्च ॥12॥

ष्यङः संप्रसारणं पुत्रपत्योस्तत्पुरुषे ॥13॥

बन्धुनि बहुव्रीहौ ॥14॥

वचिस्वपियजादीनां किति ॥15॥

ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च ॥16॥

लिट्यभ्यासस्योभयेषाम् ॥17॥

स्वापेश्चङि ॥18॥

स्वपिस्यमिव्येञां यङि ॥19॥

न वशः ॥20॥

चायः की ॥21॥

स्फायः स्फी निष्ठायाम् ॥22॥

स्न्यः प्रपूर्वस्य ॥23॥
द्रवमूर्तिस्पर्शयोः श्यः ॥24॥
प्रतेश्च ॥25॥
विभाषाऽभ्यवपूर्वस्य ॥26॥
शृतं पाके ॥27॥
प्यायः पी ॥28॥
लिड्यङोश्च ॥29॥
विभाषा श्वेः ॥30॥
णौ च संश्चङोः ॥31॥
ह्वः संप्रसारणमभ्यस्तस्य च ॥32॥
बहुलं छन्दसि ॥33॥
चायः की ॥34॥
अपस्पृधेथामानृचुरानृहुश्चिच्युषेतित्याजश्राताःश्रितमाशीराशीर्ताः ॥35॥
न संप्रसारणे संप्रसारणम् ॥36॥
लिटि वयो यः ॥37॥
वश्चाऽस्याऽन्यतरस्यां किति ॥38॥
वेञः ॥39॥
ल्यपि च ॥40॥
ज्यश्च ॥41॥
व्यश्च ॥42॥
विभाषा परेः ॥43॥
आदेच उपदेशेऽशिति ॥44॥
न व्यो लिटि ॥45॥
स्फुरतिस्फुलत्योर्घञि ॥46॥
क्रीङ्जीनां णौ ॥47॥
सिध्यतेरपारलौकिके ॥48॥
मीनातिमिनोतिदीङां ल्यपि च ॥49॥
विभाषा लीयतेः ॥50॥
खिदेश्छन्दसि ॥51॥
अपगुरो णमुलि ॥52॥
चिस्फुरोर्णौ ॥53॥

प्रजनं वीयतः ॥54॥

बिभर्तेर्हेतुभये ॥55॥

नित्यं स्मयतेः ॥56॥

सृजिदृशोर्झल्यमकिति ॥57॥

अनुदात्तस्य चर्दुपधस्याऽन्यतरस्याम् ॥58॥

शीर्षश्छन्दसि ॥59॥

ये च तद्धिते ॥60॥

पद्दन्नोमास्हृन्निशसन्यूषन्दोषन्यकञ्छकन्नुदन्नासञ्छस्प्रभृतिषु ॥61॥

धात्वादेः षः सः ॥62॥

णो नः ॥63॥

लोपो व्योर्वलि ॥64॥

वेरपृक्तस्य ॥65॥

हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् ॥66॥

एङ्ह्रस्वात् संबुद्धेः ॥67॥

शेश्छन्दसि बहुलम् ॥68॥

ह्रस्वस्य पिति कृति तुक् ॥69॥

संहितायाम् ॥70॥

छे च ॥71॥

आङ्माङोश्च ॥72॥

दीर्घात् पदान्तराद् वा ॥73॥

इको यणचि ॥74॥

एचोऽयवायावः ॥75॥

वान्तो यि प्रत्यये ॥76॥

धातोस्तन्निमित्तस्यैव ॥77॥

क्षय्यजय्यौ शक्यार्थे ॥78॥

क्रय्यस्तदर्थे ॥79॥

भय्यप्रवय्ये च च्छन्दसि ॥80॥

एकः पूर्वपरयोः ॥81॥

अन्तादिवच्च ॥82॥

षत्वतुकोरसिद्धः ॥83॥

आद् गुणः ॥84॥

वृद्धिरेचि ॥85॥
एत्येधत्यूठ्सु ॥86॥
आटश्च ॥87॥
उपसर्गादृति धातौ ॥88॥
वा सुप्यापिशलेः ॥89॥
औतोऽम्शसोः ॥90॥
एङिपररूपम् ॥91॥
ओमाङोश्च ॥92॥
उस्यपदान्तात् ॥93॥
अतो गुणे ॥94॥
अव्यक्तानुकरणस्याऽत इतौ ॥95॥
नाऽम्रेडितस्याऽन्त्यस्य तु वा ॥96॥
अकः सवर्णे दीर्घः ॥97॥
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः ॥98॥
तस्माच्छसो नः पुंसि ॥99॥
नादिचि ॥100॥
दीर्घाज्जसि च ॥101॥
वा छन्दसि ॥102॥
अमि पूर्वः ॥103॥
संप्रसारणाच्च ॥104॥
एङः पदान्तादति ॥105॥
ङसिङसोश्च ॥106॥
ऋत उत् ॥107॥
ख्यत्यात् परस्य ॥108॥
अतो रोरप्लुतादप्लुते ॥109॥
हशि च ॥110॥
प्रकृत्याऽन्तःपादम् ॥111॥
अव्यादवद्यादवक्रमुरव्रतायमवन्त्ववस्युषु च ॥112॥
यजुष्युरः ॥113॥
आपो जुषाणो वृष्णो वर्षिष्ठ अम्बे अम्बाले अम्बिकेपूर्वे ॥114॥
अङ्ग इत्यादौ च ॥115॥

अनुदात्ते च कुधपरे ॥116॥
अवपथासि च ॥117॥
सर्वत्र विभाषा गोः ॥118॥
अवङ् स्फोटायनस्य ॥119॥
इन्द्रे च ॥120॥
प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम् ॥121॥
आङोऽनुनासिकश्छन्दसिबहुलम् ॥122॥
इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च ॥123॥
ऋत्यकः ॥124॥
अप्लुतवदुपस्थिते ॥125॥
ई३ चाक्रवर्मणास्य ॥126॥
दिव उत् ॥127॥
एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि ॥128॥
स्यश्छन्दसि बहुलम् ॥129॥
सोऽचि लोपे चेत् पादपूरणम् ॥130॥
सुट् कात् पूर्वः ॥131॥
सम्परिभ्यां करोतौ भूषणे ॥132॥
समवाये च ॥133॥
उपात् प्रतियत्नवैकृतवाक्याध्याहरेषु ॥134॥
किरतौ लवने ॥135॥
हिंसायां प्रतेश्च ॥136॥
अपाच्चतुष्पाच्छकुनिष्वालेखने ॥137॥
कुस्तुम्बुरूणि जातिः ॥138॥
अपरस्पराः क्रियासातत्ये ॥139॥
गोष्पदं सेवितासेवितप्रमाणेषु ॥140॥
आस्पदं प्रतिष्ठायाम् ॥141॥
आश्चर्यमनित्ये ॥142॥
वर्चस्केऽवस्करः ॥143॥
अपस्करो रथाङ्गम् ॥144॥
विष्किरः शकुनौ वा ॥145॥
ह्रस्वाच्चन्द्रोत्तरपदे मन्त्रे ॥146॥

प्रनिष्कशश्च कशः ॥147॥

प्रस्कण्वहरिश्चन्द्रावृषी ॥148॥

मस्करमस्करिणौ वेणुपरिव्राजकयोः ॥149॥

कास्तीराजस्तुन्दे नगरे ॥15॥

पारस्करप्रभृतीनि च संज्ञायाम् ॥151॥

अनुदात्तं पदमेकवर्जम् ॥152॥

कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः ॥153॥

उञ्छादीनां चं ॥154॥

अनुदात्तस्य च यत्रोदात्तलोपः ॥155॥

धातोः ॥156॥

चितः ॥157॥

तद्धितस्य ॥158॥

कितः ॥159॥

तिसृभ्यो जसः ॥160॥

चतुरः शसि ॥161॥

सावेकाचस्तृतीयादिर्विभक्तिः ॥162॥

अन्तोदात्तादुत्तरपदादन्यतरस्यामनित्यसमासे ॥163॥

अञ्चेश्छन्दस्यसर्वनामस्थानम् ॥164॥

ऊडिदंपदाद्यप्पुम्रैद्युभ्यः ॥165॥

अष्टनो दीर्घात् ॥166॥

शतुरनुमो नद्यजादी ॥167॥

उदात्तयणो हल्पूर्वात् ॥168॥

नोङ्धात्वोः ॥169॥

ह्रस्वनुड्भ्यां मतुप् ॥170॥

नामन्यतरस्याम् ॥171॥

ङ्याश्छन्दसि बहुलम् ॥172॥

षट्त्रिवतुर्भ्यो हलादिः ॥173॥

झल्युपोत्तमम् ॥174॥

विभाषा भाषायाम् ॥175॥

न गोश्वन्साववर्णराडङ्क्रुङ्कृद्भ्यः ॥176॥

दिवो झल् ॥177॥

नृ चाऽन्यतरस्याम् ॥178॥

तित् स्वरितम् ॥179॥

तास्यनुदात्तेन्ङिददुपदेशाल्लसार्वधातुकमनुदात्तमह्नि्वङोः ॥180॥

आदिः सिचोऽन्यतरस्याम् ॥181॥

स्वपादिहिंसामच्यनिटि ॥182॥

अभ्यस्तानामादिः ॥183॥

अनुदात्ते च ॥184॥

सर्वस्य सुपि ॥185॥

भीह्रीभृहुमदजनधनदरिद्राजागरां प्रत्ययात् पूर्वं पिति ॥186॥

लिति ॥187॥

आदिर्णमुल्यन्यतरस्याम् ॥188॥

अचः कर्तृयकि ॥189॥

थलि च सेटीडन्तो वा ॥190॥

ञ्नितादिर्नित्यम् ॥191॥

आमन्त्रितस्य च ॥192॥

पथिमथोः सर्वनामस्थाने ॥193॥

अन्तश्च तवै युगपत् ॥194॥

क्षयो निवासे ॥195॥

जयः करणम् ॥196॥

वृषादीनां च ॥197॥

संज्ञायामुपमानम् ॥198॥

निष्ठा च द्व्यजनात् ॥199॥

शुष्कधृष्टौ ॥200॥

आशितः कर्ता ॥201॥

रिक्ते विभाषा ॥202॥

जुष्टार्पिते च च्छन्दसि ॥203॥

नित्यं मन्त्रे ॥204॥

युष्मदस्मदोर्ङसि ॥205॥

ङयि च ॥206॥

यतोऽनावः ॥207॥

ईडवन्दवृशंसदुहां ण्यतः ॥208॥

विभाषा वेण्विन्धानयोः ॥209॥

त्यागरागहासकुहश्वठक्रथानाम् ॥210॥

उपोत्तमं रिति ॥211॥

चङ्यन्यतरस्याम् ॥212॥

मतोः पूर्वमात् संज्ञायां स्त्रियाम् ॥213॥

अन्तोऽवत्याः ॥214॥

ईवत्याः ॥215॥

चौ ॥216॥

समासस्य ॥217॥

द्वितीयः पादः

बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् ॥1॥

तत्पुरुषे तुल्यार्थतृतीयासप्तम्युपमानाव्ययद्वितीयाकृत्याः ॥2॥

वर्णो वर्णेष्वनेते ॥3॥

गाधलवणयोः प्रमाणे ॥4॥

दायाद्यं दायादे ॥5॥

प्रतिबन्धि चिरकृच्छ्रयोः ॥6॥

पदेऽपदेशे ॥7॥

निवाते वातत्राणे ॥8॥

शरदेऽनार्तवे ॥9॥

अध्वर्युकषाययोर्जातौ ॥10॥

सदृशप्रतिरूपयोः सादृश्ये ॥11॥

द्विगौ प्रमाणे ॥12॥

गन्तव्यपण्यं वाणिजे ॥13॥

मात्रोपज्ञोपक्रमच्छाये नपुंसके ॥14॥

सुखप्रिययोर्हिते ॥15॥

प्रीतौ च ॥16॥

स्वं स्वामिनि ॥17॥

पत्यावैश्वर्ये ॥18॥

न भूवाक्चिद्दिधिषु ॥19॥

वा भुवनम् ॥20॥

आशङ्काबाधनेदीयःसु संभावने ॥21॥

पूर्वे भूतपूर्वे ॥22॥
सविधसनीडसमर्यादसवेशसदेशेषु सामीप्ये ॥23॥
विस्पष्टादीनि गुणवचनेषु ॥24॥
श्रज्यावमकन्पापवत्सु भावे कर्मधारये ॥25॥
कुमारश्च ॥26॥
आदिः प्रत्येनसि ॥27॥
पूगेष्वन्यतरस्याम् ॥28॥
इगन्तकालकपालभगालशरावेषु द्विगौ ॥29॥
बह्वन्यतरस्याम् ॥30॥
दिष्टिवितस्त्योश्च ॥31॥
सप्तमी सिद्धशुष्कपक्वबन्धेष्वकालात् ॥32॥
परिप्रत्युपापा वर्ज्यमानाहोरात्रावयवेषु ॥33॥
राजन्यबहुवचनद्वन्द्वेऽन्धकवृष्णिषु ॥34॥
संख्या ॥35॥
आचार्योपसर्जनश्चाऽन्तेवासी ॥36॥
कार्तकौजपादयश्च ॥37॥
महान् व्रीह्यपराह्णगृष्टीष्वासजाबालभारतहैलिहिलरौरवप्रवृद्धेषु ॥38॥
क्षुल्लकश्च वैश्वदेवे ॥39॥
उष्ट्रः सादिवाम्योः ॥40॥
गौः सादसादिसारथिषु ॥41॥
कुरुगार्हपतरिक्तगुर्वसूतजरत्यश्लीलदृढरूपापारेवडवातैतिलकद्रूःपण्यकम्बलो दासीभाराणां च ॥42॥
चतुर्थी तदर्थे ॥43॥
अर्थे ॥44॥
क्ते च ॥45॥
कर्मधारयेऽनिष्ठा ॥46॥
अहीने द्वितीय ॥47॥
तृतीया कर्मणि ॥48॥
गतिरनन्तरः ॥49॥
तादौ च निति कृत्यतौ ॥50॥
तवै चाऽन्तश्च युगपत् ॥51॥

अनिगन्तोऽञ्चतौ वप्रत्यये ॥52॥
न्यधी च ॥53॥
ईषदन्यतरस्याम् ॥54॥
हिरण्यपरिमाणं धने ॥55॥
प्रथमोऽचिरोपसंपत्तौ ॥56॥
कतरकतमौ कर्मधारये ॥57॥
आर्यो ब्राह्मणकुमारयोः ॥58॥
राजा च ॥59॥
षष्ठी प्रत्येनसि ॥60॥
क्ते नित्यार्थे ॥61॥
ग्रामः शिल्पिनि ॥62॥
राजा च प्रशंसायाम् ॥63॥
आदिरुदात्तः ॥64॥
सप्तमीहारिणौ धर्म्येऽहरणे ॥65॥
युक्ते च ॥66॥
विभाषाऽध्यक्षे ॥67॥
पापं च शिल्पिनि ॥68॥
गोत्रान्तेवासिमाणवब्राह्मणेषु क्षेपे ॥69॥
अङ्गानि मैरेये ॥70॥
भक्ताख्यास्तदर्थेषु ॥71॥
गोबिडालसिंहसैन्धवेषूपमाने ॥72॥
अके जीविकार्थे ॥73॥
प्राचां क्रीडायाम् ॥74॥
अणि नियुक्ते ॥75॥
शिल्पिनि चाकृञः ॥76॥
संज्ञायां च ॥77॥
गोतन्तियवं पाले ॥78॥
णिनिः ॥79॥
उपमानं शब्दार्थप्रकृतावेव ॥80॥
युक्तारोह्यादयश्च ॥81॥
दीर्घकाशतुषभ्राष्ट्रवटं जे ॥82॥

अन्त्यात् पूर्वं बह्वचः ॥85॥

ग्रामेऽनिवसन्तः ॥84॥

घोषादिषु च ॥85॥

छात्र्यादयः शालायाम् ॥86॥

प्रस्थेऽवृद्धमकर्क्यादीनाम् ॥87॥

मालादीनां च ॥88॥

अमहन्नवं नगरेऽनुदीचाम् ॥89॥

अर्मे चाऽवर्णं द्व्यच्त्र्यच् ॥90॥

न भूताधिकसंजीवमद्राश्मकज्जलम् ॥91॥

अन्तः ॥92॥

सर्वं गुणकार्त्स्न्ये ॥93॥

संज्ञायां गिरिनिकाययोः ॥94॥

कुमार्यां वयसि ॥95॥

उदकेऽकेवले ॥96॥

द्विगौ क्रतौ ॥97॥

सभायां नपुंसके ॥98॥

पुरे प्राचाम् ॥99॥

अरिष्टगौडपूर्वे च ॥100॥

न हास्तिनफलकमार्देयाः ॥101॥

कुसूलकूपकुम्भशालं बिले ॥102॥

दिक्शब्दा ग्रामजनपदाख्यानचानराटेषु ॥103॥

आचार्योपसर्जनश्चाऽन्तेवासिनी ॥104॥

उत्तरपदवृद्धौ सर्वं च ॥105॥

बहुव्रीहौ विश्वं संज्ञायाम् ॥106॥

उदराश्वेषुषु क्षेपे ॥107॥

नदी बन्धुनि ॥108॥

निष्ठोपसर्गपूर्वमन्यतरस्याम् ॥109॥

उत्तरपदादिः ॥110॥

कर्णो वर्णलक्षणात् ॥111॥

संज्ञौपम्ययोश्च ॥112॥

कण्ठपृष्ठग्रीवाजङ्घं च ॥113॥

शृङ्गमवस्थायां च ॥114॥

नञो जरमरमित्रमृताः ॥115॥

सोर्मनसी अलोमोषसी ॥116॥

क्रत्वादयश्च ॥117॥

आद्युदात्तं द्व्यच् छन्दसि ॥118॥

वीरवीर्यौ च ॥119॥

कूलतीरतूलमूलशालाक्षसममव्ययीभावे ॥120॥

कंसमन्थशूर्पपाय्यकाण्डं द्विगौ ॥121॥

तत्पुरुषे शालायां नपुंसके ॥122॥

कन्था च ॥123॥

आदिश्चिहणादीनाम् ॥124॥

चेलखेटकटुककाण्डं गर्हायाम् ॥125॥

चीरमुपमानम् ॥126॥

पललसूपशाकं मिश्रे ॥127॥

कूलसूदस्थलकर्षाः संज्ञायाम ॥128॥

अकर्मधारये राज्यम् ॥129॥

वर्ग्यादयश्च ॥130॥

पुत्रः पुम्भ्यः ॥131॥

नाऽचार्यराजर्त्विक्संयुक्तज्ञात्याख्येभ्यः ॥132॥

चूर्णादीन्यप्राणिषष्ठ्याः ॥133॥

षट् च काण्डादीनि ॥134॥

कुण्डं वनम् ॥13॥

प्रकृत्या भगालम् ॥136॥

शितेर्नित्याबह्वज् बहुव्रीहावभसत् ॥137॥

गतिकारकोपपदात् कृत् ॥138॥

उभे वनस्पत्यादिषु युगपत् ॥139॥

देवताद्वन्द्वे च ॥140॥

नोत्तरपदेऽनुदात्तादावपृथिवीरुद्रपूषमन्थिषु ॥141॥

अन्तः ॥142॥

थाथघञ्क्ताजबित्रकाणाम् ॥143॥

सूपमानात् क्तः ॥144॥

संज्ञायामना चतादीनाम् ॥145॥
प्रवृद्धादीनां च ॥146॥
कारकाद्दत्तश्रुतयोरेवाशिषि ॥147॥
इत्थंभूतेन कृतमिति च ॥148॥
अनो भावकर्मवचनः ॥149॥
मन्क्तिन्व्याख्यानशयनासनस्थानयाजकादिक्रीताः ॥15॥
सप्तम्याः पुण्यम् ॥151॥
ऊनार्थकलहं तृतीयायाः ॥152॥
मिश्रं चाऽनुपसर्गमसंधौ ॥153॥
नञो गुणप्रतिषेधे संपाद्यर्हहितालमर्थास्तद्धिताः ॥154॥
ययतोश्चाऽतदर्थे ॥155॥
अच्कावशक्तौ ॥156॥
आक्रोशे च ॥157॥
संज्ञायाम् ॥158॥
कृत्योकेष्णुच्चार्वादयश्च ॥159॥
विभाषा तृन्नन्नतीक्ष्णशुचिषु ॥160॥
बहुव्रीहाविदमेतत्तद्भ्यः प्रथमपूरणयोः क्रियागणने ॥161॥
संख्यायाः स्तनः ॥162॥
विभाषा छन्दसि ॥163॥
संज्ञायां मित्राजिनयोः ॥164॥
व्यवायिनोऽन्तरम् ॥165॥
मुखं स्वाङ्गम् ॥166॥
नाऽव्ययदिक्शब्दगोमहत्स्थूल मुष्टिपृथुवत्सेभ्यः ॥167॥
निष्ठोपमानादन्यतरस्याम् ॥168॥
जातिकालसुखादिभ्योऽनाच्छादनात् क्तोऽकृतमितप्रति पन्नाः ॥169॥
वा जाते ॥170॥
नञ्सुभ्याम् ॥171॥
कपि पूर्वम् ॥172॥
ह्रस्वान्तेऽन्यात् पूर्वम् ॥173॥
बहोर्नञ्वदुत्तरपदभूम्नि ॥174॥
न गुणादयोऽवयवाः ॥175॥

उपसर्गात् स्वाङ्गं ध्रुवमपर्शु ॥176॥

वनं समासे ॥177॥

अन्तः ॥178॥

अन्तश्च ॥179॥

न निविभ्याम् ॥180॥

परेरभितोभावि मण्डलम् ॥181॥

प्रादस्वाङ्गं संज्ञायाम् ॥182॥

निरुदकादीनि च ॥183॥

अभेर्मुखम् ॥184॥

अपाच्च ॥185॥

स्फिगपूतवीणाञ्जोऽध्वकुक्षि सीरनामनाम च ॥186॥

अधेरुपरिस्थम् ॥187॥

अनोरप्रधानकनीयसी ॥188॥

पुरुषश्चाऽन्वादिष्टः ॥189॥

अतेरकृत्पदे ॥190॥

नेरनिधाने ॥191॥

प्रतेरंश्वादयस्तत्पुरुषे ॥192॥

उपाद् द्व्यजजिनमगौरादयः ॥193॥

सोरवक्षेपणे ॥194॥

विभाषोत्पुच्छे ॥195॥

द्वित्रिभ्यां पाद्दन्मूर्धसु बहुव्रीहौ ॥196॥

सक्थं चाऽक्रान्तात् ॥197॥

परादिश्छन्दसि बहुलम् ॥198॥

तृतीयः पादः

अलुगुत्तरपदे ॥1॥

पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः ॥2॥

ओजःसहोऽम्भस्तमसस्तृतीयायाः ॥3॥

मनसः संज्ञायाम् ॥4॥

आज्ञायिनि च ॥5॥

आत्मनश्च ॥6॥

वैयाकरणाख्यायां चतुर्थ्याः परस्य च ॥7॥

हलदन्तात् सप्तम्याः संज्ञायाम् ॥8॥
कारनाम्नि च प्राचां हलादौ ॥9॥
मध्याद् गुरौ ॥10॥
अमूर्धमस्तकात् स्वाङ्गादकामे ॥11॥
बन्धे च विभाषा ॥12॥
तत्पुरुषे कृति बहुलम् ॥13॥
प्रावृट्शरत्कालदिवां जे ॥14॥
विभाषा वर्षक्षरशरवरात् ॥15॥
घकालतनेषु कालानाम्नः ॥16॥
शयवासवासिष्वकालात् ॥17॥
नेन्सिद्धबध्नातिषु च ॥18॥
स्थे च भाषायाम् ॥19॥
षष्ठ्या आक्रोशे ॥20॥
पुत्रेऽन्यतरस्याम् ॥21॥
ऋतो विद्यायोनिसंबन्धेभ्यः ॥22॥
विभाषा स्वसृपत्योः ॥23॥
आनङ् ऋतो द्वन्द्वे ॥24॥
देवताद्वन्द्वे च ॥25॥
ईदग्नेः सोमवरुणयोः ॥26॥
इद् वृद्धौ ॥27॥
दिवो द्यावा ॥28॥
दिवसश्च पृथिव्याम् ॥29॥
उषासोषसः ॥30॥
मातरपितरावुदीचाम् ॥31॥
पितरामातरा च च्छन्दसि ॥32॥
स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु ॥33॥
तसिलादिष्वाकृत्वसुचः ॥34॥
क्याङ्मानिनोश्च ॥35॥
न कोपधायाः ॥36॥
संज्ञापूरण्योश्च ॥37॥
वृद्धिनिमित्तस्य च तद्धितस्याऽरक्तविकारे ॥38॥

स्वाङ्गाच्चेतः ॥39॥
जातेश्च ॥40॥
पुंवत् कर्मधारयजातीयदेशीयेषु ॥41॥
घरूपकल्पचेलड्ब्रुवगोत्रमतहतेषु ङ्योऽनेकाचो ह्रस्वः ॥42॥
नद्याः शेषस्याऽन्यतरस्याम् ॥43॥
उगितश्च ॥44॥
आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः ॥45॥
द्व्यष्टनः संख्यायामबहुव्रीह्यशीत्योः ॥46॥
त्रेस्त्रयः ॥47॥
विभाषा चत्वारिंशत्प्रभृतौ सर्वेषाम् ॥48॥
हृदयस्य हृल्लेखयदण्लासेषु ॥49॥
वा शोकष्यञ्रोगेषु ॥50॥
पादस्य पदाज्यातिगोपहतेषु ॥51॥
पद्यत्यतदर्थे ॥52॥
हिमकाषिहतिषु च ॥53॥
ऋचः शे ॥54॥
वा घोषमिश्रशब्देषु ॥55॥
उदकस्योदः संज्ञायाम् ॥56॥
पेषंवासवाहनिषु च ॥57॥
एकहलादौ पूरयितव्येऽन्यतरस्याम् ॥58॥
मन्थौदनसक्तुबिन्दुवज्रभारहारवीवधगाहेषु च ॥59॥
इको ह्रस्वोऽङ्यो गालवस्य ॥60॥
एकतद्धिते च ॥61॥
ङ्यापोः संज्ञाछन्दसोर्बहुलम् ॥62॥
त्वे च ॥63॥
इष्टकेषीकामालानां चिततूलभारिषु ॥64॥
खित्यनव्ययस्य ॥65॥
अरुर्द्विषदजन्तस्य मुम् ॥66॥
इच एकाचोऽम्प्रत्ययवच्च ॥67॥
वाचंयमपुरंदरौ च ॥68॥
कारे सत्यागदस्य ॥69॥
श्येनतिलस्य पाते ञे ॥70॥

रात्रेः कृति विभाषा ॥71॥
नलोपो नञः ॥72॥
तस्मान्नुडचि ॥73॥
नभ्राण्नपान्नवेदानासत्यानमुचिनकुलनखनपुंसकनक्षत्रनक्रनाकेषु प्रकृत्या ॥74॥
एकादिश्चैकस्य चाऽदुक् ॥75॥
नगोऽप्राणिष्वन्यतरस्याम् ॥76॥
सहस्य सः संज्ञायाम् ॥77॥
ग्रन्थान्ताधिके च ॥78॥
द्वितीये चाऽनुपाख्ये ॥79॥
अव्ययीभावे चाऽकाले ॥80॥
वोपसर्जनस्य ॥81॥
प्रकृत्याशिषि ॥82॥
समानस्य छन्दस्यमूर्धप्रभृत्युदर्केषु ॥83॥
ज्योतिर्जनपदरात्रिनाभिनामगोत्ररूपस्थानवर्णवयोवचनबन्धुषु ॥84॥
चरणे ब्रह्मचारिणि ॥85॥
तीर्थे ये ॥86॥
विभाषोदरे ॥87॥
दृग्दृशवतुषु ॥88॥
इदंकिमोरीश्की ॥89॥
आ सर्वनाम्नः ॥90॥
विष्वग्देवयोश्च टेरद्र्यञ्चतौ वप्रत्यये ॥91॥
समः समि ॥92॥
तिरसस्तिर्यलोपे ॥93॥
सहस्य सध्रिः ॥94॥
सधमादस्थयोश्छन्दसि ॥95॥
द्व्यन्तरुपसर्गेभ्योऽप ईत् ॥96॥
ऊदनोर्देशे ॥97॥
अषष्ठ्यतृतीयास्थस्याऽन्यस्यदुगाशीराशास्थास्थितोत्सुकोतिकारकरागच्छेषु ॥98॥
अर्थे विभाषा ॥99॥
कोः कत् तत्पुरुषेऽचि ॥100॥
रथवदयोश्च ॥101॥

तृणे च जातौ ॥102॥
क्त पथ्यक्षयोः ॥103॥
ईषदर्थे ॥104॥
विभाषा पुरुषे ॥105॥
कवं चोष्णे ॥106॥
पथि च च्छन्दसि ॥107॥
पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम् ॥108॥
संख्याविसायपूर्वस्याह्नस्याहन्नन्यतरस्यां ङौ ॥109॥
ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः ॥110॥
सहिवहोरोदवर्णस्य ॥111॥
साढ्यै साढ्वा साढेति निगमे ॥112॥
संहितायाम् ॥113॥
कर्णे लक्षणस्याऽविष्टाष्टपञ्चमणिभिन्नच्छिन्नच्छिद्रस्रुवस्वस्तिकस्य ॥114॥
नहिवृतिवृषिव्यधिरुचिसहितनिषु क्वौ ॥115॥
वनगिर्योः संज्ञायां कोटरकिंशुलुकादीनाम् ॥116॥
वले ॥117॥
मतौ बह्वचोऽनजिरादीनाम् ॥118॥
शरादीनां च ॥119॥
इको वहेऽपीलोः ॥120॥
उपसर्गस्य घञ्यमनुष्ये बहुलम् ॥121॥
इकः काशे ॥122॥
दस्ति ॥123॥
अष्टनः संज्ञायाम् ॥124॥
छन्दसि च ॥125॥
चितेः कपि ॥126॥
विश्वस्य वसुराटोः ॥127॥
नरे संज्ञायाम् ॥128॥
मित्रे चर्षौ ॥129॥
मन्त्रे सोमाश्वेन्द्रियविश्वदेव्यस्य मतौ ॥130॥
ओषधेश्च विभक्तावप्रथमायाम् ॥131॥
ऋचि तुनुघमक्षुतङ्कुत्रोरुष्याणाम् ॥132॥

इकः सुत्रि ॥133॥
द्व्यचोऽतस्तिङः ॥134॥
निपातस्य च ॥135॥
अन्येषामपि दृश्यते ॥136॥
चौ ॥137॥
संप्रसारणस्य ॥138॥

चतुर्थः पादः

अङ्गस्य ॥1॥
हलः ॥2॥
नामि ॥3॥
न तिसृचतसृ ॥4॥
छन्दस्युभयथा ॥5॥
नृ च ॥6॥
नोपधायाः ॥7॥
सर्वनामस्थाने चासंबुद्धौ ॥8॥
वा षपूर्वस्य निगमे ॥9॥
सान्तमहतः संयोगस्य ॥10॥
अप्तृन्तृच्स्वसृनप्तृनेष्टृत्वष्टृक्षतृहोतृपोतृप्रशास्तॄणाम् ॥11॥
इन्हन्पूषार्यम्णां शौ ॥12॥
सौ च ॥13॥
अत्वसन्तस्य चाधातोः ॥14॥
अनुनासिकस्य क्विझलोः क्ङिति ॥15॥
अज्झनगमां सनि ॥16॥
तनोतेर्विभाषा ॥17॥
क्रमश्च क्त्वि ॥18॥
च्छ्वोः शूडनुनासिके च ॥19॥
ज्वरत्वरस्रिव्यविमवामुपधायाश्च ॥20॥
राल्लोपः ॥21॥
असिद्धवदत्राऽभात् ॥22॥
श्नान्नलोपः ॥23॥
अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति ॥24॥

दंशसञ्जस्वञ्जां शपि ॥25॥
रञ्जेश्च ॥26॥
घञि च भावकरणयोः ॥27॥
स्यदो जवे ॥28॥
अवोदैधौद्मप्रश्रथहिमश्रथाः ॥29॥
नाऽञ्चेः पूजायाम् ॥30॥
क्त्वि स्कन्दिस्यन्दोः ॥31॥
जान्तनशां विभाषा ॥32॥
भञ्जेश्च चिणि ॥33॥
शास इदङ्हलोः ॥34॥
शा हौ ॥35॥
हन्तेर्जः ॥36॥
अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलिक्ङिति ॥37॥
वा ल्यपि ॥38॥
न क्तिचि दीर्घश्च ॥39॥
गमः क्वौ ॥40॥
विड्वनोरनुनासिकस्याऽऽत् ॥41॥
जनसनखनां सञ्झलोः ॥42॥
ये विभाषा ॥43॥
तनोतेर्यकि ॥44॥
सनः क्तिचि लोपश्चाऽस्यान्यतरस्याम् ॥45॥
आर्धधातुके ॥46॥
भ्रस्जो रोपधयोरमन्यतरस्याम् ॥47॥
अतो लोपः ॥48॥
यस्य हलः ॥49॥
क्यस्य विभाषा ॥50॥
णेरनिटि ॥51॥
निष्ठायां सेटि ॥52॥
जनिता मन्त्रे ॥53॥
शमिता यज्ञे ॥54॥
अयामन्ताल्वाय्येत्न्विष्णुषु ॥55॥

ल्यपि लघुपूर्वात् ॥56॥
विभाषाऽऽपः ॥57॥
युप्लुवोर्दीर्घश्छन्दसि ॥58॥
क्षियः ॥59॥
निष्ठायामण्यदर्थे ॥60॥
वाऽऽक्रोशदैन्ययोः ॥61॥
स्यसिच्सीयुट्तासिषु भावकर्मणोरुपदेशेऽज्झनग्रहदृशां वा चिण्वदिट् च ॥63॥
दीङो युडचि क्ङिति ॥63॥
आतो लोप इटि च ॥64॥
ईद्यति ॥65॥
घुमास्थागापाजहातिसां हलि ॥66॥
एर्लिङि ॥67॥
वाऽन्यस्य संयोगादेः ॥68॥
न ल्यपि ॥69॥
मयतेरिदन्यतरस्याम् ॥70॥
लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः ॥71॥
आडजादीनाम् ॥72॥
छन्दस्यपि दृश्यते ॥73॥
न माङ्योगे ॥74॥
बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेऽपि ॥75॥
इरयो रे ॥76॥
अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ ॥77॥
अभ्यासस्याऽसवर्णे ॥78॥
स्त्रियाः ॥79॥
वाऽमशसोः ॥80॥
इणो यण् ॥81॥
एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य ॥82॥
ओः सुपि ॥83॥
वर्षाभ्वश्च ॥84॥
न भूसुधियोः ॥85॥
छन्दस्युभयथा ॥86॥

लोपो यि ॥118॥

ध्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च ॥119॥

अत एकहल्मध्येऽनादेशादे र्लिटि ॥120॥

थलि च सेटि ॥121॥

तृफलभजत्रपश्च ॥122॥

राधो हिंसायाम् ॥123॥

वा जॄभ्रमुत्रसाम् ॥124॥

फणां च सप्तानाम् ॥125॥

न शसददवादिगुणानाम् ॥126॥

अर्वणस्त्रसावनञः ॥127॥

मघवा बहुलम् ॥128॥

भस्य ॥129॥

पादः पत् ॥130॥

वसोः संप्रसारणम् ॥131॥

वाह ऊठ् ॥132॥

श्वयुवमघोनामतद्धिते ॥133॥

अल्लोपोऽनः ॥134॥

षपूर्वहन्धृतराज्ञामणि ॥135॥

विभाषा ङिश्योः ॥136॥

न संयोगाद्वमन्तात् ॥137॥

अचः ॥138॥

उद ईत् ॥139॥

आतो धातोः ॥140॥

मन्त्रेष्वाङ्यादेरात्मनः ॥141॥

ति विंशतेर्डिति ॥142॥

टेः ॥143॥

नस्तद्धिते ॥144॥

अह्नष्टखोरेव ॥145॥

ओर्गुणः ॥146॥

ढे लोपोऽकद्र्वाः ॥147॥

यस्येति च ॥148॥

सूर्यतिष्यागस्त्यमत्स्यानां य उपधायाः ॥149॥
हलस्तद्धितस्य ॥150॥
आपत्यस्य च तद्धितेऽनीति ॥151॥
क्यच्व्योश्च ॥152॥
बिल्वकादिभ्यश्छस्य लुक ॥153॥
तुरिष्ठेमेयःसु ॥154॥
टेः ॥155॥
स्थूलदूरयुवह्रस्वक्षिप्रक्षुद्राणांयणादिपरं पूर्वस्य च गुणः ॥156॥
प्रियस्थिरस्फिरोरुबहुलगुरुवृद्धतृप्रदीर्घवृन्दारकाणां प्रस्थस्फवर्बंहिगर्वर्षित्रब्द्रा- घिवृन्दाः ॥157॥
बहोर्लोपो भू च बहोः ॥158॥
इष्ठस्य यिट् च ॥159॥
ज्यादादीयसः ॥160॥
र ऋतो हलादेर्लघोः ॥161॥
विभाषर्जोश्छन्दसि ॥162॥
प्रकृत्यैकाच् ॥163॥
इनण्यनपत्ये ॥164॥
गाथिविदथिकेशिगणिपणिनश्च ॥165॥
संयोगादिश्च ॥166॥
अन् ॥167॥
ये चाऽभावकर्मणोः ॥168॥
आत्माध्वानौ खे ॥169॥
न मपूर्वोऽपत्येऽवर्मणः ॥170॥
ब्राह्मोऽजातौ ॥171॥
कार्मस्ताच्छील्ये ॥172॥
औक्षमनपत्ये ॥173॥
दाण्डिनायनहास्तिनायनाथर्वणिकजैह्माशिनेयवाशिनायनिभ्रौणहत्यधैवत्यसारवैक्ष्वाकमैत्रेयहिरण्मयानि ॥174॥
ऋत्व्यवास्त्व्यवास्त्वमाध्वीहिरण्ययानि च्छन्दसि ॥175॥

सप्तमोऽध्यायः

प्रथमः पादः

युवोरनाकौ ॥1॥

आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् ॥2॥

झोऽन्तः ॥3॥

अदभ्यस्तात् ॥4॥

आत्मनेपदेष्वनतः ॥5॥

शीङो रुट् ॥6॥

वेत्तेर्विभाषा ॥7॥

बहुलं छन्दसि ॥8॥

अतो भिस ऐस् ॥9॥

बहुलं छन्दसि ॥10॥

नेदमदसोरकोः ॥11॥

टाङसिङसामिनात्स्याः ॥12॥

ङेर्यः ॥13॥

सर्वनाम्नः स्मै ॥14॥

ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ ॥15॥

पूर्वादिभ्यो नवभ्यो वा ॥16॥

जसः शी ॥17॥

औङ आपः ॥18॥

नपुंसकाच्च ॥19॥

जश्शसोः शिः ॥20॥

अष्टाभ्य औश् ॥21॥

षड्भ्यो लुक् ॥22॥
स्वमोर्नपुंसकात् ॥23॥
अतोऽम् ॥24॥
अद्ड्डतरादिभ्यः पञ्चभ्यः ॥25॥
नेतराच्छन्दसि ॥26॥
युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश ॥27॥
ङेप्रथमयोरम् ॥28॥
शसो न ॥29॥
भ्यसो भ्यम् ॥30॥
पञ्चम्या अत् ॥3॥
एकवचनस्य च ॥32॥
साम आकम् ॥33॥
आत औ णलः ॥34॥
तुह्योस्तातङ्ङाशिष्यन्यतरस्याम् ॥35॥
विदेः शतुर्वसुः ॥36॥
समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप् ॥37॥
क्त्वापि च्छन्दसि ॥38॥
सुपां सुलुक्पूर्वसवर्णाच्छेयाडाड्यायाजालः ॥39॥
अमो मश् ॥40॥
लोपस्त आत्मनेपदेषु ॥41॥
ध्वमो ध्वात् ॥42॥
यजध्वैनमिति च ॥43॥
तस्य तात् ॥44॥
तप्तनप्तनथनाश्च ॥45॥
इदन्तो मसि ॥46॥
क्त्वो यक् ॥47॥
इष्ट्वीनमिति च ॥48॥
स्नात्व्यादयश्च ॥49॥
आज्जसेरसुक् ॥50॥
अश्वक्षीरवृषलवणानामात्मप्रीतौ क्यचि ॥51॥
आमि सर्वनाम्नः सुट् ॥52॥

त्रेस्त्रयः ॥53॥

ह्रस्वनद्यापो नुट् ॥54॥

षट्चतुर्भ्यश्च ॥55॥

श्रीग्रामण्योश्छन्दसि ॥56॥

गोः पादान्ते ॥57॥

इदितो नुम् धातोः ॥58॥

शे मुचादीनाम् ॥59॥

मस्जिनशोर्झलि ॥60॥

रधिजभोरचि ॥61॥

नेट्यलिटि रधेः ॥62॥

रभेरशब्लिटोः ॥63॥

लभेश्च ॥64॥

आङो यि ॥65॥

उपात् प्रशंसायाम् ॥66॥

उपसर्गात् खल्घञोः ॥67॥

न सुदुर्भ्यां केवलाभ्याम् ॥68॥

विभाषा चिण्णमुलोः ॥69॥

उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ॥70॥

युजेरसमासे ॥71॥

नपुंसकस्य झलचः ॥72॥

इकोऽचि विभक्तौ ॥73॥

तृतीयादिषु भाषितपुंस्कं पुंवद् गालवस्य ॥74॥

अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः ॥75॥

छन्दस्यपिदृश्यते ॥76॥

ई च द्विवचने ॥77॥

नाभ्यस्ताच्छतुः ॥78॥

वा नपुंसकस्य ॥79॥

आच्छीनद्योर्नुम् ॥80॥

शप्श्यनोर्नित्यम् ॥81॥

सावनडुहः ॥82॥

दृक्स्ववस्स्वतवसां छन्दसि ॥83॥

दिव औत् ॥84॥
पथिमथ्यृभुक्षामात् ॥85॥
इतोऽत् सर्वनामस्थाने ॥86॥
थोन्थः ॥87॥
भस्य टेर्लोपः ॥88॥
पुंसोऽसुङ् ॥89॥
गोतो णित् ॥90॥
णलुत्तमो वा ॥91॥
सख्युरसम्बुद्धौ ॥92॥
अनङ् सौ ॥93॥
ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च ॥94॥
तृज्वत् क्रोष्टुः ॥95॥
स्त्रियां च ॥96॥
विभाषा तृतीयादिष्वचि ॥97॥
चतुरनडुहोरामुदात्त ॥98॥
अम् संबुद्धौ ॥99॥
ऋत इद्धातोः ॥100॥
उपधायाश्च ॥101॥
उदोष्ठ्यपूर्वस्य ॥102॥
बहुलं छन्दसि ॥103॥

द्वितीयः पादः

सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु ॥1॥
अतो ल्रान्तस्य ॥2॥
वदव्रजहलन्तस्याऽचः ॥3॥
नेटि ॥4॥
ह्मयन्तक्षणश्वसजागृणिश्व्येदिताम् ॥5॥
ऊर्णोतेर्विभाषा ॥7॥
अतो हलादेर्लघोः ॥7॥
नेड् वशि कृति ॥8॥
तितुत्रतथसिसुसरकसेषु च ॥9॥
एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् ॥10॥

श्र्युकः किति ॥11॥
सनि ग्रहगुहोश्च ॥12॥
कृसृभृवृस्तुद्रुस्रुश्रुवो लिटि ॥13॥
श्वीदितो निष्ठायाम् ॥14॥
यस्य विभाषा ॥15॥
आदितश्च ॥16॥
विभाषा भावादिकर्मणोः ॥17॥
क्षुब्धस्वान्तध्वान्तलग्नम्लिष्टविरिब्धफाण्टबाढानि मन्थमनस्तमःसक्ताविस्पष्टस्वरानायासभृशेषु ॥18॥
धृषिशसी वैयात्ये ॥19॥
दृढः स्थूलबलयोः ॥20॥
प्रभौ परिवृढः ॥21॥
कृच्छ्रगहनयोः कषः ॥22॥
घुषिरविशब्दने ॥23॥
अर्देः संनिविभ्यः ॥24॥
अभेश्चाऽविदूर्ये ॥25॥
णेरध्ययने वृत्तम् ॥26॥
वा दान्तशान्तपूर्णदस्तस्पष्टच्छन्नज्ञप्ताः ॥27॥
रुष्यमत्वरसंघुषास्वनाम् ॥28॥
हृषेर्लोमसु ॥29॥
अपचितश्च ॥30॥
ह्रुह्वरेश्छन्दसि ॥31॥
अपरिह्वृताश्च ॥32॥
सोमे ह्वरितः ॥33॥
ग्रसितस्कभितस्तभितोत्तभितचत्तविकस्ता विशस्तृशंस्तृशास्तृतरुतृतरूतृवरुवरूतृवरूत्रीरुज्ज्वलितिक्षरितिक्षमितिवमित्यमितीति च ॥34॥
आर्धधातुकस्येड्‌ वलादेः ॥35॥
स्नुक्रमोरनात्मनेपदनिमित्ते ॥36॥
ग्रहोऽलिटि दीर्घः ॥37॥
वृतो वा ॥38॥
न लिङि ॥39॥

सिचि च परस्मैपदेषु ॥40॥
इट् सनि वा ॥41॥
लिङ्सिचोरात्मनेपदेषु ॥42॥
ऋतश्च संयोगादेः ॥43॥
स्वरतिसूतिसूयतिधूञूदितो वा ॥44॥
रधादिभ्यश्च ॥45॥
निरः कुषः ॥46॥
इण्निष्ठायाम् ॥47॥
तीषसहलुभरुषरिषः ॥48॥
सनीवन्तर्धभ्रस्जदम्भुश्रिस्वृयूर्णुभरज्ञपिसनाम् ॥49॥
क्लिशः क्त्वानिष्ठयोः ॥50॥
पूङश्च ॥51॥
वसतिक्षुधोरिट् ॥52॥
अञ्चेः पूजायाम् ॥53॥
लुभो विमोहने ॥54॥
जॄव्रश्च्योः क्त्वि ॥55॥
उदितो वा ॥56॥
सेऽसिचि कृतचृतच्छृदतृदनृतः ॥57॥
गमेरिट् परस्मैपदेषु ॥58॥
न वृद्भ्यश्चतुर्भ्यः ॥59॥
तासि च क्लृपः ॥60॥
अचस्तास्वत् थल्यनिटो नित्यम् ॥61॥
उपदेशेऽत्वतः ॥62॥
ऋतो भारद्वाजस्य ॥63॥
बभूथाततन्थजगृम्भववर्थेतिनिगमे ॥64॥
विभाषा सृजिदृशोः ॥65॥
इडत्त्यर्तिव्ययतीनाम् ॥66॥
वस्वेकाजाद्घसाम् ॥67॥
विभाषा गमहनविदविशाम् ॥68॥
सनिससनिवांसम् ॥69॥
ऋद्धनोः स्ये ॥70॥

अञ्जेः सिचि ॥71॥
स्तुसुधूञ्भ्यः परस्मैपदेषु ॥72॥
यमरमनमातां सक् च ॥73॥
स्मिपूङ्रञ्ज्वशां सनि ॥74॥
किरश्च पञ्चभ्यः ॥75॥
रुदादिभ्यः सार्वधातुके ॥76॥
ईशः से ॥77॥
ईडजनोर्ध्वे च ॥78॥
लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य ॥79॥
अतो येयः ॥80॥
आतो ङितः ॥81॥
आने मुक् ॥82॥
ईदासः ॥83॥
अष्टन आ विभक्तौ ॥84॥
रायो हलि ॥85॥
युष्मदस्मदोरनादेशे ॥86॥
द्वितीयाया च ॥87॥
प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम् ॥88॥
योऽचि ॥89॥
शेषे लोपः ॥90॥
मपर्यन्तस्य ॥91॥
युवावौ द्विवचने ॥92॥
यूयवयौ जसि ॥93॥
त्वाहौ सौ ॥94॥
तुभ्यमह्यौ ङयि ॥95॥
तवममौ ङसि ॥96॥
त्वमावेकवचने ॥97॥
प्रत्ययोत्तरपदयोश्च ॥98॥
त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ ॥99॥
अचि र ऋतः ॥100॥
जरया जरसन्यतरस्याम् ॥101॥

त्यदादीनामः ॥102॥
किमः कः ॥103॥
कु तिहोः ॥104॥
क्वाऽति ॥105॥
तदोः सः सावनन्त्ययोः ॥106॥
अदस औ सुलोपश्च ॥107॥
इदमो मः ॥108॥
दश्च ॥109॥
यः सौ ॥110॥
इदोऽय् पुंसि ॥111॥
अनाप्यकः ॥112॥
हलि लोपः ॥113॥
मृजेर्वृद्धिः ॥114॥
अचो ञ्णिति ॥115॥
अत उपधायाः ॥116॥
तद्धितेष्वचामादेः ॥117॥
किति च ॥118॥

तृतीयः पादः

देविकरशिंशपादित्यवाड्दीर्घसत्रश्रेयसामात् ॥1॥
केकयमित्रयुप्रलयानां यादेरियः ॥2॥
न य्वाभ्यां पदान्ताभ्यां पूर्वौ तु ताभ्यामैच् ॥3॥
द्वारादीनां च ॥4॥
न्यग्रोधस्य च केवलस्य ॥5॥
न कर्मव्यतिहारे ॥6॥
स्वागतादीनां च ॥7॥
श्वादेरिञि ॥8॥
पदान्तस्याऽन्यतरस्याम् ॥9॥
उत्तरपदस्य ॥10॥
अवयवाद् ऋतोः ॥11॥
सुसर्वार्धाज्जनपदस्य ॥12॥
दिशोऽमद्राणाम् ॥13॥

प्राचां ग्रामनगराणाम् ॥14॥

संख्यायाः संवत्सरसंख्यस्य च ॥15॥

वर्षस्याऽभविष्यति ॥16॥

परिमाणान्तस्याऽसंज्ञाशाणयोः ॥17॥

जे प्रोष्ठपदानाम् ॥18॥

हृद्भगसिन्ध्वन्ते पूर्वपदस्य च ॥19॥

अनुशतिकादीनां च ॥20॥

देवताद्वन्द्वे च ॥21॥

नेन्द्रस्य परस्य ॥22॥

दीर्घाच्च वरुणस्य ॥23॥

प्राचां नगरान्ते ॥24॥

जङ्गलधेनुवलजान्तस्य विभाषितमुत्तरम् ॥25॥

अर्धात् परिमाणस्य पूर्वस्य तु वा ॥26॥

नाऽतः परस्य ॥27॥

प्रवाहणस्य ढे ॥28॥

तत्प्रत्ययस्य च ॥29॥

नञः शुचीश्वरक्षेत्रज्ञकुशलनिपुणानाम् ॥30॥

यथातथयथापुरयोः पर्यायेण ॥31॥

हनस्तोऽचिण्णलोः ॥32॥

आतो युक् चिण्कृतोः ॥33॥

नोदात्तोपदेशस्य मान्तस्याऽनाचमेः ॥34॥

जनिवध्योश्च ॥35॥

अर्तिह्रीव्लीरीक्नूयीक्ष्माय्यातां पुग् णौ ॥36॥

शाच्छासाह्वाव्यवेपां युक् ॥37॥

वो विधूनने जुक् ॥38॥

लीलोर्नुग्लुकावन्यतरस्यां स्नेहविपातने ॥39॥

भियो हेतुभये षुक् ॥40॥

स्फायो वः ॥41॥

शदेरगतौ तः ॥42॥

रुहः पोऽन्यतरस्याम् ॥43॥

प्रत्ययस्थात् कात् पूर्वस्यात इदाप्यसुपः ॥44॥

न यासयोः ॥45॥
उदीचामातः स्थाने यकपूर्वायाः ॥46॥
भस्त्रैषाजाज्ञाद्वास्वा नञ्पूर्वाणमपि ॥47॥
अभाषितपुंस्काच्च ॥48॥
आदाचार्याणाम् ॥49॥
ठस्येकः ॥50॥
इसुसुक्तान्तात् कः ॥51॥
चजोः कु घिण्ण्यतोः ॥52॥
न्यङ्क्वादीनां च ॥53॥
हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु ॥54॥
अभ्यासाच्च ॥55॥
हेरचङि ॥56॥
सन्लिटोर्जेः ॥57॥
विभाषा चेः ॥58॥
न क्वादेः ॥59॥
अजिव्रज्योश्च ॥60॥
भुजन्युब्जौ पाण्युपतापयोः ॥61॥
प्रयाजानुयाजौ यज्ञाङ्गे ॥62॥
वञ्चेर्गतौ ॥63॥
ओक उचः के ॥64॥
ण्य आवश्यके ॥65॥
यजयाचरुचप्रवचर्चश्च ॥66॥
वचोऽशब्दसंज्ञायाम् ॥67॥
प्रयोज्यनियोज्यौ शक्यार्थे ॥68॥
भोज्यं भक्ष्ये ॥69॥
घोर्लोपो लेटि वा ॥70॥
ओतः श्यनि ॥71॥
क्सस्याऽचि ॥72॥
लुग् वा दुहदिहलिहगुहामात्मनेपदे दन्त्ये ॥73॥
शमामष्टानां दीर्घः श्यनि ॥74॥
ष्ठिवुक्लमुचमां शिति ॥75॥

क्रमः परस्मैपदेषु ॥76॥

इषुगमियमां छः ॥77॥

पाघ्राध्मास्थाम्नादाण्दृश्यर्तिसर्तिशदसदसदां पिबजिघ्रधमतिष्ठमनयच्छपश्यच्छ-
श्यच्छधौशीयसीदाः ॥78॥

ज्ञाजनोर्जा ॥79॥

प्वादीनां ह्रस्वः ॥80॥

मीनातेर्निगमे ॥81॥

मिदेर्गुणः ॥82॥

जुसि च ॥83॥

सार्वधातुकार्धधातुकयोः ॥84॥

जाग्रोऽविचिण्णल्ङित्सु ॥85॥

पुगन्तलघूपधस्य च ॥86॥

नाऽभ्यस्तस्याऽचि पिति सार्वधातुके ॥87॥

भूसुवोस्तिङि ॥88॥

उतो वृद्धिर्लुकि हलि ॥89॥

ऊर्णोतेर्विभाषा ॥90॥

गुणोऽपृक्ते ॥91॥

तृणह इम् ॥92॥

ब्रुव ईट् ॥93॥

यङो वा ॥94॥

तुरुस्तुशम्यमः सार्वधातुके ॥95॥

अस्तिरि चोऽपृक्ते ॥96॥

बहुलं छन्दसि ॥97॥

रुदश्च पञ्चभ्यः ॥98॥

अड् गार्ग्यगालवयोः ॥99॥

अदः सर्वेषाम् ॥100॥

अतो दीर्घो यञि ॥101॥

सुपि च ॥102॥

बहुवचने झल्येत् ॥103॥

ओसि च ॥104॥

आङि चापः ॥105॥

संबुद्धौ च ॥106॥

अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः ॥107॥

ह्रस्वस्य गुणः ॥108॥

जसि च ॥109॥

ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः ॥110॥

घेर्ङिति ॥111॥

आण्नद्याः ॥112॥

याडापः ॥113॥

सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च ॥114॥

विभाषा द्वितीयातृतीयाभ्याम् ॥115॥

ङेराम् नद्याम्नीभ्यः ॥116॥

इदुद्भ्याम् ॥117॥

औदच्च घेः ॥118॥

आङो नाऽस्त्रियाम् ॥119॥

चतुर्थः पादः

णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः ॥1॥

नाऽग्लोपिशास्वृदिताम् ॥2॥

भ्राजभासभासदीपजीवमीलपीडामन्यतरस्याम् ॥3॥

लोपः पिबतेरीच्चाऽभ्यासस्य ॥4॥

तिष्ठतेरित् ॥5॥

जिघ्रतेर्वा ॥6॥

उर्ऋत् ॥7॥

नित्यं छन्दसि ॥8॥

दयतेर्दिगि लिटि ॥9॥

ऋतश्च संयोगादेर्गुणः ॥10॥

ऋच्छत्यृताम् ॥11॥

शृदॄप्रां ह्रस्वो वा ॥12॥

केऽणः ॥13॥

न कपि ॥14॥

आपोऽन्यतरस्याम् ॥15॥

ऋदृशोऽङि गुणः ॥16॥

अस्यतेस्थुक् ॥17॥

श्वयतेरः ॥18॥

पतः पुम् ॥19॥

वच उम् ॥20॥

शीङः सार्वधातुके गुणः ॥21॥

अयङ् यि क्ङिति ॥22॥

उपसर्गाद्ध्रस्व ऊहतेः ॥23॥

एतेर्लिङि ॥24॥

अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः ॥25॥

च्वौ च ॥26॥

रीङ् ऋतः ॥27॥

रिङ् शयग्लिङ्क्षु ॥28॥

गुणोऽर्तिसंयोगाद्योः ॥29॥

यङि च ॥30॥

ई घ्राध्मोः ॥31॥

अस्य च्वौ ॥32॥

क्यचि च ॥33॥

अशनायोदन्यधनाया बुभुक्षापिपासागर्धेषु ॥34॥

न च्छन्दस्यपुत्रस्य ॥35॥

दुरस्युर्द्रविणस्युर्वृषण्यतिरिषण्यति ॥36॥

अश्वाघस्याऽत् ॥37॥

देवसुम्नयोर्यजुषि काठके ॥38॥

कव्यध्वरपृतनस्यर्चि लोपः ॥39॥

द्यतिस्यतिमास्थामित् ति किति ॥40॥

शाच्छोरन्यतरस्याम् ॥41॥

दधातेर्हिः ॥42॥

जहातेश्च क्त्वि ॥43॥

विभाषा छन्दसि ॥44॥

सुधितवसुधितनेमधितधिष्वधिषीय च ॥45॥

दो दद् घोः ॥46॥

अच उपसर्गात् तः ॥47॥

अपां भि ॥48॥
सः स्याधधान्के ॥49॥
तासस्त्योर्लोपः ॥50॥
रि च ॥51॥
ह एति ॥52॥
यीवर्णयोर्दीधीवेव्योः ॥53॥
सनि मीमाघुरभलभशकपतपदामच इस् ॥54॥
आप्ज्ञप्यृधामीत् ॥55॥
दम्भ इच्च ॥56॥
मुचोऽकर्मकस्य गुणो वा ॥57॥
अत्र लोपोऽभ्यासस्य ॥58॥
ह्रस्वः ॥59॥
हलादिः शेषः ॥60॥
शर्पूर्वाः खयः ॥61॥
कुहोश्चुः ॥62॥
न कवतेर्यङि ॥63॥
कृषेश्छन्दसि ॥64॥
दाधर्तिर्धर्ति दर्धर्षिबोभूतुतेतिक्तेऽलर्ष्यापनीफणत्संसनिष्यदत्करिक्रत्कनिक्रदद्भ-
रिभ्रद्दविध्वतोदविद्युतत्तरित्रतःसरीसृपतंवरीवृजन्मर्मृज्यागनीगन्तीति च ॥65॥
उरत् ॥65॥
द्युतिस्वाप्योः संप्रसारणम् ॥66॥
व्यथो लिटि ॥68॥
दीर्घ इणः किति ॥69॥
अत आदेः ॥70॥
तस्मान्नुड् द्विहलः ॥71॥
अश्नोतेश्च ॥72॥
भवतेरः ॥73॥
ससूवेति निगमे ॥74॥
निजां त्रयाणां गुणः श्लौ ॥75॥
भृञामित् ॥76॥
अर्तिपिपर्त्योश्च ॥77॥

वहलं छन्दसि ॥78॥

सन्यतः ॥79॥

ओः पुयण्ज्यपरे ॥80॥

स्रवतिशृणोतिद्रवतिप्रवतिप्लवतिच्यवतीनां वा ॥81॥

गुणो यङ्लुकोः ॥82॥

दीर्घोऽकितः ॥83॥

नीग् वञ्चुस्रंसुध्वंसुकसपतपदस्कन्दाम् ॥84॥

नुगतोऽनुनासिकान्तस्य ॥85॥

जपजभदहदशभञ्जपशां च ॥86॥

चरफलोश्च ॥87॥

उत् परस्याऽत ॥88॥

ति च ॥89॥

रीगृदुपधस्य च ॥90॥

रुग्रिकौ च लुकि ॥91॥

ऋतश्च ॥92॥

सन्वल्लघुनि चङ्परेऽनग्लोपे ॥93॥

दीर्घो लघोः ॥94॥

अत् स्मृदृत्वरप्रथम्रदस्तृस्पशाम् ॥95॥

विभाषा वेष्टिचेष्ट्योः ॥96॥

ईच गणः ॥97॥

अष्टमोऽध्यायः

प्रथमः पादः

सर्वस्य द्वे ॥1॥
तस्य परमाम्रेडितम् ॥2॥
अनुदात्तं च ॥3॥
नित्यवीप्सयोः ॥4॥
परेर्वर्जने ॥5॥
प्रसमुपोदः पादपूरणे ॥6॥
उपर्यध्यधसः सामीप्ये ॥7॥
वाक्यादेरामन्त्रितस्याऽसूयासंमतिकोपकुत्सनभर्त्सनेषु ॥8॥
एकं बहुव्रीहिवत् ॥9॥
आबाधे च ॥10॥
कर्मधारयवदुत्तरेषु ॥11॥
प्रकारे गुणवचनस्य ॥12॥
अकृच्छ्रे प्रियसुखयोरन्यतरस्याम् ॥13॥
यथास्वे यथायथम् ॥14॥
द्वन्द्वं रहस्यमर्यादावचनव्युत्क्रमणयज्ञपात्रप्रयोगाभिव्यक्तिषु ॥5॥
पदस्य ॥16॥
पदात् ॥17॥
अनुदात्तं सर्वमपादादौ ॥18॥
आमन्त्रितस्य च ॥19॥
युष्मदस्मदोः षष्ठीचतुर्थीद्वितीयास्थयोर्वान्नावौ ॥20॥
बहुवचनस्य वस्नसौ ॥21॥

नमयावेकवचनस्य ॥22॥

त्वामौ द्वितीयायाः ॥23॥

न चवाहाहैवयुक्ते ॥24॥

पश्यार्थैश्चाऽनालोचने ॥25॥

सपूर्वायाः प्रथमाया विभाषा ॥26॥

तिङो गोत्रादीनि कुत्सनाभीक्ष्ण्ययोः ॥27॥

तिङ्ङतिङः ॥28॥

न लुट् ॥29॥

निपातैर्यद्यदिहन्तकुविन्नेच्चेच्चण्कच्चिद्यत्रयुक्तम् ॥30॥

नह प्रत्यारम्भे ॥31॥

सत्यं प्रश्ने ॥32॥

अङ्गाप्रातिलोम्ये ॥33॥

यावद्यथाभ्याम् ॥34॥

पूजायां आऽनन्तरम् ॥35॥

उपसर्गव्यपेतं च ॥36॥

तुपश्यपश्यताहैः पूजायाम् ॥37॥

अहो च ॥38॥

शेषे विभाषा ॥39॥

पुरा च परीप्सायाम् ॥40॥

नन्वित्यनुज्ञैषणायाम् ॥41॥

किं क्रियाप्रश्नेऽनुपसर्गमप्रतिषिद्धम् ॥42॥

लोपे विभाषा ॥43॥

एहि मन्ये प्रहासे लृट् ॥44॥

जात्वपूर्वम् ॥45॥

किंवृत्तं च चिदुत्तरम् ॥46॥

आहो उताहो चाऽनन्तरम् ॥47॥

शेषे विभाषा ॥48॥

गत्यर्थलोटा लृण्न चेत् कारकं सर्वान्यत् ॥48॥

लोट् च ॥50॥

विभाषितं सोपसर्गमनुत्तमम् ॥51॥

हन्त च ॥52॥

आम एकान्तरमामन्त्रितमनन्तिके ॥53॥

यद्धितुपरं छन्दसि ॥54॥

चनचिदिवगोत्रादितद्धिताम्रेडितेष्वगतेः ॥55॥

चवायोगे प्रथमा ॥56॥

हेति क्षियायाम् ॥57॥

अहेति विनियोगे च ॥58॥

चाहलोप एवेत्यवधारणम् ॥59॥

चादिलोपे विभाषा ॥60॥

वैवावेति च च्छन्दसि ॥61॥

एकान्याभ्यां समर्थाभ्याम् ॥62॥

यद्वृत्तान्नित्यम् ॥63॥

पूजनात् पूजितमनुदात्तम् ॥64॥

सगतिरपि तिङ् ॥65॥

कुत्सने च सुप्यगोत्रादौ ॥66॥

गतिर्गतौ ॥67॥

तिङि चोदात्तवति ॥68॥

आमन्त्रितं पूर्वमविद्यमानवत् ॥69॥

नाऽमन्त्रिते समानाधिकरणे ॥70॥

सामान्यवचनं विभाषितं विशेषवचने ॥71॥

द्वितीयः पादः

पूर्वत्रासिद्धम् ॥1॥

नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति ॥2॥

न मु ने ॥3॥

उदात्तस्वरितयोर्यणः स्वरितोऽनुदात्तस्य ॥4॥

एकादेश उदात्तेनोदात्तः ॥5॥

स्वरितो वाऽनुदात्ते पदादौ ॥6॥

नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य ॥7॥

न ङिसंबुद्ध्योः ॥8॥

मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः ॥9॥

झयः ॥10॥

संज्ञायाम् ॥11॥

आसन्दीवदष्ठीवच्चक्रवत्कक्षीवद्रुमण्वच्चर्मण्वती ॥12॥

उदन्वानुदधौ च ॥13॥

राजन्वान् सौराज्ये ॥14॥

छन्दसीरः ॥15॥

अनो नुट् ॥16॥

नाद् घस्य ॥17॥

कृपो रो लः ॥18॥

उपसर्गस्यायतौ ॥19॥

ग्रो यङि ॥20॥

अचि विभाषा ॥21॥

परेश्च घाङ्कयोः ॥22॥

संयोगान्तस्य लोपः ॥23॥

रात् सस्य ॥24॥

धि च ॥25॥

झलो झलि ॥26॥

ह्रस्वादङ्गात् ॥27॥

इट ईटि ॥28॥

स्कोः संयोगाद्योरन्ते च ॥29॥

चोः कुः ॥30॥

होढः ॥31॥

दादेर्धातोर्घः ॥32॥

वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम् ॥33॥

नहो धः ॥34॥

आहस्थः ॥35॥

व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः ॥36॥

एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः ॥37॥

दधस्तथोश्च ॥38॥

झलां जशोऽन्ते ॥39॥

झषस्तथोर्धोऽधः ॥40॥

षढोः कः सि ॥41॥

रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः ॥42॥

संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः ॥43॥

ल्वादिभ्यः ॥44॥

ओदितश्च ॥45॥

क्षियो दीर्घात् ॥46॥

श्योऽस्पर्शे ॥47॥

अञ्चोऽनपादाने ॥48॥

दिवोऽविजिगीषायाम् ॥49॥

निर्वाणोऽवाते ॥50॥

शुषः कः ॥51॥

पचो वः ॥52॥

क्षायो मः ॥53॥

प्रस्त्योऽन्यतरस्याम् ॥54॥

अनुपसर्गात् फुल्लक्षीबकृशोल्लाघाः ॥55॥

नुदविदोन्दत्राघ्राह्रीभ्योऽन्यतरस्याम् ॥56॥

न ध्याख्यापृमूर्च्छिमदाम् ॥57॥

वित्तो भोगप्रत्यययोः ॥58॥

भित्तं शकलम् ॥59॥

ऋणमाधमर्ण्ये ॥60॥

नसत्तनिषत्तानुत्तप्रतूर्तसूर्तगूर्तानि छन्दसि ॥61॥

क्विन्प्रत्ययस्य कुः ॥62॥

नशेर्वा ॥63॥

मो नो धातोः ॥64॥

म्वोश्च ॥65॥

ससजुषो रुः ॥66॥

अवयाःश्वेतवाःपुरोडाश्च ॥67॥

अहन् ॥68॥

रोऽसुपि ॥69॥

अम्नरूधरवरित्युभयथा छन्दसि ॥70॥

भुवश्च महाव्याहृतेः ॥71॥

वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः ॥72॥

तिप्यनस्तेः ॥73॥

सिपि धातो रुर्वा ॥74॥

दश्च ॥75॥

र्वोरुपधाया दीर्घ इकः ॥76॥

हलि च ॥77॥

उपधायां च ॥78॥

न भकुर्छुराम् ॥79॥

अदसोऽसेर्दादु दो मः ॥80॥

एत ईद्बहुवचने ॥81॥

वाक्यस्य टेः प्लुत उदात्त ॥82॥

प्रत्यभिवादेऽशूद्रे ॥83॥

दूराद्धूते च ॥84॥

हैहेप्रयोगे हैहयोः ॥85॥

गुरोरनृतोऽनन्त्यस्याप्येकैकस्य प्राचाम् ॥86॥

ओमभ्यादाने ॥87॥

ये यज्ञकर्मणि ॥88॥

प्रणवष्टेः ॥89॥

याज्यान्तः ॥90॥

ब्रूहिप्रेष्यश्रौषड्वौषडावहानामादेः ॥91॥

अग्नीत्प्रेषणे परस्य च ॥92॥

विभाषा पृष्टप्रतिवचने हेः ॥93॥

निगृह्यानुयोगे च ॥94॥

आम्रेडितं भर्त्सने ॥95॥

अङ्गयुक्तं तिङाकाङ्क्षम् ॥96॥

विचार्यमाणानाम् ॥97॥

पूर्वं तु भाषायाम् ॥98॥

प्रतिश्रवणे च ॥99॥

अनुदात्तं प्रश्नान्ताभिपूजितयोः ॥100॥

चिदिति चोपमार्थे प्रयुज्यमाने ॥101॥

उपरिस्विदासीदिति च ॥102॥

स्वरितमाम्रेडितेऽसूयासंमतिकोपकुत्सनेषु ॥103॥

क्षियाशीःप्रैषेषु तिङाकाङ्क्षम् ॥104॥

अनन्त्यस्यापि प्रश्नाख्यानयोः ॥105॥

प्लुतावैच इदुतौ ॥106॥

एचोऽप्रगृह्यस्यादूराद्धूते पूर्वस्यार्धस्यादुत्तरस्येदुतौ ॥107॥

तयोर्य्वावचि संहितायाम् ॥108॥

तृतीयः पादः

मतुवसो रु संबुद्धौ छन्दसि ॥1॥

अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा ॥2॥

आतोऽटि नित्यम् ॥3॥

अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः ॥4॥

समः सुटि ॥1॥

पुमः खय्यम्परे ॥6॥

नश्छव्यप्रशान् ॥7॥

उभयथर्क्षु ॥8॥

दीर्घादटि समानपादे ॥॥1॥॥

नॄन् पे ॥10॥

स्वतवान् पायौ ॥11॥

कानाम्रेडिते ॥12॥

ढो ढे लोपः ॥13॥

रो रि ॥14॥

खरवसानयोर्विसर्जनीयः ॥15॥

रोः सुपि ॥16॥

भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि ॥17॥

व्योर्लघुप्रयत्नतरः शाकटायनस्य ॥18॥

लोपः शाकल्यस्य ॥19॥

ओतो गार्ग्यस्य ॥20॥

उञि च पदे ॥21॥

हलि सर्वेषाम् ॥22॥

मोऽनुस्वारः ॥23॥

नश्चाऽपदान्तस्य झलि ॥24॥

मो राजि समः क्वौ ॥25॥

हे मपरे वा ॥26॥

नपरं नः ॥27॥

ङ्णोः कुक्टुक् शरि ॥28॥

डः सि धुट् ॥29॥

नश्च ॥28॥

शि तुक् ॥31॥

ङमो ह्रस्वादचि ङमुण नित्यम् ॥32॥

मय उञो वो वा ॥33॥

विसर्जनीयस्य सः ॥34॥

शर्परे विसर्जनीयः ॥35॥

वा शरि ॥36॥

कुप्वोXक Xपौ च ॥37॥

सोऽपदादौ ॥38॥

इणः षः ॥39॥

नमस्पुरसोर्गत्योः ॥40॥

इदुदुपधस्य चाऽप्रत्ययस्य ॥41॥

तिरसोऽन्यतरस्याम् ॥42॥

द्विस्त्रिश्चतुरिति कृत्वोऽर्थे ॥43॥

इसुसोः सामर्थ्ये ॥44॥

नित्यं समासेऽनुत्तरपदस्थस्य ॥45॥

अतः कृकमिकंसकुम्भपात्रकुशाकर्णीष्वनव्ययस्य ॥46॥

अधः शिरसी पदे ॥47॥

कस्कादिषु च ॥48॥

छन्दसि वाऽप्राम्रेडितयोः ॥49॥

कः करत्करतिकृधिकृतेष्वनदितेः ॥50॥

पञ्चम्याः परावध्यर्थे ॥51॥

पातौ च बहुलम् ॥52॥

षष्ठ्याः पतिपुत्रपृष्ठपदपयस्पोषेषु ॥53॥

इडाया वा ॥54॥

अपदान्तस्य मूर्धन्य ॥55॥

सहेः साडः सः ॥56॥

इण्कोः ॥57॥

नुम्विसर्जनीयशर्व्यवायेऽपि ॥58॥
आदेशप्रत्यययोः ॥59॥
शासिवसिघसीनां च ॥60॥
स्तौतिण्योरेव षण्यभ्यासात् ॥61॥
सः स्विदिस्वदिसहीनां च ॥62॥
प्राक् सितादड्व्यवायेऽपि ॥63॥
स्थादिष्वभ्यासेन चाभ्यासस्य ॥64॥
उपसर्गात् सुनोतिसुवतिस्यतिस्तौतिस्तोभतिस्थासेनयसेधसिचसञ्जस्वञ्जाम् ॥65॥
सदिरप्रतेः ॥66॥
स्तन्भेः ॥67॥
अवाच्चाऽलम्बनाविदूर्ययोः ॥68॥
वेश्च स्वनो भोजने ॥69॥
परिनिविभ्यः सेवसितसयसिवुसहसुट्स्तुस्वञ्जाम् ॥70॥
सिवादीनां वाऽड्व्यवायेऽपि ॥71॥
अनुविपर्यभिनिभ्यः स्यन्दतेरप्राणिषु ॥72॥
वेः स्कन्देरनिष्ठायाम् ॥73॥
परेश्च ॥74॥
परिस्कन्दः प्राच्यभरतेषु ॥75॥
स्फुरतिस्फुलत्योर्निर्निविभ्यः ॥76॥
वेः स्कभ्नातेर्नित्यम् ॥77॥
इणः षीध्वंलुङ्लिटां धोऽङ्गात् ॥78॥
विभाषेटः ॥79॥
समासेऽङ्गुलेः सङ्गः ॥80॥
भीरोः स्थानम् ॥81॥
अग्नेः स्तुत्स्तोमसोमाः ॥82॥
ज्योतिरायुषः स्तोमः ॥83॥
मातृपितृभ्यां स्वसा ॥84॥
मातुःपितुर्भ्यामन्यतरस्याम् ॥85॥
अभिनिसः स्तनः शब्दसंज्ञायाम् ॥86॥
उपसर्गप्रादुर्भ्यामस्तिर्यच्परः ॥87॥
सुविनिर्दुर्भ्यः सुपिसूतिसमाः ॥88॥

निनदीभ्यां स्नातेः कौशले ॥89॥
सूत्रं प्रतिष्णातम् ॥90॥
कपिष्ठलो गोत्रे ॥91॥
प्रष्ठोऽग्रगामिनि ॥92॥
वृक्षासनयोर्विष्टरः ॥93॥
छन्दोनाम्नि च ॥94॥
गवियुधिभ्यां स्थिरः ॥95॥
विकुशमिपरिभ्यः स्थलम् ॥96॥
अम्बाम्बगोभूमिसव्यापद्वित्रिकुशेकुशङ्क्वङ्गुमञ्जिपुञ्जिपरमेबर्हिर्दिव्यग्निभ्यः स्थः ॥97॥
सुषामादिषु च ॥98॥
एति संज्ञायामगात् ॥99॥
नक्षत्राद् वा ॥100॥
ह्रस्वात् तादौ तद्धिते ॥101॥
निसस्तपतावनासेवने ॥102॥
युष्मत्तत्तक्षुःष्वन्तःपादम् ॥103॥
यजुष्येकेषाम् ॥104॥
स्तुतस्तोमयोश्छन्दसि ॥105॥
पूर्वपदात् ॥106॥
सुञः ॥107॥
सनोतेरनः ॥108॥
सहेः पृतनर्ताभ्यां च ॥109॥
न रपरसृपिसृजिस्पृशिस्पृहिसवनादीनाम् ॥110॥
सात् पदाद्योः ॥111॥
सिचो यङि ॥112॥
सेधतेर्गतौ ॥113॥
प्रतिस्तब्धनिस्तब्धौ च ॥114॥
सोढः ॥115॥
स्तम्भुसिवुसहां चङि ॥116॥
सुनोतेः स्यसनोः ॥117॥
सदेः परस्य लिटि ॥118॥

निर्व्यभिभ्योऽड्व्यवाये वा छन्दसि ॥119॥

चतुर्थः पादः

रषाभ्यां नो णः समानपदे ॥1॥
अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि ॥2॥
पूर्वपदात् संज्ञायामगः ॥3॥
वनं पुरगामिश्रकासिध्रकासारिकाकोटराग्रेभ्यः ॥4॥
प्रनिरन्तः शरेक्षुप्लक्षाम्रकार्ष्यखदिरपीयूक्षाभ्योऽसंज्ञायामपि ॥5॥
विभाषौषधिवनस्पतिभ्यः ॥6॥
अह्नोऽदन्तात् ॥7॥
वाहनमाहितात् ॥8॥
पानं देशे ॥9॥
वा भावकरणयोः ॥10॥
प्रातिपदिकान्तनुम्विभक्तिषु च ॥11॥
एकाजुत्तरपदे णः ॥12॥
कुमति च ॥13॥
उपसर्गादसमासेऽपि णोपदेशस्य ॥14॥
हिनु मीना ॥15॥
आनि लोट् ॥16॥
नेर्गदनदपतपदघुमास्यतिहन्तियातिवातिद्रातिप्सातिवपतिवहतिशाम्यतिचिनोति
देग्धिषु च ॥17॥
शेषे विभाषाऽकखादावषान्त उपदेशे ॥18॥
अनितेरन्तः ॥19॥
उभौ साभ्यासस्य ॥20॥
हन्तेरत्पूर्वस्य ॥21॥
वमोर्वा ॥22॥
अन्तरदेशे ॥23॥
अयनं च ॥24॥
छन्दस्यृदवग्रहात् ॥25॥
नश्च धातुस्थोरुषुभ्यः ॥26॥
उपसर्गादनोत्परः ॥27॥
कृत्यचः ॥28॥

णेर्विभाषा ॥29॥

हलश्चेजुपधात् ॥30॥

इजादेः सनुमः ॥31॥

वा निंसनिक्षनिन्दाम् ॥32॥

न भाभूपूकमिगमिप्यायीवेपाम् ॥33॥

षात् पदान्तात् ॥34॥

नशेः षान्तस्य ॥35॥

पदान्तस्य ॥36॥

पदव्यवायेऽपि ॥37॥

क्षुभ्नादिषु च ॥38॥

स्तोः श्चुना श्चुः ॥39॥

ष्टुना ष्टुः ॥40॥

न पदान्ताट्टोरनाम् ॥41॥

तोः षि ॥42॥

शात् ॥43॥

यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा ॥44॥

अचो रहाभ्यां द्वे ॥45॥

अनचि च ॥46॥

नाऽऽदिन्याक्रोशे पुत्रस्य ॥47॥

शरोऽचि ॥48॥

त्रिप्रभृतिषु शाकटायनस्य ॥49॥

सर्वत्रशाकल्यस्य ॥50॥

दीर्घादाचार्याणाम् ॥51॥

झलां जश् झशि ॥52॥

अभ्यासे चर्च ॥53॥

खरि च ॥54॥

वाऽवसाने ॥55॥

अणोऽप्रगृह्यस्याऽनुनासिकः ॥56॥

अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ॥57॥

वा पदान्तस्य ॥58॥

तोर्लि ॥59॥

उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य ॥60॥
झयो होऽन्यतरस्याम् ॥61॥
शश्छोऽटि ॥62॥
हलो यमां यमि लोपः ॥63॥
झरो झरि सवर्णे ॥64॥
उदात्तदनुदात्तस्य स्वरितः ॥65॥
नोदात्तस्वरितोदयमगार्ग्यकाश्यपगालवानाम् ॥66॥
अ अ ॥67॥

इति श्रीपाणिनिप्रणीतोऽष्टाध्यायीसूत्रपाठः

से मनन में प्रीति और भ्रम की निवृत्ति होती है। इसलिए यह वर्णोच्चारण-विद्या अवश्य जाननी चाहिए।

वर्णों का रूप कैसे प्रकट होता है?

आकाशवायुप्रभवः शरीरात्समुच्चरन् वक्त्रमुपैति नादः।
स्थानान्तरेषु प्रविभज्यमानो वर्णत्वमागच्छति यः स शब्दः॥1॥

आकाश और वायु के संयोग से उत्पन्न होने वाला, नाभि के नीचे से ऊपर उठता हुआ, जो मुख को प्राप्त होता है, उसको 'नाद' कहते हैं। वह कण्ठ आदि स्थानों में विभाग को प्राप्त हुआ वर्ण-भाव को प्राप्त होता है, उसको 'शब्द' कहते हैं।

आत्मा बुद्ध्या समेत्यार्थान् मनो युङ्क्ते विवक्षया।
मनः कायाग्निमाहन्ति स प्रेरयति मारुतम्।
मारुतस्तूरसि चरन्मन्दं जनयति स्वरम्॥

जीवात्मा बुद्धि से अर्थों की संगति करके कहने की इच्छा से मन को युक्त करता, विद्युत्रूप जाठराग्नि को ताड़ता, वह वायु को प्रेरणा करता, और वायु उरःस्थान में विचरता हुआ मन्द स्वर को उत्पन्न करता है।

शब्द का स्वरूप कैसा है? किस फल को प्राप्त करता, और किन पुण्यों से सेवित है?

तमक्षरं ब्रह्म परं पवित्रं गुहाशयं सम्यगुशन्ति विप्राः। स श्रेयसा चाभ्युदयेन चैव सम्यक् प्रयुक्तः पुरुषं युनक्ति ॥2॥

(विप्राः) विद्वान् लोग (तम्) उस आकाश-वायु-प्रतिपादित (अक्षरम्) नाशरहित, (गुहाशयम्) विद्यासुशिक्षासहित बुद्धि में स्थित, (परम्) अत्युत्तम (पवित्रम्) शुद्ध (ब्रह्म) शब्दराशि की (सम्यक्) अच्छे प्रकार (उशन्ति) प्राप्ति की कामना करते हैं। और (स एव) वही (सम्यक् प्रयुक्तः) अच्छे प्रकार प्रयोग किया हुआ शब्द (अभ्युदयेन) शरीर आत्मा मन (च) और स्वसम्बन्धियों के लिए इस संसार के सब सुख, तथा (श्रेयसा) विद्यादि शुभ गुणों के योग (च) और मुक्ति-सुख से (पुरुषम्) मनुष्य को (युनक्ति) युक्त कर देता है। इसलिए इस वर्णोच्चारण की श्रेष्ठ शिक्षा से शब्द के विज्ञान में सब लोग प्रयत्न करें।

शब्द का लक्षण

श्रोत्रोपलब्धिर्बुद्धिनिर्ग्राह्यः प्रयोगेणाभिज्वलित आकाशदेशः शब्द॥

महाभाष्य अ. 1। पा. 1। सू. 2। आ. 2॥

यह 'अ इ उ ण' सूत्र की व्याख्या में लिखा है कि (श्रोत्रोपलब्धिः) जिसका

कान इन्द्रिय से ज्ञान, (बुद्धिनिर्ग्राह्यः) और बुद्धि से निरन्तर ग्रहण (प्रयोगेणाभिज्वलितः) जो उच्चारण से प्रकाशित होता, तथा (आकाशदेशः) जिसके निवास का स्थान आकाश है, (शब्दः) वह 'शब्द' कहाता है।

वर्णमाला में कितने वर्ण हैं?

त्रिषष्टिः॥3॥

तिरसट हैं। और वे अकारादि वर्णों में विभक्त हैं। जैसे—

अकारादि स्वरों का स्वरूप

ह्रस्व	दीर्घ	प्लुत		
			कवर्ग—क ख ग घ ङ।	
अ	आ	अ ३	चवर्ग—च छ ज झ ञ।	
इ	ई	इ ३	टवर्ग—ट ठ ड ढ ण।	
उ	ऊ	इ ३	तवर्ग—त थ द ध न।	
ऋ	ॠ	ऋ ३	पवर्ग—प फ ब भ म।	
ऌ	०	ऌ ३	अन्तस्थ—य र ल व।	
०	ए	ए ३	ऊष्म—श ष स ह।	
०	ऐ	ऐ ३	अयोगवाहरूप	
०	ओ	ओ ३	ः विसर्जनीय,	ꣳ ह्रस्व,
०	औ	औ ३	)(जिह्वामूलीय,	ꣴ दीर्घ,
			)(उपध्मानीय	ँ अनुनासिक चिह्न और
			अनुस्वार	ळ यह अक्षर
			इनको चार यम	भी कहते हैं।

उक्त वर्णों में अवर्ग के वर्ण अकार आदि 'स्वर, और कवर्ग आदि वर्णों के वर्ण 'व्यञ्जन' कहाते हैं। स्वर वर्ण शब्दों में शुद्ध स्वरूप से भी रहते, और व्यञ्जनों के साथ में मात्रा रूप से भी आते हैं। मात्रा रूप स्वरों में जब व्यञ्जन मिलाये जाते हैं, तब प्रत्येक व्यञ्जन बारह प्रकार से कहा जाता है। उसका स्वरूप और संयोगचक्र (जिससे कि व्यञ्जन का परस्पर सम्बन्ध विदित होता है) आगे लिखते हैं—

बारह अक्षरों का स्वरूप

क्	क्	क्	क्	क्	क्	क्	क्	क्	क्	क्	क्
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
ा	ा	ि	ी	ु	ू	े	ै	ो	ौ	ं	ः
क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः

जैसे यह ककार का स्वरों के साथ मेल करके स्वरूप दिखलाया गया है, वैसे ही खकारादि वर्णों का स्वरों के साथ मेल और स्वरूप का विज्ञान बुद्धि में पढ़ने-पढ़ाने वालों को लिख-लिखाकर ठीक-ठीक करना चाहिए।

संयोगचक्रम्

क् य् अ—क्य	ज् ञ् अ—ज्ञ	क् ऋ—कृ	क् व् अ—क्व
क् च् अ—क्च	ह् य् अ—ह्य	क् ॠ—कॄ	क् ष् अ—क्ष
क् र् अ—क्र	ह् व् अ—ह्व	क् लृ—क्लृ	श् य् अ—श्य

स्वरों का लक्षण

स्वयं राजन्त इति स्वरोः॥ महाभाष्य अ. 1। पा. 2। सू. 26। आ. 1॥

जिनके उच्चारण में दूसरे वर्णों के सहाय की अपेक्षा न हो, उन्हें 'स्वर' कहते हैं।

स्वरों की संज्ञा

ऊकालोऽज्झ्स्वदीर्घप्लुतः॥ अ. 1। पा. 2। सू. 27॥

स्वरों की ह्रस्व दीर्घ और प्लुत भेद से तीन संज्ञा हैं। इनके उच्चारण समय का लक्षण यह है कि जितने समय में अङ्गुष्ट के मूल की नाड़ी की गति एक बार होती है उतने समय में ह्रस्व, उससे दूने काल में दीर्घ, और उसके तिगुने काल में प्लुत का उच्चारण करना चाहिए। और स्वरों के उदात्तादि भी गुण है।

उच्चैरुदात्तः॥ अ. 1। 2। 9

ऊर्ध्वध्वनि से उदात्त। और—

नीचैरनुदाताः॥ अ. 1। 2। 30॥

नीचे स्वर से अनुदात्त बोला जाता है।

समाहारः स्वरितः॥ अ. 1। 2। 31॥

उदात्त और अनुदात्त स्वरों को मिलाकर बोलना 'स्वरित' कहाता है।

ह्रस्वं लघु॥ अ. 1। 4। 10॥

ह्रस्व स्वर की 'लघु' संज्ञा। और—

संयोगे गुरु॥ अ. 1। 4। 11॥

जो दो व अधिक व्यञ्जनों का संयोग परे हो, तो पूर्व ह्रस्व अच् की 'गुरु' संज्ञा होती है। जैसे (विप्रः) यहाँ वकार में इकार की गुरु संज्ञा है, क्योंकि इसके परे पकार और रेफ का संयोग है।

दीर्घ च॥ अ. 1। 2। 12॥

और दीर्घ की भी 'गुरु' संज्ञा है।

हलोऽनन्तराः संयोगः 1 । 2 । 7 ॥

अनन्तर अर्थात् अचों का जो व्यवधान उससे रहित हलों की 'संयोग' संज्ञा है।

व्यञ्जन का लक्षण

अन्वग्भवति व्यञ्जनमिति ॥ महाभाष्य अ. 1 । पा. 2 । सू. 29 । आ. 1॥

जिनका उच्चारण बिना स्वर के नहीं हो सकता, वे 'व्यञ्जन' कहते हैं।

उच्चारण करने वालों के गुण

माधुर्य्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः ।

धैर्य लयसमर्थं च षडेते पाठक गुणाः॥

(माधुर्य) वर्णों के उच्चारण में मधुरता, (अक्षरव्यक्तिः) भिन्न-भिन्न अक्षर, (पदच्छेदः) पृथक्-पृथक् पद, (तु) और (सुस्वरः) सुन्दर ध्वनि, (धैर्यम्) धीरता, (च) और (लयसमर्थम्) विराम तथा सार्थकता, और जैसा ह्रस्व दीर्घ प्लुत उदात्त अनुदात्त स्वरित स्वर, आदि आभ्यन्तर और विवारादि बाह्य प्रयत्न से अपने-अपने स्थानों में वर्णों का उच्चारण करना, तथा सत्य-भाषणादि भी वर्णों के उच्चारण करने वालों के गुण हैं।

स्वरों के उच्चारण में दोष

ग्रस्तं निरस्तमविलम्बितं निर्हतमंबूकृतं ध्मातमथो विकम्पितम् ।

सान्दष्टमेणीकृतमर्द्धकं द्रुतं विकीर्णमेताः स्वरदोषभावनाः॥

महाभाष्य अ. 1 । पा. 1 । आ. 1॥

(ग्रस्तम्) जैसे किसी वस्तु को मुख से पकड़कर बोलना, (निरस्तम्) जैसे किसी वस्तु को मुख से ग्रहण करके फैंक देना, (अविलम्बितम्) जिसका उच्चारण पृथक्-पृथक् करना चाहिए उसको वर्णान्तर में मिला के बोलना, (निर्हतम्) जैसे किसी को धक्का देना, (अम्बूकृतम्) जैसे मुख में जल भरके बोलना, (ध्मातम्) जैसे रुई को धुनना, व लोहार की भाठी के समान उच्चारण करना, (विकम्पितम्) जैसे कम्प करके बोलना, (सन्दष्टम्) जैसे किसी वस्तु को दांतों से काटते हुए बोलना, (एणीकृतम्) जैसे हरिण कूदके चलते हैं, वैसे ऊपर-नीचे ध्वनि से बोलना, (अर्द्धकम्) जितने समय में जिस वर्ण का उच्चारण करना चाहिए उसके आधे समय में बोलना, (द्रुतम्) त्वरा से बोलना, (विकीर्णम्) जैसे कोई वस्तु बिखर जाये वैसा उच्चारण करना, ये सब दोष स्वरों के उच्चारण करने वालों के हैं।

अतोऽन्ये व्यञ्जनदोषाः । शश षष इति मा भूत् ।

पलाशः पलाष इति मा भूत्। मञ्चको मञ्जक इति मा भूत्॥

महाभाष्य अ. 1 । पा. 1 । आ. 1 ॥

व्यञ्जनों के उच्चारण में भी दोषों को छोड़कर बोलना चाहिए। जैसे – (शशः) इन तालव्य शकारों के उच्चारण में (षष इति मा भूत्) मूर्द्धन्य षकारों का उच्चारण करना, (पलाशः पलाषः) यहाँ पूर्ववत् जानना। (मञ्चकः) कोई इस च के स्थान में (मञ्जकः) जका उच्चारण करे, इत्यादि व्यञ्जनों के उच्चारण करने वालों के दोष कहाते हैं। इसलिए जिस-जिस अक्षर का जो-जो स्थान प्रयत्न और उच्चारण का क्रम है, वैसा ही उस-उसका उच्चारण करना योग्य है।

इस ग्रन्थ में कितने प्रकरण हैं?

स्थानमिदं करणमिदं प्रयत्न एषो द्विधाऽनिलः।

स्थानं पीडयति वृत्तिकारः प्रक्रम एषोऽथ नाभितलान् ॥4॥

स्थान, करण, आभ्यान्तर प्रयत्न, बाह्य प्रयत्न, स्थान में वायु का ताड़न, वृत्तिकार, प्रक्रम और नाभि के अधोभाग से वायु का उत्थान, ये आठ (८) प्रकरण क्रम से इस ग्रन्थ में हैं।

प्रथमं प्रकरणम्

1. **अकुहविसर्जनीयाः कण्ठ्याः ॥5॥**

अ आ अ ३, कु अर्थात् क ख ग घ ङ, ह और : विसर्जनीय इन वर्णों का कण्ठ स्थान है। अर्थात् जो जिह्वा का मूल कण्ठ का अग्रभाग काकल्क के नीचे देश है, उस कण्ठ स्थान से इनका शुद्ध उच्चारण होता है।

2. **हविसर्जनीयावुरस्यावेकेषाम् ॥6॥**

कई एक आचार्यों का ऐसा मत है कि हकार और : विसर्जनीय का उच्चारण उरःस्थान अर्थात् कण्ठक के नीचे और स्तनों के ऊपर स्थान से करना चाहिए।

3. **जिह्वामूलीयो जिह्व्यः ॥7॥**

और वे ऐसा भी मानते हैं कि जिसलिए जीभ के मूल से ᳵइस जिह्वामूलीय का उच्चारण होता है, इसलिए यह जिह्वामूलीय कहाता है।

4. **कवर्ग ऋवर्णश्च जिह्व्यः ॥8॥**

तथा उनका यह भी मत है कि जिस कारण कवर्ग और ऋवर्ण अर्थात् ह्रस्व दीर्घ और प्लुत का जिह्वामूल भी स्थान है, इससे इनको जिह्वा की जड़ में से भी बोलना अशुद्ध नहीं।

5. **सर्वमुखस्थानमवर्णमित्येके ॥9॥**

जिस लिए अवर्ण का उच्चारण सब मुख में करना शुद्ध है, इस लिए कोई आचार्य अवर्ण को सर्वमुखस्थानवाला कहते हैं।

6. **कण्ठ्यान् आस्यमात्रानित्येके ॥10॥**

तथा कोई एक आचार्यों का मत ऐसा भी कि है जिन-जिन वर्णों का कण्ठ स्थान है, उन सबका उच्चारण मुखमात्र में होना भी अशुद्ध नहीं।

7. **इचुयशास्तालव्याः ॥11॥**

जो इ ई ई ३, चु अर्थात् च छ ज झ ञ, य और श हैं, इनका तालु स्थान अर्थात्

दांतों के ऊपर से उच्चारण करना चाहिए। जैसे च के उच्चारण में जिस स्थान में जैसी जीभ की क्रिया करनी पड़ती है, वैसे शकार का उच्चारण करना योग्य है।

8. ऋटुरषा मूर्धन्याः ॥12॥

ऋ ॠ ऋ 3, (टु=) ट ठ ड ढ ण, र और ष का उच्चारण मूर्द्धा स्थान अर्थात् तालु के ऊपर से करना चाहिए। जैसी क्रिया ट के उच्चारण में की जाती है, वैसी ही ष के उच्चारण में करनी उचित है।

9. रेफो दन्तमूलीय एकेषाम् ॥13॥

कई एक आचार्यों का मत ऐसा भी है कि र का उच्चारण दांत के मूल से भी करना योग्य है।

10. दन्तमूलस्तु तवर्गः ॥14॥

वैसे ही कई आचार्यों के मत में तवर्ग अर्थात् त थ द ध और न का उच्चारण दन्तमूल स्थान से भी करना अच्छा है।

11. लृतुलसा दन्त्याः ॥15॥

लृ लॄ 3, तु अर्थात् त थ द ध न, ल और स इन वर्णों का दन्त स्थान अर्थात् दांतों में जिह्वा लगाके उच्चारण करना है।

12. वकारो दन्त्यौष्ठ्यः ॥16॥

व का उच्चारण दांत और ओष्ठ से होना चाहिए।

13. सृक्किणीस्थानमेकेषाम् ॥17॥

कई एक आचार्यों के मत में वकार को सृक्किणी स्थान से बोलना चाहिए। जो दांत और ओष्ठ के बीच में स्थान है, उसे 'सृक्किणी' कहते हैं।

14. उपूपध्मानीय ओष्ठ्याः ॥18॥

उ ऊ उ 3, (पु=) प फ ब भ म और ⨯ इस उपध्मानीय को ओष्ठ स्थान से उच्चारण करना शुद्ध है।

15. अनुस्वारयमा नासिक्याः ॥19॥

ळ को छोड़के(ँ ँ ४४ ँ) और अनुस्वार को नासिका से बोलना शुद्ध है।

16. कण्ठ्यनासिक्यमनुवारमेके ॥20॥

कण्ठ और नासिका स्थानवाले ङकार को कोई आचार्य्य अनुस्वार के समान केवल नासिकास्थानी कहते हैं।

17. यमाश्च नासिक्यजिह्वामूलीया एकेषाम् ॥21॥

कई एक आचार्य्यों के मत से यत अर्थात् (४४ ँ ँ) ये भी नासिका और जिह्वामूल स्थान वाले हैं।

18. **एदैतौ कण्ठ्यतालव्यौ ॥22॥**

ए ऐ कण्ठ और तालु से बोलने योग्य हैं।

19. **ओदौतौ कण्ठ्यौष्ठ्यौ ॥23॥**

ओ औ को कण्ठ और ओष्ठ से बोलना शुद्ध है।

20. **ङञणनमाः स्वस्थाननासिकास्थानाः ॥24॥**

ङकारादि पाँच वर्णों को स्व-स्थान और नासिका स्थान से बोलना चाहिए।

21. **द्वे द्वे वर्णे संध्यक्षराणामारम्भके भवत इति ॥25॥**

संध्यक्षर अर्थात् जो ए, ऐ, ओ, ओ, औ, हैं, इन में दो-दो वर्ण मिले होते हैं। जैसे (अ, आ, से, इ, ई) मिलके ए, (अं. आ, से ए, ऐ) मिलके ऐ, (अ, आ, से उ, ऊ) मिलके ओ, (अ, आ, से ओ, औ) मिलके औ हो जाते हैं जैसे एकार के आदि में अकार का कण्ठ और अन्त में इकार का तालु स्थान है, इसी प्रकार ओकार में प्रथम कण्ठ और दूसरा ओष्ठ स्थान है।

22. **सरेफ ऋवर्णः ॥26॥**

जो रेफ के सहित ऋवर्ण है, उसको मूर्द्धा स्थान में बोलना चाहिए।

द्वितीयं प्रकरणम्

अब स्थानों के कहने के पश्चात् दूसरे प्रकरण का आरम्भ करते हैं। इसमें जैसी-जैसी क्रिया से जिस-जिस वर्ण का उच्चारण करना होता है, उस-उसका वर्णन है। परन्तु यहाँ इतना अवश्य समझना है कि सब वर्णों के उच्चारण में जिह्वा मुख्य साधन है, क्योंकि उसके बिना किसी वर्ण का उच्चारण कभी नहीं हो सकता।

1. **जिह्व्यतालव्यमूर्द्ध न्यदन्त्यानां जिह्वा करणम्॥1॥**

जिनका जिह्वामूल, तालु, मर्द्धा और दन्त स्थान है, उनके उच्चारण में जिह्वा मुख्य साधन है। क्योंकि जिस-जिस वर्ण का जो-जो स्थान कहा है उस-उसमें जिह्वा लगाने ही से उनका ज्यों का त्यों उच्चारण होता है।

यह सामान्य सूत्र है। इसका विशेष विधान आगे कहते हैं–

2. **जिह्वामूलेन जिह्वयानां तद्येषामभ्यासम् ॥2॥**

जिन वर्णों का जिह्वामूल अभ्यास अर्थात् उच्चारण स्थान है, उन जिह्वामूलीय वर्णों का जिह्वामूलीय से स्पर्श करके उच्चारण करना चाहिए।

3. **जिह्वोपाग्रेण मूर्द्धन्यानाम् ॥3॥**

जिन वर्णों का मूर्द्धा स्थान कहा है, उनका उच्चारण जिह्वा के ऊपरले अग्रभाग से मूर्द्धा को स्पर्श करके करना चाहिए।

4. **जिह्वाग्राधः करणं वा ॥4॥**

इनके उच्चारण में दूसरा पक्ष यह भी है कि जिह्वाग्र के अधोभाग से मूर्द्धा का स्पर्श करके उच्चारण करना चाहिए।

5. **जिह्वाग्रेण दन्त्यानाम् ॥5॥**

जिन वर्णों का दन्त स्थान कहा है। उनका उच्चारण जिह्वा के अग्रभाग से दांतों

को स्पर्श करके ही करना चाहिए।

6. **इत्येतदन्तः करणम् ॥6॥**

इस प्रकार से मुख के भीतर स्थानों में वर्णों की उच्चारण क्रिया जाननी चाहिए।

तृतीयं प्रकरणम्

अब स्थान और करण के कहने के पश्चात् तीसरे प्रकरण का आरम्भ किया जाता है। इसमें आभ्यान्तर प्रयत्नों का वर्णन किया गया है–

1. **प्रयत्नोऽपि द्विविधः ॥1॥**

प्रयत्न भी दो प्रकार के होते हैं।

2. **आभ्यन्तरों बाह्यश्च ॥2॥**

आभ्यन्तर और बाह्य।

3. **आभ्यन्तरस्तावत् ॥3॥**

इन दोनों में से प्रथम आभ्यन्तर प्रयत्नों को कहते हैं।

4. **स्पृष्टकरणाः स्पर्शाः ॥4॥**

ककार से लेकर मकार पर्य्यन्त पच्चीस (25) वर्णों का स्पृष्ट प्रयत्न है। अर्थात् जिह्वा से स्व-स्व स्थानों में स्पर्श करके इन वर्णों का उच्चारण करना शुद्ध है।

5. **ईषत्स्पृष्टकरणाः अन्तस्थाः ॥5॥**

थोड़ा स्पर्श करके अन्तस्थ अर्थात् य, र, ल. व का उच्चारण करना चाहिए।

6. **ईषद्विवृतकरणाः ऊष्माणः ॥6॥**

जिसलिए ऊष्म अर्थात् श, ष, स, ह का अपने-अपने स्थान में जिह्वा का किञ्चित् स्पर्श करके शुद्ध उच्चारण होता है, इसलिए इनका विवृतकरण वा ॥7॥

7. **विवृतकरणा वा ॥7॥**

और इससें दूसरा पक्ष यह भी है कि स्व-स्व स्थान को जीभ से स्पर्श के बिना भी इनका उच्चारण करना शुद्ध है। इसलिए श, ष, स, ह का विवृत प्रयत्न भी है।

8. **विवृतकरणः स्वराः ॥8॥**

जिसलिए उक्त स्थानों से जीभ को अलग रखके स्वरों का उच्चारण करना

योग्य है, इसलिए इनका विवृत प्रयत्न है।

9. संवृतस्त्वकारः ॥9॥

अकार का संवृत प्रयत्न है। क्योंकि इसका उच्चारण कण्ठ को संकोच करके होता है। परन्तु इसका (व्याकरण-सम्बन्धी) कार्य करने के समय विवृत प्रयत्न ही होता है।

10. इत्येषोऽन्तः प्रयत्नः ॥10॥

यह आभ्यन्तर प्रयत्नों का प्रकरण पूरा हुआ॥

चतुर्थं प्रकरणम्

1. **अथ बाह्यः प्रयत्नाः ॥1॥**

अब इसके आगे चौथे प्रकरण में वर्णों के बाह्या प्रयत्नों का वर्णन करते हैं—

2. **वर्गाणां प्रथमद्वितीयाः शषसविसर्जनीयजिह्वामूलीयोपध्मानीया यमौ च प्रथमद्वितीयौ विवृतकण्ठाः श्वासाऽनुप्रदानाश्चाऽघोषाः ॥2॥**

यहाँ वर्ग शब्द से कु, चु, टु, पु इन पांचों का ग्रहण है। इनके दो-दो वर्ण अर्थात् कवर्ग में (क, ख), चवर्ग में (च, छ), टवर्ग में (ट, ठ), तवर्ग में (त, थ), पवर्ग में ¼i] Q½ m$'ekaea¼'k] "k] l½ vk$ ¼%½ foltZh;] ¼x) जिह्वामूलीय, (x) उपध्मानीय, (ᳵ ँ) ये दो यम इन अठारह (18) वर्णों का (विदृनकंठ) अर्थात् कण्ठ को फैला (श्वासानुप्रदान) उच्चारण के पश्चात् श्वास को युक्त कर और (अघोष) सूक्ष्म ध्वनि की योजनारूप क्रिया करके इनका उच्चारण करना चाहिए।

62. **एके अल्पप्राणा इतरे महाप्राणाः ॥3॥**

पांचों वर्गों के प्रथम तृतीय और पंचम अर्थात् (क, ग, ङ, च, ज, ञ, ट, ड, ण, त, न, प, ब, म) य, र, ल, व, यम प्रथम तृतीय अर्थात् (ᳵ ँ) इतने सब 'अल्पप्राण' अथार्त् ये थोड़े, और (ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ, श, स, है) (:) (x) (ं) (ँ, ळ), और अकारादि स्वर ये सब 'महाप्राण' अर्थात् अधिक बल से बोले जाते हैं।

3. **वर्गाणां तृतीयचतुर्था अन्तस्था हकारानुस्वारौ यमौ च तृतीयचतुर्थौ नासिक्याश्च संवतकंठा नादानुप्रदाना घोषवन्तश्च ॥4॥**

पांचों वर्गों के तीसरे और चौथे वर्ण अर्थात् (ग, घ, ज, झ, ड, ढ, द, ध, ब, भ) अन्तस्थ अर्थात् (य, र, ल, व), ह, (ं) अनुस्वार, और तीसरे चौथे यम अर्थात (ँ, ळ) सानुनसिक अकारादि स्वर इनका (संवृतकंठ) प्रयत्न कंठ का संकोच,

(नादानुप्रदानाः) इनके उच्चारण में अव्यक्त ध्वनि, और (घोषवन्तः) इनका उच्चारण गम्भीर शब्द से करना चाहिए।

4. **यथा तृतीयास्तथा पञ्चमाः ॥5॥**

वर्गों के तृतीय वर्णों के समान पञ्चम वर्ण अर्थात् (ङ, ञ, ण, न, म) के (संवृतकंठ) (नादानुप्रदान) और (घोष) प्रयत्न समझने चाहिए।

5. **आनुनासिक्यमेषाधिको गुणः ॥6॥**

पूर्वोक्त ङ, ञ, ण, न, म को मुख से बोले। पश्चात् नासिका से बोलना ही इनका आनुनासिक्य गुण अधिक है।

6. **शादयः ऊष्माणः ॥7॥**

शादि अर्थात् (श, ष, स, ह) की 'ऊष्म' संज्ञा, और ये महाप्राण प्रयत्न से बोले जाते हैं।

7. **सस्थानेन द्वितीयः ॥8॥**

जो पांचों के दूसरे वर्ण अर्थात् (ख, छ, ठ, थ, फ) हैं, वे सकार के समान महाप्राण प्रयत्न से बोलने चाहिए।

8. **हकारेण चतुर्थाः ॥9॥**

वर्गों के चतुर्थ अर्थात् (घ, झ, ढ, ध, भ) इन पांच वर्णों का हकार के समान महाप्राण प्रयत्न होता है।

पञ्चमं प्रकरणम्

1. **तत्र स्पर्शयमवर्णकरो वायुरयःपिण्डवत् स्थानमभिपीडयति। अन्तस्थवर्णकरो वायुर्दारुपिण्डवद्। ऊष्मस्वरवर्णकरो वायुरूर्णापिण्डवद्। वक्ताः स्थानकरणप्रयत्नाः ॥1॥**

सब मनुष्यों को उचित है कि जो (स्पर्श) ककार से लेके म पर्यन्त (25) वर्ण और चार यम हैं, इनको प्रकट करने वाले वायु को लोहे के गोले के समान स्थान में लगाके, अन्तस्थ वर्णों के बोलने में वायु को काष्ठ के गोले के समान स्थान में लगाके, और शादि तथा बाईस (22) स्वरों के उच्चारण में वायु को ऊन के गोले के समान स्थान में लगाके बोला करें। इस प्रकार जो स्थान करण और प्रयत्न कह चुके हैं, उनका ज्ञान अवश्य करें ॥

षष्ठमं प्रकरणम्

1. **अवर्णो ह्रस्वदीर्घप्लुतत्वाच्च त्रैस्वर्योपनयेन चानुनासिक्यभेदाच्च संख्यातोऽष्टादशात्मकः। एवमिवर्णादयः ॥1॥**

अब अकारादि वर्णों के भेद दिखाते हैं—अकार के उदात्त अनुदात्त और स्वरित भेद हैं। और जब इन एक-एक के साथ ह्रस्व उदात्त, ह्रस्व अनुदात्त, ह्रस्व स्वरित, और इसी प्रकार दीर्घ और प्लुत के साथ लगाते हैं, तब अकार के नव भेद हो जाते हैं। और जब ये सानुनासिक भेदयुक्त होते हैं, तब इन नव-नव के अठारह-अठारह भेद होते हैं। इसी प्रकार इकारादि स्वरों में प्रत्येक के अठारह-अठारह भेद समझने चाहिए। परन्तु—

2. **लृवर्णस्य दीर्घा न सन्ति ॥2॥**

जिस लिए लृकार के दीर्घ-भेद नहीं होते।

3. **तं द्वादशभेदमाचक्षते ॥3॥**

इसलिए लृकार को बारह (12) भेद से युक्त कहते हैं।

4. **यदृच्छाशब्दे अशक्तिजानुकरणे वा यदा दीर्घाः स्युस्तदाऽष्टादशप्रभेंद ब्रुवते क्लृपक इति ॥4॥**

जिन लोगों के मत में यदृच्छा शब्द होते हैं, अथवा जब उनका अशक्तिज के अनुकरण में प्रयोग करते हैं, तब लृकार को दीर्घ मानके उसके भी अठारह (18) भेद कहते हैं। क्लृपक के इस प्रयोग में होते हैं।

5. **संध्यक्षराणां ह्रस्वा न सन्ति। तान्यपि द्वादश प्रभेदानि ॥5॥**

जिसलिए संध्यक्षर अर्थात् (ए, ऐ, ओ, औ) इनके ह्रस्व नहीं होते, इसलिए इनके भी बारह-बारह भेद होते हैं।

6. **अन्तस्था द्विप्रभेदा रेफवर्जिताः सानुनासिका निरनुनासिकाश्च ॥6॥**

और (र) को छोड़कर अन्तस्थ अर्थात् (य, ल, व) ये तीन सानुनासिक यँ, लँ, वँ और निरनुनासिक य, ल, व भेद से दो प्रकार के होते हैं।

7. रेफोष्मणां सवर्णा न सन्ति ॥7॥

जिस लिए (र), और ऊष्मा अर्थात् (श, ष, स, ह) का कोई सवर्णी नहीं होता, इसलिए इनके परे किसी वर्ण के स्थान में इनका सवर्णी आदेश नहीं होता।

8. वर्ग्यो वर्ग्येण सवर्णः ॥8॥

परन्तु कु, चु, टु, तु, पु इन पांच वर्ग, और य, ल, व इन तीनों की परस्पर सवर्ण संज्ञा मानी जाती है। जैसे ककार का सवर्णी खकार समझा जाता है, वैसे समझना चाहिए ॥

सप्तमं प्रकरणम्

1. **इत्येष क्रमो वर्णानाम् ॥1॥**

यह पूर्व अकारादि वर्णों का क्रम कहके—

2. **तत्रैते कौशिकीयाः श्लोकाः ॥2॥**

षष्ठ प्रकरण के विषय में कौशिक ऋषि के ये श्लोक हैं। उनमें से आगे क्रम विशेष विषयक श्लोक लिखते हैं—

3. **सर्वान्तेऽयोगवाहत्वाद्विसर्गादिरिहाऽष्टकः।**
अकार उच्चारणार्थो व्यञ्जनेष्वनुबध्यते ॥3॥

बिना संयोग के प्राप्त होने से यहाँ सब वर्णमाला के अन्त में विसर्ग आदि अष्टक (विसर्जनीय, जिह्वामूलीय, उपध्मानीय, अनुस्वार, चारयम) गिना जाता है, और अलग इसकी प्राप्ति होती है। इससे विसर्गादि अष्टक 'अयोगवाह' कहाता, और वर्णमाला के वर्णों के अलग गिना जाता है। वर्णमाला के व्यञ्जनों में एक अकार अनुबन्ध किया है, वह उच्चारमात्र के लिए है कि जिससे व्यंजन का स्पष्ट उच्चारण हो।

3. **ᳵक ᳶपयोः कपकारौ च तद्वर्गीपाश्रयत्वतः।**
पलिक्क्नी चख्नतुजग्मिर्जघ्नुरित्यत्र यद्वपुः॥
नासिक्येनोक्तं कादीनां त इमेऽयमाः।
तेषामुकारः संस्थानवर्गीयलक्षकः॥

ᳵजिह्वामूलीय और ᳶउपध्मानीय के साथ में जो ककार और पकार हैं, वे तद्वर्गीयाश्रयत्व से हैं, अर्थात् उनका कवर्ग और पवर्ग के पर विधान है। इससे उनके साथ में ककार और पकार हैं। पलिक्क्नी आदि प्रयोगों में जो (क्, ख्, ग्, घ्) इत्याकारक अंश नासिकास्थानीय (न् न् म् न्) वर्णों से अप्रकटित अर्थात् गृहीत नहीं

होता है, वह अयम अर्थात् यम नहीं। और ककारादि वर्णों को जो उकार आता है, वह संस्थानवर्गीय वर्ण अर्थात् उन वर्गों के सजातीय वर्णों का लक्षक है। जैसे (कु, चु, टु, तु, पु) इनमें प्रत्येक वर्ण के उकार के संयोग से वर्गमात्र का बोध होता है ॥

अष्टमं प्रकरणम्

1. **उक्ताः स्थानकरणप्रयत्नाः ॥1॥**

अब सब वर्गों के स्थान करण और प्रयत्नों को कह चुके। अगले प्रकरण में स्थान आदि के लक्षण कहते हैं।

2. **यत्रस्था वर्णा उपलभ्यन्ते तत्स्थानम् ॥2॥**

'स्थान' उसको कहते हैं कि जहाँ से प्रसिद्ध होकर वर्ण सुनने में आते हैं।

3. **येन निर्वृत्यते तत्करणम् ॥3॥**

स्थानों में जीभ और प्राण के जिस संयोग से वर्णों का उच्चारण करना होता है, उसको 'करण' कहते हैं।

4. **प्रयतन प्रयत्नः ॥4॥**

जो वर्णों के उच्चारण में पुरुषार्थ से यथावत् क्रिया करनी होती है, वह 'प्रयत्न' कहाता है।

5. नाभिप्रदेशात्प्रयत्नप्रेरितः प्राणों नाम वायुरूर्ध्वमाक्रामन्नुरआदीना स्थानानामन्यतमस्मिन् स्थाने प्रयत्नेन विचार्यते ॥5॥

जो ऊपर को श्वात निकलता है, उसको प्राण कहते हैं। जो आत्मा के उच्चारण की इच्छा से विचारपूर्वक नाभि देश से प्रेरणा किया प्राणवायु ऊपर को उठता हुआ कण्ठ आदि स्थानों में से किसी स्थान में उत्तम यत्न के साथ विचारा जाता है, अर्थात् अकारादि वर्णों के पृथक्-पृथक् उच्चारण में वायु के संयोग से विचारपूर्वक यथायोग्य क्रिया करनी चाहिए।

सब मनुष्यों को उचित है कि जिस-जिस प्रकरण में जिस वर्ण के उच्चारण के लिए जो-जो बात लिखी है, उसको ठीक-ठीक जानकर विद्यार्थियों को जनाके शब्दाक्षरों के प्रयोग ज्यों-के-त्यों कर प्रशंसित हो सदा आनन्द से युक्त रहे, और सब विद्यार्थियों को भी वर्णोच्चारण शुद्ध कराकर आनन्द में रखें ॥

● ● ● ●